नया ज्ञानोदय
फरवरी-मार्च 2025
मूल्य : 50 रुपये
काफ़्का
अवसान के सौ वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ
Scanned with OKEN Scanner
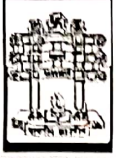
भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंक : 231
फरवरी-मार्च 2025

सम्पादक

मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक

महेश्वर, प्रभाकिरण जैन
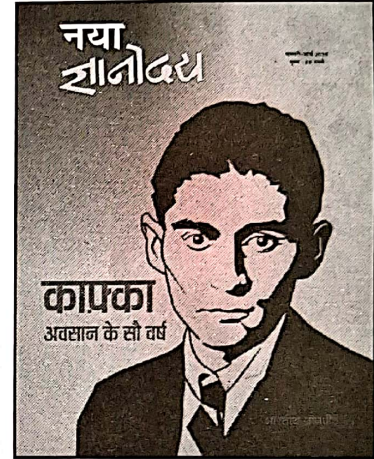
साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com
bookclub@jnanpith.net
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,

मूल्य : 50
50 रुपये + 10 रुपये (डाक खर्च)

सदस्यता शुल्क :
व्यक्तियों के लिए– वार्षिक (6 अंक) : 360 रुपये (डाक खर्च सहित)
संस्थाओं के लिए–वार्षिक (6 अंक) : 460 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर

www.jnanpith.net

Scanned with OKEN Scanner
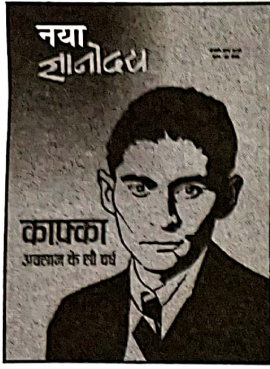
साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 231
फरवरी-मार्च 2025
पृष्ठ : 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

कहानियाँ

लघुकथाएँ

कविताएं

आलेख / संस्मरण

हिन्दी कविता

सिनेमा

Scanned with OKEN Scanner

काफ़्का
अवसान के सौ वर्ष

कायांतरण

फ्रान्ज़ काफ़्का

एक सुबह जैसे ही ग्रेगोर सेम्सा की आंख खुली उसने पाया कि वह एक विशालकाय कीड़े में परिवर्तित हो गया है और अपनी बख़्तरबंद पीठ के सहारे पलंग पर लेटा हुआ है। उसने सिर उठाकर अपने कत्थई, गुंबदनुमा पेट को देखा, जिससे टकराकर मसहरी गिरने को हो रही थी। उसके अनगिन पैर, उसके शरीर की तुलना में दयनीय रूप में छोटे और पतले थे और बेबसी से छटपटा रहे थे।

मुझे क्या हो गया? ग्रेगोर ने सोचा। निश्चित रूप से यह कोई सपना नहीं था। चारों दीवारों के बीच उसका छोटा-सा सोने का कमरा ज्यों-का-त्यों था। टेबल पर उसके धंधे के नमूने फैले हुए थे। ग्रेगोर एक ट्रेवलिंग एजेंट था। ऊपर दीवार पर एक तस्वीर टंगी थी, जिसे हाल ही में उसने एक रंगीन पत्रिका से काटकर, सुनहरे फ्रेम में जड़वा लिया था। तस्वीर में रोएंदार टोपी और फरकोट पहने एक सुंदर लड़की खड़ी हुई थी।

सेम्सा की आंखें आकाश की ओर मुड़ीं। खिड़की के सायबान पर गिरती बूंदों ने उसे अवसाद से भर दिया। इस बेहूदगी को भूलने के लिए क्यों न कुछ और सो लिया जाए? उसने सोचा, लेकिन सोना असंभव था, क्योंकि वह दाईं करवट लेटने का आदी था, जो मौजूदा हालत में नामुमकिन था। वह बार-बार दाईं करवट लेने की कोशिश करता, पूरी ताक़त से, लेकिन हर बार पीठ के बल लुढ़क जाता। अपनी विचित्र टांगों को देखने से बचने के लिए उसने कम-से-कम सौ बार आंखें बंद कीं और तभी रुका, जब उसके बगल में सुस्ती पैदा करने वाला दर्द नहीं होने लगा– ऐसा दर्द तो इससे पहले कभी नहीं था। हे ईश्वर! मैंने कैसा भाग-दौड़ वाला धंधा चुना है? दिन-रात सफ़र-ही-सफ़र! उसने सोचा। यह मालगोदाम में बैठकर बिक्री करने से कहीं ज्यादा मुश्किल काम था। इसके अलावा इसमें दूसरी तरह की कठिनाइयां भी थीं, जैसे रोज़-रोज़ नए और अजनबी लोगों से भेंट करने की बेचैनी, ट्रेनों का टाइमटेबल और उनके सही कनेक्शनों की जानकारी रखना और खाने-पीने के मामलों में हद दर्ज़े की अनिश्चितता। सहसा उसे पेट में हल्का दर्द महसूस हुआ। उसने सिरहाने की ओर सरकने की कोशिश की ताकि थोड़ा-सा सिर उठाकर हिल-डुल सके। उसने पेट के सफेद रोओं वाले हिस्से को देखा, जहां दर्द हो रहा था। उसे पैरों से छुआ, इसके साथ ही समूचे शरीर में दर्द की सर्द लहर दौड़ गई। उसने घबराकर तुरंत पैरों को हटा लिया। यह उसके शरीर का सबसे अधिक संवेदनशील अंग था।

वह सरककर फिर पहले की हालत में आ गया। "जल्द उठने की आदत आदमी को किस कदर मूर्ख बना देती है?" उसने सोचा, "दूसरे धंधे वाले हरम में रहने वाली औरतों की तरह चैन से रहते हैं। मसलन जब मैं सुबह ऑर्डर लेने के लिए किसी होटल में जाता हूं, तो उन्हें नाश्ता करता हुआ देखता हूं। अब अगर मैं अपनी तकलीफ़ अपने चीफ को बताऊं तो वह मुझे उसी समय बर्ख़ास्त कर देगा। लेकिन कौन कह सकता है, मेरी भलाई शायद इसी में हो। अगर मुझे अपने मां-बाप की चिंता न होती तो बहुत पहले नौकरी छोड़ने का नोटिस दे दिया होता। मैं सीधा चीफ के पास जाता और साफ-साफ शब्दों में बताता कि वास्तव में उसके बारे में मेरी क्या राय है। इस पर वह भौंचक्का होकर अपनी मेज़ से उछल पड़ता। लेकिन ठीक है, मैंने पिता का कर्ज़ चुकाने के लिए काफ़ी रकम जमा कर ली है। अब

बिस्तर छोड़ना चाहिए। मुझे पांच की गाड़ी पकड़नी है।"

उसने टिक-टिक करती अलार्म घड़ी की ओर देखा, जिसके कांटे साढ़े छह बजा रहे थे। क्या घड़ी बंद हो गई? बिस्तर से साफ दिखता था कि घड़ी में चार का अलार्म लगा है। क्या यह संभव है कि अलार्म बजता रहा हो और वह सोता रहा हो? लेकिन अब? अगली गाडी सात पर है। उसे पकड़ने के लिए पागलों जैसी फुर्ती से काम करना पड़ेगा। टेबल पर बिखरे पड़े नमूनों को पैक करना पड़ेगा। अगर किसी तरह गाड़ी पकड़ भी ली तो चीफ के झगड़े से नहीं बच सकता, क्योंकि चौकीदार ने पांच बजे उसका इंतज़ार किया होगा और उसके न आने की ख़बर चीफ को दे दी होगी। चौकीदार चीफ का आदमी है, मूर्ख और डरपोक। अगर वह बीमारी का बहाना कर दे तो? तो इससे वह संदिग्ध दिखेगा, क्योंकि पांच साल की नौकरी में वह एक भी दिन के लिए बीमार नहीं पड़ा। उस हालत में चीफ बीमा कंपनी के डॉक्टर को लेकर आ धमकेगा। डॉक्टर की राय के आधार पर उसके बहाने को ख़ारिज कर देगा और उसके मां-बाप से उसके कामचोर होने की शिकायत करेगा।

जिस समय उसके दिमाग़ से ऐसे दृश्य गुज़र रहे थे, सिरहाने की तरफ के दरवाज़े पर आहट हुई। फिर एक कोमल आवाज़, जो उसकी मां की थी, "ग्रेगोर, तुम्हें ट्रेन नहीं पकड़नी क्या? पौने सात हो रहे हैं?" उत्तर में जो ग्रेगोर ने कहा, उससे उसे अपनी आवाज़ पर आश्चर्य हुआ। निश्चित रूप से ये उसी की आवाज़ थी, जिसके शुरू के कुछ ही शब्द स्पष्ट थे, लेकिन कुछ इस तरह सपाट कि उनका कोई मतलब नहीं निकलता था। उसके मुंह से सिर्फ इतना निकला, "हां मां! मैं उठ रहा हूं। धन्यवाद।" बीच में काठ के किवाड़ों की मौजूदगी के कारण मां ने उसकी आवाज़ में कोई फर्क नहीं महसूस किया। वह संतुष्ट होकर चली गई। फिर बगल के दरवाज़े पर पिता की मुट्ठियों से किवाड़ पीटने की आहट आई। फिर उनकी आवाज़, "ग्रेगोर! ग्रेगोर!..." दूसरी ओर के दरवाज़े से बहन का कोमल स्वर उभरा, "ग्रेगोर! तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न? तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं?"

"मैं ठीक हूं।..." ग्रेगोर ने कहना चाहा।

पिता नाश्ते के लिए चले गए, लेकिन बहन वहीं खड़ी रही।

"ग्रेगोर, दरवाज़ा खोलो," बहन ने फुसफुसाकर कहा।

उसका इरादा फिलहाल दरवाज़ा खोलने का नहीं था। उसे पहली बार यात्राओं से मिली अपनी आदत का फायदा महसूस हुआ। घर पर वह सोने से पहले दरवाज़े अंदर से बंद कर लिया करता था।

उसने तय किया कि वह चुपचाप उठेगा, कपड़े पहनकर नाश्ता करेगा, फिर आगे का कार्यक्रम बनाएगा। देर से सही, उसकी समझ में आ गया था कि लेटे-लेटे कुछ नहीं होगा। उसे पिछले दिनों की याद आई, जब उसे बिस्तर पर पड़े-पड़े, अक्सर दर्द होने लगता था। उठते ही दर्द के साथ सुबह का दुःस्वप्न भी उसके दिमाग़ से उतर जाएगा और जहां तक आवाज़ में आ जाने वाले फर्क का सवाल है, यह इस बात का संकेत है कि जल्द ही उसे तेज़ ज़ुकाम होने वाला है।

मसहरी से निजात पाना आसान था। उसने लेटे-लेटे अपने पेट को

Scanned with OKEN Scanner

फुलाया और मसहरी ख़ुद ही एक तरफ़ गिर पड़ी। लेकिन आगे का काम मुश्किल था। उठने के लिए बाजुओं और हथेलियों की ज़रूरत होती है। लेकिन उनकी जगह उसके पास अनगिन पतले-पतले पैर थे, जो तेज़ी से छटपटा रहे थे और जिन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। उसने एक पैर मोड़ने की कोशिश की तो वह बजाए झुकने के वैसा ही तनकर खड़ा रहा।

"लेकिन बिस्तर पर पड़े रहने से भी क्या फायदा?" उसने सोचा। शायद वह निचले हिस्से की मदद से उतर सकता है, जिसे उसने अभी तक देखा नहीं था। इसमें उसे काफी परेशानी हुई। आख़िरकार गुस्से से पागल होकर उसने ज़ोर लगाया तो पलंग के पैताने से जा टकराया। इसके साथ ही वहां उठने वाले तेज़ दर्द ने उसे एहसास करा दिया कि यह उसके शरीर का सबसे संवेदनशील अंग है।

अब उसने ऊपरी हिस्से के सहारे, पलंग के सिरहाने की ओर सरकना शुरू किया, जो अपेक्षाकृत आसान था। उसकी विशाल काया सिरहाने की ओर सरकने लगी। सिरहाने पर पहुंचकर वह डर गया क्योंकि यदि वह उस तरफ से फर्श पर गिरता तो उसके सिर को ज़ख़्मी होने से कोई नहीं बचा सकता था। वह किसी भी हालत में अपने होशोहवास नहीं गंवाना चाहता था। इसलिए बिस्तर पर पड़े रहने के अलावा कोई चारा नहीं था। लेकिन इसके बावजूद, एक और कोशिश के बाद जब वह अपने अनगिनत छोटे-छोटे पैरों को छटपटाता हुआ देख रहा था, उसने निष्कर्ष निकाला कि ज्यादा देर पड़े रहना असंभव है। समझदारी की मांग थी कि नीचे उतरने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया जाए। ठंडी सोच, किसी भी हताश-निर्णय से बेहतर होती है। ऐसे मुश्किल क्षणों में उसने खिड़की के बाहर झांकने की कोशिश की, लेकिन दुर्भाग्य से सर्वत्र सुबह का कोहरा छाया हुआ था, जो इतना घना था कि नीचे की सड़क को भी नहीं देखा जा सकता था। सात बज गए। अलार्म घड़ी की आवाज़ पर उसने सोचा, "सात बजे इस कदर घना कोहरा।" वह आराम से लेटा रहा। इस उम्मीद में कि कुछ देर बाद सब कुछ अपने आप सहज हो जाएगा।

"कुछ भी हो मैं सवा सात पर ज़रूर उठ जाऊंगा। तब मालगोदाम का भी कोई आदमी आ जाएगा क्योंकि मालगोदाम सात पर ही खुलता है।" इसके साथ ही उसने अपने शरीर के दोनों हिस्सों को हिलाना शुरू किया। अगर वह अपने सिर को उठाए बिना फर्श पर गिरे, तो चोट से बच सकता है। उसकी पीठ काफी कड़ी और सख़्त है, लेकिन सबसे बड़ी चिंता इस बात की थी कि उसके गिरने से तेज़ आवाज़ होगी, जिससे घर में दहशत नहीं तो बेचैनी ज़रूर ही फैल जाएगी। लेकिन इस सबके बावजूद यह जोख़िम उठाना ज़रूरी था।

अब वह आधे से ज्यादा बिस्तर से बाहर था। यह नया तरीका उसके लिए कोशिश के बजाय एक खेल जैसा था। उसे एक बार हिलकर फर्श पर लुढ़क जाना था। उसे याद आया कि ऐसे में किसी की मदद मिल जाती तो अच्छा होता। सिर्फ दो मज़बूत लोगों की ज़रूरत थी। इस पर उसे अपने पिता और नौकरानी का ख़्याल आया। उन्हें सिर्फ उसकी पीठ में हाथ डालकर फर्श पर रख देना था। उसे विश्वास था कि फर्श पर पहुंचते ही उसके पैर स्वाभाविक तरीके से

सहसा सदर दरवाज़े की घंटी बजी। "उसके लिए कोई मालगोदाम से आया है", उसने सोचा। उसकी देह अकड़कर सख़्त हो गई, पैर तेज़ी से हिलने लगे। ग्रेगोर को उम्मीद थी कि दरवाज़ा नहीं खोला जाएगा। तभी तेज़ चलती हुई नौकरानी ने दरवाज़ा खोल दिया। "शुभदिन" के अभिवादन के साथ ही ग्रेगोर ने जान लिया कि आगंतुक कौन है। उसकी कंपनी का हेड क्लर्क कैसा दुर्भाग्य था कि ग्रेगोर ऐसे प्रतिष्ठान में नौकरी करने को अभिशप्त था, जहां छोटी से छोटी चूक को गहरे संदेह से देखा जाता था। अगर जांच ज़रूरी ही थी तो किसी छोटे-मोटे कर्मचारी को भेजा जा सकता था। इस ख़्याल के साथ ही ग्रेगोर पूरी ताकत से लुढ़ककर फर्श के गलीचे पर आ गिरा। उसकी पीठ उम्मीद के अनुसार सख़्त नहीं थी।

अपना काम करने लगेंगे। तो क्या इस तथ्य को नज़रंदाज़ करते हुए कि किवाड़ अंदर से बंद है, वह उन्हें आवाज़ दे? अपनी दयनीयता के बावजूद उसे अपने ख़्याल पर हंसी आ गई।

सहसा सदर दरवाज़े की घंटी बजी। "उसके लिए कोई मालगोदाम से आया है", उसने सोचा। उसकी देह अकड़कर सख़्त हो गई, पैर तेज़ी से हिलने लगे। ग्रेगोर को उम्मीद थी कि दरवाज़ा नहीं खोला जाएगा। तभी तेज़ चलती हुई नौकरानी ने दरवाज़ा खोल दिया। "शुभदिन" के अभिवादन के साथ ही ग्रेगोर ने जान लिया कि आगंतुक कौन है। उसकी कंपनी का हेड क्लर्क कैसा दुर्भाग्य था कि ग्रेगोर ऐसे प्रतिष्ठान में नौकरी करने को अभिशप्त था, जहां छोटी से छोटी चूक को गहरे संदेह से देखा जाता था। अगर जांच ज़रूरी ही थी तो किसी छोटे-मोटे कर्मचारी को भेजा जा सकता था। इस ख़्याल के साथ ही ग्रेगोर पूरी ताकत से लुढ़ककर फर्श के गलीचे पर आ गिरा। उसकी पीठ उम्मीद के अनुसार सख़्त नहीं थी। एक भद्दी-सी "धप्प" की आवाज़ हुई, जो ज्यादा डरावनी नहीं थी। सिर्फ एक ग़लती हुई। गिरते वक्त उसने सिर को ऊपर नहीं रखा। अतः सिर में चोट आ गई। उसने सिर उठाया और तकलीफ़ कम करने के लिए गलीचे पर रगड़ने लगा।

"कुछ गिरा है," दाएं कमरे से हेड क्लर्क की आवाज़ सुनाई दी।

"ग्रेगोर, तुम्हारी कंपनी का हेड क्लर्क आया हुआ है," बाईं ओर दरवाज़े से बहन ने फुसफुसाकर कहा।

"मुझे मालूम है," ग्रेगोर बुदबुदाया। उसकी हिम्मत इतनी ज़ोर बोलने की नहीं हुई कि बहन सुन ले।

"ग्रेगोर!" उसके पिता ने बगल के कमरे से कहा, "तुम्हारे प्रतिष्ठान के हेड क्लर्क आए हैं। वे जानना चाहते हैं कि तुम सुबह की गाड़ी से क्यों नहीं पहुंचे? तुमसे बात करना चाहते हैं। दरवाज़ा खोलो। वे भले मनुष्य हैं तुम्हारे कमरे की गंदगी पर ध्यान नहीं देंगे।"

"शुभ दिन मि. सेम्सा!" हेड क्लर्क ने दोस्ताना लहजे में कहा।

"उसकी तबीयत ठीक नहीं," मां आगंतुक से कह रही थीं। "मेरा

विश्वास करें श्रीमान्। इसके अलावा और कोई कारण नहीं। मेरा बेटा काम के अलावा और कुछ नहीं सोचता। कभी-कभी कोफ़्त होती है कि वह शाम को घर से क्यों नहीं निकलता। बस कुर्सी पर बैठा अख़बार या रेलवे का टाइम-टेबल पढ़ता रहता है। उसे सिर्फ एक ही शौक है—तस्वीरों का। उसने अपनी दो-तीन शामें सिर्फ एक ही फ्रेम बनाने में ख़र्च कर दीं, जैसाकि आप कमरा खुलने पर खुद देखेंगे। मुझे आपके आने से प्रसन्नता हुई। हमारे कहने से वह कभी दरवाज़ा नहीं खोलता, ऐसा ज़िद्दी है। मुझे विश्वास है कि वह बीमार है। हालांकि ऐसे वक़्त बीमार होना अनुचित है।"

"मैं आ रहा हूं," ग्रेगोर ने कहा, लेकिन अपनी जगह से हिला नहीं। उसे डर था कि उनकी बातचीत का कोई अंश छूट न जाए।

"मेरी समझ में भी इसका और कोई कारण नहीं, श्रीमती जी!" हेड क्लर्क ने कहा। "फिर भी मेरे ख़्याल से मामला ज्यादा गंभीर नहीं। इसके साथ मैं यह भी कहना चाहूंगा कि हमारा मुख्य उद्देश्य व्यापार है। और सौभाग्य या दुर्भाग्य से हमें इसके लिए छोटी-मोटी बीमारियों को नज़रंदाज़ करना पड़ता है।"

"क्या हेड क्लर्क अंदर आ सकते हैं?" पिता ने अधीरता से दरवाज़ा खटखटाते हुए पूछा।

"नहीं।" ग्रेगोर ने उत्तर दिया।

ग्रेगोर के इंकार के साथ ही बाईं तरफ़ वाले कमरे में बेचैनी भरी ख़ामोशी छा गई। दाईं ओर वाले कमरे में बहन ने सिसकना शुरू कर दिया। ग्रेगोर ने सोचा, बहन इन लोगों के साथ क्यों नहीं है? शायद अभी-अभी बिस्तर से उठी है और अभी उसने कपड़े नहीं पहने। लेकिन वह रो क्यों रही है? यदि मैं हेड क्लर्क को अपने कमरे में आने दूंगा तो मेरी नौकरी ख़तरे में पड़ जाएगी, या चीफ हमारे मां-बाप को अभी तक कर्ज़ा न चुका पाने के लिए झिड़कना शुरू कर देगा। लेकिन फिलहाल किसी को परेशान होने की ज़रूरत नहीं। अपने परिवार को तबाह करने का मेरा कोई इरादा नहीं।

"मि. सेम्सा!" हेड क्लर्क ने अपेक्षाकृत तेज़ स्वर में कहा, "तुम्हें क्या हुआ है? तुमने अपने को कमरे में बंद कर रखा है और मेरे सवालों का जवाब सिर्फ हां या ना में दे रहे हो। इससे तुम्हारे मां-बाप चिंतित हैं। इस समय मैं तुम्हारे मां-बाप और चीफ की ओर से पूछ रहा हूं, तुरंत स्पष्टीकरण दो। चीफ ने तुम्हारे सुबह से गायब होने की वजह की ओर संकेत किया है। तुम्हें माल की बिक्री का कुछ नगद रुपया सौंपा गया था, लेकिन मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि ऐसी कोई बात नहीं। अब मैं अपनी आंखों से देख रहा हूं कि तुम किस क़दर ज़िद्दी हो। इसलिए अब मेरे मन में तुम्हारी तरफदारी करने की कोई इच्छा नहीं। कपंनी में भी तुम्हारी स्थिति कोई ख़ास मज़बूत नहीं। ये सारी बातें मैं तुमसे एकांत में कहना चाहता था, लेकिन जब तुम मेरा समय बर्बाद करने पर तुले हुए हो, तो क्यों न तुम्हारे मां-बाप भी जान लें कि कुछ समय से तुम्हारा काम निहायत असंतोषजनक है। माना कि यह कोई धुंआधार धंधे का मौसम नहीं, लेकिन ऐसा भी नहीं कि कोई धंधा हो ही नहीं, साल में बिना धंधे का कोई मौसम, मि. सेम्सा, नहीं होता, नहीं होना चाहिए।"
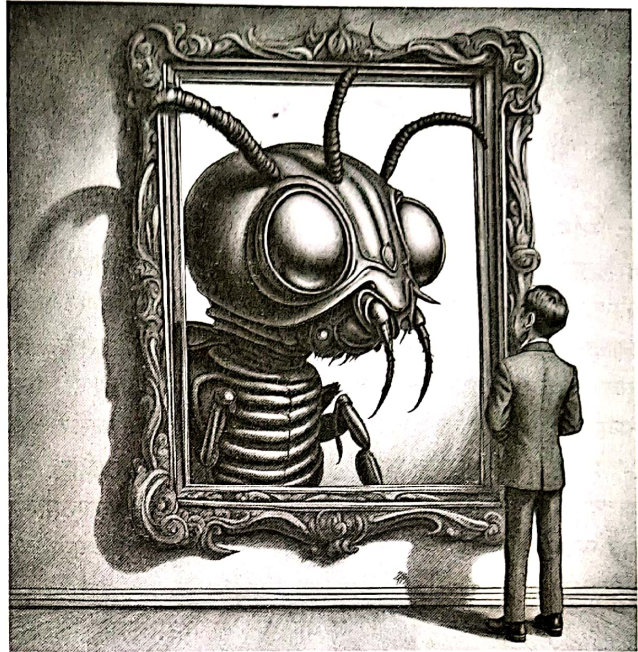
"लेकिन महाशय!" ग्रेगोर ने अपनी हालत भूलकर कहा, "मैं अभी दरवाज़ा खोलता हूं। मेरे मां-बाप पर दया करें। आप मेरी ग़लत भर्त्सना कर रहे हैं। शायद आपको मेरे द्वारा हाल में लाए गए आर्डरों की जानकारी नहीं। मैं अब भी आठ की गाड़ी पकड़ सकता हूं। मैं आपको ज्यादा देर नहीं रोकना चाहता। कृपया इसकी सूचना चीफ को दे दें।"

ग्रेगोर की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है। वह सरकता हुआ संदूक के पास जा पहुंचा और उसके सहारे उठने की कोशिश करने लगा। वह हेड क्लर्क को अपनी शक्ल दिखाना चाहता था और यह जानने को उत्कंठित था कि लोग उसे देखकर क्या कहते हैं। अगर वे उसकी शक्ल से डर जाते हैं तो उसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं। अगर सहज रहते हैं तो वह अब भी आठ की गाड़ी पकड़ सकता है। वह कई बार संदूक की चिकनी सतह से फिसला, लेकिन आख़िर में हर बार सीधा खड़ा हो गया। उसने निचले हिस्से के कष्ट पर ध्यान नहीं दिया। उसने अपने को पास की कुर्सी पर गिर जाने दिया और अपने छोटे-छोटे पैरों से कुर्सी की पीठ को पकड़कर बाहर की बातचीत सुनने लगा।

"क्या आप उसकी बातचीत का एक शब्द भी समझ सकते हैं?" हेड क्लर्क पूछ रहा था।

"हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश तो वह कर नहीं सकता," पिता ने कहा।

"आह! वह शायद बहुत बीमार है। हम उसे कष्ट पहुंचा रहे हैं," मां ने रोकर कहा। "ग्रेटे! ग्रेटे!" वह चिल्लाई।

"हां मां!" बहन ने दूसरे कमरे से उत्तर दिया। वे ग्रेगोर के कमरे के आर-पार से एक-दूसरे से बात कर रहे थे।

"हमें तुरंत डॉक्टर को बुलाना चाहिए। ग्रेगोर बीमार है। तुमने सुना

Scanned with OKEN Scanner

नहीं, वह किस तरह बोल रहा था।"

"वह मनुष्य की आवाज तो नहीं लगती थी," हेड क्लर्क ने कहा। "अन्ना! अन्ना! जल्द लोहार को बुला लाओ," हाल से पिता चिल्लाए।

स्विस स्कर्ट पहने दोनों लड़कियां बाहर भागीं, जैसे कोई भीषण दुर्घटना घट गई हो। लेकिन अब ग्रेगोर शांत था। उसकी भाषा किसी की समझ में नहीं आ रही थी, जबकि ख़ुद के लिए वह पहले से भी ज्यादा स्पष्ट थी। फिर भी सबको पता चल गया है कि उसके साथ कुछ गड़बड़ है. और वे उसकी सहायता के लिए तैयार हैं। उसे उम्मीद होने लगी कि डॉक्टर और लोहार के आने के ज़रूर कुछ अच्छे परिणाम निकलेंगे। बग़ल के कमरे में निस्तब्धता छाई हुई थी। शायद उसके मां-बाप हेड क्लर्क के साथ टेबल पर बैठे फुसफुसाकर बातें कर रहे थे, या फिर किवाड़ों पर कान लगाए उसके कमरे के अंदर की टोह ले रहे थे।

ग्रेगोर ने पास की कुर्सी को दरवाज़े की तरफ सरकाया, किवाड़ों का सहारा लेकर कुछ देर सुस्ताया, फिर ताले में फंसी चाबी को मुंह से घुमाना शुरू किया। बग़ैर इस बात की चिंता किए कि इससे मुंह में ज़ख़्म हो रहा होगा। कुछ ही कोशिश के बाद उसके मुंह से कत्थई रंग का द्रव रिसकर चाबी से होता हुआ फर्श पर टपकने लगा।

"सुनो, सुनो! वह कुंजी घुमा रहा है," हेड क्लर्क ने कहा।

इससे ग्रेगोर का उत्साह बढ़ा, लेकिन इसके साथ ही उसके मां-बाप को भी चिल्लाकर प्रोत्साहित करना चाहिए। "लगे रहो ग्रेगोर! शाबास और कोशिश करो।" फिर भी इस विश्वास के साथ कि वे उसके प्रयत्नों को समझ रहे हैं, उसने चाबी को पूरी ताकत से जबड़े में दबाकर फिर पूरा ज़ोर लगाया। आख़िर काफी कसरत के बाद, एक तेज़ आवाज़ के साथ ताला खुल गया। राहत की सांस लेते हुए उसने सोचा, "अब लोहार की ज़रूरत नहीं," और किवाड़ खोलने के लिए हैंडल पर सिर रगड़ने लगा। दरवाज़े का मोड़दार किवाड़ कमरे के अंदर की तरफ खुलता था। इसलिए किवाड़ के खुल जाने के बावजूद वह बाहर से अदृष्ट था। इसके लिए उसे सावधानी से चक्कर लगाकर आना पड़ा, ताकि कहीं टकरा कर पीठ के बल न गिर पड़े। फिलहाल सबसे बेख़बर होकर वह अपने सबसे मुश्किल काम को अंजाम देने में जुटा था कि बाहर से हेड क्लर्क को ज़ोर से आह! कहते सुना। हेड क्लर्क एक हाथ मुंह पर रखे, जैसे कोई अदृश्य ताकत से ठेला जाता हुआ आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हट रहा था। उसकी मां ने, जिनके बाल बिखरे हुए थे, पहले हक्का-बक्का होकर पिता की ओर देखा और उसकी ओर दो कदम चलकर फर्श पर ढेर हो गई। पिता ने अपने चेहरे पर भयानक भाव लाकर मुट्ठियां भींच लीं। जैसे ग्रेगोर को इसी वक़्त ठोकर मारकर उसके कमरे के अंदर कर देंगे। फिर उन्होंने किंकर्तव्यविमूढ़ भाव से अपने चारों तरफ देखा और आंखों पर हथेलियां लगाकर रोना शुरू कर दिया।

ग्रेगोर उनके कमरे में नहीं गया, बल्कि किवाड़ की ओट में छिप गया, जहां से उसके शरीर का सिर्फ आधा हिस्सा दिखता था और उसके ऊपर उसका सिर, जो दाएं-बाएं मुड़कर उनकी ओर देख लेता था। इस समय तक सुबह की रोशनी फैल चुकी थी। सड़क के पार एक अंतहीन-सी सलेटी इमारत का एक हिस्सा दिखता था और उसके सामने था, अस्पताल, जिसमें एक क़तार में एक-सी खिड़कियां थीं। बारिश अब भी हो रही थी, लेकिन धीमी और बड़ी बूंदों में। कमरे में टेबल पर नाश्ते की तश्तरियां सजी हुई थीं। सुबह का नाश्ता पिता के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हुआ करता था, जिसका आनंद वे आराम से अख़बार पढ़ते हुए उठाते थे। सामने की दीवार पर उनका चित्र टंगा हुआ था, जिसमें वे लेफ्टीनेंट की वर्दी पहने, तलवार की मूंठ पर हाथ रखे बेफिक्री से मुस्करा रहे थे।

"ठीक है," ग्रेगोर ने हेड क्लर्क से कहा। उसे एहसास था कि इतने लोगों के बीच अकेला वही है, जिसने संतुलन नहीं खोया, "मैं अभी नमूनों को पैक करके रवाना होता हूं। क्या आप सिर्फ इतना करेंगे कि मुझे यहां से निकल जाने दें। आप देख रहे हैं, महाशय! मैं कतई ज़िद्दी नहीं और अपने काम पर जाने के लिए पूरी तौर से इच्छुक हूं। जगह-जगह जाकर कंपनी का माल बेचना एक तल्ख़ जिंदगी है, लेकिन मुझे इसमें मज़ा आने लगा है। आप कहां जा रहे हैं महाशय! दफ्तर? हां! क्या वहां आप मेरा सच्चा हाल बताएंगे? कोई कर्मचारी कुछ समय के लिए अक्षम भी हो सकता है। लेकिन यही वह समय होता है, जब कर्मचारी की पिछली सेवाओं को याद किया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि स्वस्थ होने पर वह पहले से भी ज्यादा लगन और मेहनत से काम करेगा। आप भली-भांति जानते हैं कि मैं अपने चीफ का कितना वफादार हूं। इसके अलावा मुझे अपने मां-बाप और बहन की परवरिश भी करनी है। इस वक्त मैं भारी मुसीबत में फंसा हुआ हूं, लेकिन हमेशा की तरह इससे भी निकल आऊंगा। कृपया प्रतिष्ठान में मेरे अनुकूल वातावरण बनाए रखें, गोपनीय तौर पर आपको ये भी बता दूं कि कंपनी के बारे में मुझे काफी जानकारियां हैं। चीफ से भी ज्यादा, जो कि कंपनी के मालिक हैं। महाशय! महाशय! कृपया इतना तो कहते जाइए कि आप मुझे ग़लत नहीं समझते। कम-से-कम एक हद तक।"

लेकिन ग्रेगोर के शुरू होते ही हेड क्लर्क पीछे हट चुका था और मुंह बाए ग्रेगोर की ओर देख रहा था। ग्रेगोर पर नज़रें गड़ाए, वह इंच-इंच पिछले दरवाज़े की ओर खिसक रहा था और जिस फुर्ती के साथ हाल में पहुंचने के लिए उसने आख़िरी छलांग लगाई, उससे लगा था जैसे उसके जूते के तल्ले में आग़ पैदा हो गई हो।

ग्रेगोर ने सोचा कि अगर नौकरी बचानी है तो उसे इस मनःस्थिति में जाने देना ख़तरनाक होगा। उसके पिता और मां परिस्थिति की गंभीरता को नहीं समझते थे, क्योंकि इस दौरान उन्हें विश्वास हो चुका था कि उसकी नौकरी जीवन भर के लिए है। इसके अलावा उनकी तात्कालिक समस्याओं ने उनकी सारी दूरदर्शिता हर ली थी। लेकिन ग्रेगोर में यह दूरदर्शिता थी। उसे लगा कि हेड क्लर्क को रोका, मनाया और विश्वास में लिया जाना चाहिए। इसी पर उसका और उसके परिवार का भविष्य निर्भर करता था। काश! इस वक़्त बहन होती।

Scanned with OKEN Scanner

वह समझदार है, लेकिन वह नहीं है, और इस हालत में ग्रेगोर को ही सारी स्थिति संभालनी है। इस सोच के साथ ही, इस बात से बेख़बर कि उसमें हिलने या चलने की कितनी क्षमता है, और उसकी भाषा को समझा जाएगा या नहीं, वह किवाड़ के पीछे से निकलकर हेड क्लर्क की ओर बढ़ने लगा, जो हास्यास्पद ढंग से, सीढ़ियों की रेलिंग दोनों हाथों से थामे उसकी ओर कौतुक से देख रहा था। लेकिन जैसे ही ग्रेगोर सहारे की तलाश में मुड़ा, वैसे ही हल्की-सी चीख़ के साथ अपनी अनगिन टांगों पर आ गिरा। टांगों पर आते ही उसे पहली बार राहत महसूस हुई। उसके पतले पैर मज़बूती के साथ फर्श पर जमे हुए थे और उन पर उसका नियंत्रण था। ग्रेगोर को लगा, ये उसकी यातना के अंत की शुरुआत है। लेकिन संयोग से वह अपनी मां के सामने गिरा, जो उसकी शक्ल देखकर भयभीत हो, दोनों हाथों को ऊपर उठाकर चिल्लाने लगीं, "बचाओ! ईश्वर के लिए मुझे बचाओ!..." इसके साथ ही वह पीछे हटने लगीं, भूल गईं कि नाश्ते की मेज़ पीछे है। वह उछलकर मेज़ पर चढ़ गईं, जिससे कॉफी-पॉट उलट गया। कॉफी नीचे फर्श के गलीचे पर गिरने लगी। "मां, मां!" ग्रेगोर ने धीमे से कहा। गलीचे पर बिखरी क्रीम कॉफी की ओर देखते हुए उसके जबड़े सुरसुराने लगे। यहां तक कि उतनी देर के लिए वह हेड क्लर्क को भी भूल गया। मां चीख़कर पिता की बांहों में जा गिरी थी। ग्रेगोर के पास उनके लिए समय नहीं था। इस बीच हेड क्लर्क जीने पर पहुंच चुका था। ग्रेगोर ने उसे पकड़ने के लिए झपट्टा मारा। इस पर हेड क्लर्क, जो पहले से ही उसके इरादे को भांप चुका था, लंबी छलांगों में एक साथ कई-कई सीढ़ियां फलांगता हुआ अदृश्य हो गया। इस पर उसके पिता, जो अभी तक संतुलित थे, एकदम बौखला गए और क्लर्क को रोकने या उसके लिए रास्ता छोड़ने की जगह, उन्होंने उस छड़ी को उठा लिया, जो हेड क्लर्क हड़बड़ी में भागते समय, हैट और ओवरकोट के साथ कुर्सी पर छोड़ गया था। दोनों पैरों को फर्श पर ठोंककर आवाज़ें करते, एक हाथ से अख़बार और दूसरे से छड़ी हिलाते हुए वे ग्रेगोर को उसके कमरे में खदेड़ने की कोशिश करने लगे। ग्रेगोर ने नम्रतापूर्वक सिर हिलाया, लेकिन इसका भी कोई असर उन पर नहीं हुआ। बल्कि इसे समझा ही नहीं गया। जितनी बार ग्रेगोर सिर झुकाता था, उतनी ही बार पिता पैरों को ठकठकाते हुए हाथ की छड़ी घुमाते थे। पिता के पीछे खड़ी मां ने ठंड के बावजूद खिड़की खोल ली थी और दोनों हाथों में सिर थामकर बाहर झांकने लगी थीं।

हाथ की छड़ी घुमाते और बेरहमी के साथ शू!... शू!... कहते हुए पिता उसे एक जानवर की तरह उसके कमरे की ओर हांकने लगे। ग्रेगोर को मुड़ने का अभ्यास नहीं था। ये डर भी लग रहा था कि मुड़ने में देर लगेगी, जिससे उत्तेजित होकर पिता किसी भी क्षण उसके सिर या पीठ पर छड़ी से प्रहार कर बैठेंगे। पीछे सरकने में उसने पाया कि उसकी दिशा ग़लत हो गई है। उसने मुड़ना शुरू कर दिया। पिता ने शायद उसके इस नेक इरादे को समझ लिया और छड़ी की नोंक से कमरे की ओर संकेत करने के अलावा दूसरी हरकतें बंद कर दीं। लेकिन उनके मुंह से लगातार निकलने वाली शू! शू! की आवाज़ों ने ग्रेगोर का दिमाग़ गड़बड़ा दिया। वह अपने कमरे के दरवाज़े से
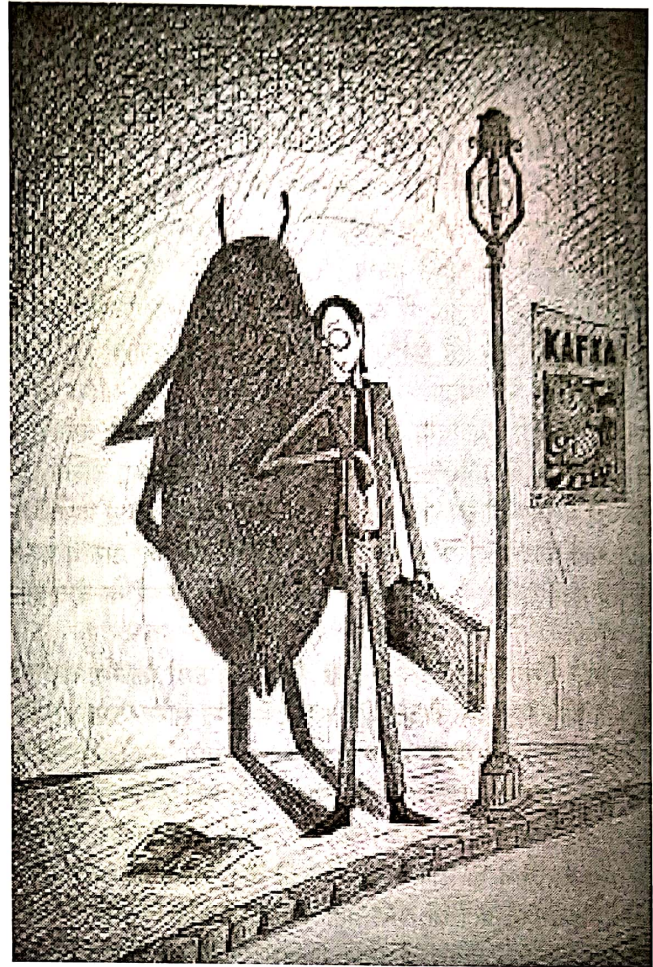
गुज़रने लगा तो उसे पता चला कि उसका शरीर अधखुले दरवाज़े से ज्यादा चौड़ा है। लेकिन उसके पिता ने इसे नहीं समझा। उनके दिमाग़ में सिर्फ एक ही ख़्याल था–जैसे भी हो ग्रेगोर को उसके कमरे में ठेल देना। भागने की हड़बड़ी में ग्रेगोर दरवाज़े में फंसकर रह गया, जिससे उसका बायां हिस्सा बुरी तरह ज़ख़्मी हो गया। उसी समय पिता ने अपने बूट से एक ज़ोरदार ठोकर लगाई। ग्रेगोर ख़ून बहाता हुआ, छिटककर अंदर आ गिरा।

पीछे का दरवाज़ा बंद हो गया। फिर अभेद्य ख़ामोशी छा गई।

खंड-दो

शाम को गहरी नींद, बल्कि बेहोशी के एक दौर से ग्रेगोर की आंख खुली। अपनी मर्ज़ी से भी वह इसी वक़्त जागना चाहता था। अब वह गहरी नींद और विश्राम ले चुका था। फिर भी उसे लगा, जैसे उसकी नींद बाहर होती, क़दमों और हॉल की तरफ़ वाले दरवाज़े के बंद होने की आहटों से खुली हो। सड़क से आती रोशनियों का उजास सीलिंग और कमरे में रखे फर्नीचर के ऊपरी हिस्सों को रोशन कर रहा था। लेकिन जहां वह लेटा था, वहां अंधेरा था। धीमे और बेतुके ढंग से अपनी बड़ी मूंछों के सहारे, जिनका उपयोग उसकी समझ में आ चुका था, यह देखने के लिए कि हॉल में क्या हो रहा है, उसने दरवाज़े की

Scanned with OKEN Scanner

ओर रेंगना शुरू कर दिया। उसके शरीर का बायां हिस्सा एक लंबे ज़ख़्म की तरह दुख रहा था। इसलिए उसे पैरों की दाईं कतार पर लंगड़ाते हुए चलना पड़ रहा था। उसका एक पैर सुबह की दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो चुका था, (करिश्मा कि सिर्फ एक ही) और वह उसके पीछे किसी फालतू चीज की तरह घिसट रहा था।

इसके पहले कि उसकी समझ में आए कि उसे दरवाज़े की तरफ किस चीज ने आकर्षित किया, वह दरवाज़े पर पहुंच चुका था। दरवाज़े पर एक पतीले में ताज़ा दूध रखा हुआ था, जिसमें सफेद रोटी के टुकड़े तैर रहे थे। वह खुशी से हंस पड़ा क्योंकि इस वक्त वह सुबह से भी ज्यादा भूखा था। उसने अपनी आंखों सहित अपने सिर को दूध में डुबो दिया और निराश होकर निकाल लिया क्योंकि न केवल उसके सिर के बाएं हिस्से में तेज़ दर्द हो रहा था, बल्कि दूध भी उसे पसंद नहीं आ रहा था। हालांकि दूध उसे हमेशा से पसंद था, और यही कारण था कि बहन उसे वहां रख गई थी। वह अरुचि प्रकट करता हुआ पतीले से हटा और रेंगता हुआ अपने कमरे के बीचोंबीच आ गया।

उसने दरवाज़े की संधि से देखा, रिहायशी कमरे की गैस बंद कर दी गई थी। पिता की आदत थी कि वे इस वक्त सांध्य-अख़बार को, मां को और कभी-कभी बहन को बांचकर सुनाया करते थे। लेकिन आज उसका एक शब्द भी नहीं सुनाई दे रहा था। शायद अब उनकी ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने की आदत बंद हो गई थी, जैसाकि उसकी बहन आपसी बातचीत या पत्रों में कहा करती थी। लेकिन इस वक्त फ्लैट में इस कदर सन्नाटा था, जैसे वहां कोई न रहता हो। "हमारा परिवार कितना शांतिपूर्ण जीवन जी रहा है।" अंधेरे में निष्पंद देखते हुए ग्रेगोर ने अपने आप से कहा। उसे गर्व महसूस हुआ कि उसने अपने मां-बाप और बहन को कितना बढ़िया फ्लैट और कितनी खुशनुमा जिंदगी दी है। लेकिन ये क्या? अब उनकी सारी सुविधाओं, शांति और संतोष का एक भय में अंत होने वाला था।

अंत में इन ख़्यालों से बचने के लिए उसने कमरे में ऊपर-नीचे रेंगना शुरू कर दिया। देर तक ठहरने वाली शाम को, बग़ल का दरवाज़ा थोड़ा-सा खुला और बंद हो गया। इसके बाद दूसरी तरफ का दरवाज़ा। ज़ाहिर है, कोई अंदर आना चाहता था, जिसने बाद में इरादा बदल दिया।

ग्रेगोर रेंगकर रिहायशी कमरे वाले दरवाज़े पर आ गया, इस संकल्प के साथ कि वह झिझकने वाले आगंतुक से अंदर आने का अनुरोध करेगा– कम-से-कम इसलिए कि अंदर आकर देख तो लें कि वह कौन हो सकता है। लेकिन इंतज़ार व्यर्थ गया। दरवाज़ा फिर नहीं खुला। सुबह जब सभी दरवाज़ों पर ताले थे, सब अंदर आना चाहते थे। और अब, जब सब दरवाज़े खुले हुए थे, कोई नहीं आ रहा था।

देर रात को जब रिहायशी कमरे की गैस बंद हुई तो ग्रेगोर के लिए यह जानना आसान था कि उसके मां-बाप और बहन कब तक जागते रहे क्योंकि वह तीनों की पंजों के बल चलने की आवाज़ों को साफ-साफ सुन सकता था। अब तय था कि सुबह तक उसके पास कोई नहीं आएगा। अब उसके पास अपने जीवन को नई तरतीब देने के बारे में सोचने के लिए काफी वक्त था। लेकिन उस ऊंची सीलिंग वाले खाली कमरे ने, जिसके फ़र्श पर उसे लेटना था, उसे अजीब से आतंक से भर दिया। (जिसमें वह पिछले पांच वर्षों से रह रहा था।) और नीमहोशी की हालत में शर्मिंदगी महसूस करता हुआ, सोफे के अंदर रेंग गया। यहां उसे राहत महसूस हुई। हालांकि उसकी पीठ ज़ख़्मी थीं और वह सिर नहीं उठा सकता था। उसका सबसे बड़ा अफ़सोस यही था कि उसका शरीर बहुत बड़ा है, जो पूरी तौर से सोफे के नीचे नहीं समा पाता।

वह वहां सारी रात कच्ची नींद की हालत में पड़ा रहा, जिसे जब-तब तीव्र भूख जगा देती थी या कभी धुंधली और उदास उम्मीदें, जो एक ही नतीजे पर पहुंचती थीं कि वर्तमान हालत में उसे अत्यधिक विनम्र होकर रहना चाहिए। अत्यंत धैर्य और समझदारी से काम लेना चाहिए, जिससे उसके कारण उसके परिवार को कम-से-कम परेशानी हो।...

अलस्सुबह, जब रात जैसा अंधकार था, उसकी बहन ने हॉल की तरफ वाला दरवाज़ा खोलकर अंदर झांका, तो ग्रेगोर को अपने निर्णय को परखने का मौका मिला। वह बहन को यकायक नज़र नहीं आया। लेकिन जब उसने ग्रेगोर को सोफे के नीचे देखा (उसे कहीं तो होना ही था) तो इतनी भयभीत हुई कि दरवाज़ा बंद करके भागी। लेकिन जैसे अपने व्यवहार पर अफ़सोस करती हुई, उसने फिर दरवाज़ा खोला और इस तरह पंजों पर चलती हुई अंदर आई जैसे किसी अपाहिज बल्कि किसी अजनबी को देखने आई हो। ग्रेगोर ने, जिसने अपना सिर सोफे के सिरे से टिका रखा था, उसकी ओर देखा। क्या बहन समझ सकेगी कि उसने दूध, भूख के अभाव के कारण नहीं छोड़ा था और अब उसकी पसंद का कोई खाना ले आएगी। अगर वह ऐसा अपने मन से नहीं करती तो वह भी भूखों मर जाएगा, लेकिन इस ओर उसका ध्यान आकर्षित नहीं करेगा। हालांकि इस वक्त उसकी तीव्र इच्छा हो रही थी कि सोफे से निकलकर उसके पैरों पर गिर पड़े और कुछ खाने की गुहार करे। लेकिन उसकी बहन ने दूध भरे पतीले को देख लिया, जिसका थोड़ा-सा दूध छलक-भर गया था। उसने तुरंत पतीले को कपड़े से पकड़कर उठाया और बाहर हो गई। ग्रेगोर को भयानक कौतूहल हो रहा था कि वह दूध के बदले क्या लाएगी और इसे लेकर वह मन-ही-मन तरह-तरह के अनुमान भिड़ा रहा था। लेकिन इस निर्मल मन वाली लड़की ने इसके बाद जो किया, उसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। यह जानने के लिए कि उसे कौन-सा खाना पसंद हो सकता है, वह एक पुराने अख़बार पर सभी तरह के खाने रखकर ले आई। जैसे अधसड़ी सब्ज़ियां, पिछली रात के भोजन में चिंचोड़ी गई हड्डियां, जिन पर चटनी की मोटी पर्त जम गई थी, कुछ काजू और बादाम, चीज़ का एक टुकड़ा, जिसे दो दिन पहले ग्रेगोर ने अखाद्य घोषित कर दिया होता, कुछ सूखी रोटियां और एक क्रीमरोल। एक रोल ऐसा भी, जिसमें मक्खन और नमक दोनों लगे हुए थे। इसके अलावा वह पतीला, जिसमें इस वक्त दूध की जगह पानी भरा हुआ था और यह सिर्फ उसके उपयोग के लिए। इसके

Scanned with OKEN Scanner

साथ ही बहन बड़ी चतुराई से, यह समझते हुए कि उसके सामने खाने में वह संकोच करेगा, वहां से तुरंत हट गई। यहां तक कि किवाड़ बंद करने के बाद ताले की चाबी घुमाकर ग्रेगोर को संकेत दे गई कि अब वह चैन से मनचाहे तरीके से खा सकता है।

उसके बाहर होते ही ग्रेगोर की सारी टांगें एक साथ खाने की ओर भागीं। उसे इसमें कोई अक्षमता नहीं महसूस हो रही थी। इसका मतलब, उसका ज़ख़्म भर गया है। इस पर उसे आश्चर्य हुआ। उसे याद आया कि किस तरह उसने माह भर पहले एक छोटे से चाकू से अपनी उंगली काट ली थी, जिसकी तकलीफ उसने परसों तक महसूस की थी।

"मैं कम संवेदनशील हो रहा हूं," उसने सोचा और झपटकर चीज़ के टुकड़े को चूसने लगा। इसी ने उसे तमाम भोजन में सबसे ज्यादा आकर्षित किया था। उसकी आंखों से संतोष के आंसू छलक रहे थे। उसने फुर्ती से चीज़, सब्ज़ियों और चटनी को सफाचट कर दिया। इसके विपरीत ताज़े भोजन में उसे कोई रुचि नहीं हुई। उसे उसकी गंध तक बर्दाश्त नहीं थी और उससे बचने के लिए वह अपनी पसंद के भोजन को घसीटता हुआ दूर हट गया।

वह खाना ख़त्म करने के बाद सुस्ती से लेटा हुआ था कि उसकी बहन ने धीमे से दरवाज़े की ताली घुमाई। ग्रेगोर के लिए यह एक संकेत था कि वह दरवाज़े से हट जाए। इस आवाज़ से उसकी झपकी खुल गई। वह लगभग सो चुका था। वह भागकर तुरंत सोफे के नीचे जा दुबका, सोफे के नीचे रहने में उसे काफी आत्म-नियंत्रण से काम लेना पड़ा। (जितनी देर तक बहन कमरे में रही)। अकूत भोजन के बाद उसका पेट बुरी तरह फूला हुआ था। यहां तक कि उसे सांस लेने में भी तकलीफ हो रही थी। कभी-कभी सांस अटकने लगती थी और महसूस होता था, जैसे माथे से आंखें निकली पड़ रही हों।

इसी हालत में उसने सोफे के नीचे से देखा कि बहन ने झाड़ू से कमरा साफ किया और कूड़े वाली बाल्टी में, जिस पर काठ का ढक्कन लगा हुआ था, कूड़े के साथ उस सामान को भी भर लिया, जिसे ग्रेगोर ने छुआ तक नहीं था। कुछ इस तरह जैसे वे चीजें अब किसी के काम की नहीं और बाल्टी के साथ कमरे के बाहर हो गई। उसके जाते ही ग्रेगोर सोफे के नीचे से निकला और प्रकृतिस्थ होने के लिए ऐंढ़ाने-मुर्राने लगा।

इस तरह छिपाकर ग्रेगोर का पेट भरा जाने लगा। एक बार सुबह, जब उसके मां-बाप और नौकरानी सोए हुए होते थे। दूसरी बार दोपहर के भोजन के बाद, जब उसके मां-बाप थोड़ी-सी झपकी लेते थे और नौकरानी को किसी काम के बहाने बाहर भेजा जा सकता था। इसलिए नहीं कि वे उसे भूखों मार डालना चाहते थे, बल्कि इसलिए कि वे उसे खाते देखना चाहते, और बहन नहीं चाहती थी कि वे उस यातना से गुज़रें।

पिछली सुबह डॉक्टर और लुहार को किस बहाने टाला गया, इसका कोई पता ग्रेगोर को नहीं चला क्योंकि जो कुछ ग्रेगोर ने कहा, उन्होंने नहीं समझा, और उन्हें, यहां तक कि उसकी बहन को भी, भूलकर ये ख़्याल नहीं आया कि वह उनकी बातों को समझ सकता

उसके बाहर होते ही ग्रेगोर की सारी टांगें एक साथ खाने की ओर भागीं। उसे इसमें कोई अक्षमता नहीं महसूस हो रही थी। इसका मतलब, उसका ज़ख़्म भर गया है। इस पर उसे आश्चर्य हुआ। उसे याद आया कि किस तरह उसने माह भर पहले एक छोटे से चाकू से अपनी उंगली काट ली थी, जिसकी तकलीफ उसने परसों तक महसूस की थी।

है। इसलिए जब उसकी बहन पहली बार उसके कमरे में आई तो ग्रेगोर को उसकी गहरी सांसों के साथ की गई संतों की प्रार्थना सुनकर ही संतोष करना पड़ा। बाद में जब वह उसकी कुछ अभ्यस्त हुई (पूरी तौर से होना असंभव था) तो जब ग्रेगोर सारा खाना साफ़ कर देता, वह कहती थी, "आज उसने दोपहर का भोजन पसंद किया," जिसका मतलब दया होता था और जब वह बिल्कुल नहीं खाता था, जैसा उत्तरोत्तर होने लगा तो दुख से बुदबुदाती थी, "आज उसने फिर कुछ नहीं छुआ।"

ग्रेगोर को कोई समाचार सीधे नहीं मिलता था, हालांकि वह बग़ल के कमरों की काफी टोह लेता रहता था। जब भी किसी कमरे से आवाज़ आती थी, वह उस तरफ के दरवाज़े पर जा पहुंचता था और सटकर खड़ा हो जाता था। शुरू के दिनों में ऐसी कोई चर्चा नहीं होती थी, जिसमें परोक्ष ही सही, उसका ज़िक्र न हो। पूरे दो दिन, भोजन के वक्त इस बात पर पारिवारिक विमर्श होता रहा कि उसके साथ क्या किया जाए, बल्कि कहना चाहिए कि हर वक्त उसी की चर्चा होती थी। घर में हर वक्त दो प्राणियों का रहना ज़रूरी हो गया था, क्योंकि हर व्यक्ति वहां अकेले रहने से डरता था और मकान को एकदम खाली छोड़ने का सवाल ही नहीं उठता था।

अगले दिन घर की रसोईदारिन (स्पष्ट नहीं कि वह उसके बारे में कितना जानती थी?) ने घुटनों पर झुककर मां से विदा मांगी और जब लगभग पंद्रह मिनट बाद गई तो उसकी आंखों में आनंद के आंसू थे, जैसे संसार में इससे बड़ा और कोई उपकार उसके लिए नहीं हो सकता था। इसके अलावा उसने बिना कहे सौगंध खाई कि घर में क्या हुआ है, इसके बारे में वह एक भी शब्द किसी को नहीं बताएगी।

अब बहन को खाना बनाने में मां की मदद करनी पड़ती थी। हालांकि खाना ज्यादा नहीं बनाना पड़ता था, क्योंकि वे कभी-कभी ही खाते थे। ग्रेगोर को हमेशा सुनाई पड़ता था कि परिवार का कोई एक-दूसरे से खाने का आग्रह कर रहा है, जिसका इसके अलावा कोई जवाब नहीं मिलता, "धन्यवाद! मैंने ज़रूरत के मुताबिक खा लिया।" या ऐसा ही कोई और जुम्ला। उसकी बहन बार-बार पिता से कुछ पीने का आग्रह करती, जिसे वह ख़ुद बाज़ार से ला देगी। कोई जवाब नहीं मिलता तो वह कहती कि वह छोकरे से कहकर मंगवा सकती है, ताकि पिता को उसकी अत्यधिक कृतज्ञता का बोझ न झेलना पड़े।

Scanned with OKEN Scanner

अंत में उसके पिता के मुंह से एक निर्णयात्मक 'नहीं' निकलता। इसके बाद शांति छा जाती।

उसी रोज़ पिता ने परिवार की आर्थिक स्थिति तथा उस ओर बहन की संभावनाओं के बारे में बताया। वे बीच-बीच में उठकर, अपनी छोटी-सी सेफ से, जिसे उन्होंने किसी तरह पांच वर्ष पूर्व हुए अपने धंधे के ध्वंस से बचा लिया था, कोई बाउचर या मेमोरेंडम निकाल लाते। उनके सेफ के पेचीदा ताले को खोलने की आवाज़ें और कागज़ों की सरसराहट साफ-साफ सुनाई पड़ रही थी। पिता का वक्तव्य ग्रेगोर के लिए अपनी कैद के बाद का पहला खुशनुमा समाचार था। अब तक उसका ख़्याल था कि पिता के धंधे को दिवाला पिटने के बाद उनके पास कुछ नहीं बचा। हालांकि ग्रेगोर ने उनसे कभी पूछा नहीं। उन्होंने भी कभी उसकी इस धारणा का खंडन नहीं किया। उस समय ग्रेगोर की सबसे बड़ी आकांक्षा यही थी कि जैसे भी हो परिवार उस त्रासदी को भूल जाए। और उसकी पूर्ति के लिए वह असाधारण जोश-खरोश से जुट गया और रातों-रात कोई नाचीज़ क्लर्क होने की बजाय एक कंपनी का ट्रेवलिंग एजेंट बन गया, जिसमें कमाई की ज़्यादा संभावनाएं थीं। जल्द ही उसकी सफलता सोने के सिक्कों में बदलने लगी, जिन्हें वह अपने चकित, प्रसन्न परिवार के सामने मेज़ पर उड़ेल देता था। वे बढ़िया दिन थे, जो अब नहीं लौटेंगे। इसके बाद ग्रेगोर ने इतना कमाया, जिससे वह अपने पूरे परिवार का ख़र्चा चला सकता था, जैसाकि उसने किया भी। वह और उसका परिवार जल्द ही इस ज़िंदगी के आदी हो गए। रुपया प्रसन्नता से दिया जाता था और कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जाता था। लेकिन इसमें गर्मजोशी नहीं थी, कम-से-कम शुरू की उत्फुल्लता और गरिमा तो नहीं ही। उसकी अंतरंगता सिर्फ बहन से थी। उसने मन-ही-मन योजना बना रखी थी कि उसे (ग्रेगोर के विपरीत बहन को संगीत से प्रेम था और वह वायलिन पर मार्मिक धुनें बजाती थी) संगीत सीखने के लिए, अगले वर्ष कंजरवेटोरियम भेजेगा। हालांकि इसमें बड़ा ख़र्चा आएगा, जिसे वह किन्हीं दूसरे तरीकों से पूरा करेगा। वह जब घर पर होता था तो बहन के साथ की बातचीत में कंजरवेटोरियम का ज़िक्र जरूर होता था, लेकिन एक खुशनुमा सपने के रूप में, जो कभी पूरा नहीं होगा। यहां तक कि ग्रेगोर के मां-बाप भी कंजरवेटोरियम का ज़िक्र करने से निरुत्साहित करते थे। लेकिन ग्रेगोर ने संकल्प कर लिया था और क्रिसमस के दिन इसकी विधिवत घोषणा करना चाहता था।

उस समय जब वह दरवाज़े से चिपककर बाहर की आवाजें सुनने की कोशिश कर रहा था, उसके दिमाग़ से ऐसे ही फिजूल के ख़्याल गुज़र रहे थे। कभी वह थककर सुनना बंद कर देता और लापरवाही से अपने सिर को किवाड़ पर गिर जाने देता, और फिर संभल जाता, क्योंकि उसकी मामूली-सी आहट बाहर सुनाई पड़ती थी और उनकी बातचीत बंद हो जाती थी।

"अब वह क्या कर रहा होगा?" दरवाज़े की ओर मुड़ते हुए उसके पिता कहते। इसके बाद उनका थमा हुआ वार्तालाप फिर शुरू हो जाता।

जितनी सूचनाएं ग्रेगोर को चाहिए थी, मिल चुकी थीं। चूंकि मां एक बार में नहीं समझती थी, इसलिए पिता ने कई-कई बार दोहराया था। उन्होंने बताया कि पिछले धंधे की बर्बादी से बची कुछ रक़म उनके पास है, जो ब्याज जुड़ने के बाद कुछ बढ़ गई है। इसके अलावा उस रक़म से भी, जो ग्रेगोर उन्हें हर माह ख़र्च करने के लिए देता था, वे कुछ-न-कुछ बचाते रहे हैं। कुल मिलाकर एक छोटी-सी पूंजी जमा हो गई है। ग्रेगोर पिता की अप्रत्याशित दूरदर्शिता से उत्साहित हुआ। हालांकि यह भी सही था कि वे इस राशि से चीफ का कर्ज चुकाकर उसे नौकरी से मुक्ति दिला सकते थे। लेकिन जैसा कि सिद्ध हुआ पिता ज़्यादा सही थे।

लेकिन जमा-पूंजी इतनी अधिक भी नहीं थी कि उसके ब्याज से परिवार का गुज़र हो सके। एक या अधिक-से-अधिक दो साल वे मूलधन पर गुज़ारा कर सकते थे। यह ऐसी रक़म थी, जिसे छुआ नहीं जाना चाहिए और किसी मुसीबत के दिन के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। रोज़मर्रा के ख़र्च के लिए रुपया कमाया जाना चाहिए। उसके पिता स्वस्थ मगर बूढ़े थे। पिछले पांच वर्षों से उन्होंने कोई काम नहीं किया था और न अब उनसे कोई ऐसी उम्मीद की जा सकती थी। अपनी संघर्षपूर्ण और असफल ज़िंदगी के बाद वे पिछले पांच वर्षों में कुछ मोटे और सुस्त हो गए थे। मां को अस्थमा की बीमारी थी। उनसे किसी कमाई की उम्मीद ही कैसे की जा सकती थी। फ्लैट में चलते-फिरते वक़्त भी वे अपने रोग से पीड़ित रहती थीं। हर दूसरे दिन खिड़की के बगल वाले सोफे पर लेटकर सांस के लिए छटपटाती रहती थीं। तो क्या बहन को रोटी कमाने जाना चाहिए, जो अभी सत्रह साल की बच्ची है, और अभी तक जिसकी ज़िंदगी खुशनुमा रही है। अभी तक वह सज-धज से रहती थी, देर तक सोती थी, घर के कामों में हाथ बंटाती थी, मनोरंजन के लिए क्लबों में जाती थी और सबसे ऊपर वायलिन पर मार्मिक धुनें बजाती थी। परिवार में जब भी रुपयों की ज़रूरत पर चर्चा होती थी, ग्रेगोर दरवाज़े से हटकर चमड़े के ठंडे सोफे पर जा लेटता था दुख और शर्म से तपता हुआ।

वह अक्सर सोफे पर बिना नींद लिए चमड़े को पैरों से खुरचता हुआ, रात-रात भर पड़ा रहता। या कभी अथक प्रयत्न से आरामकुर्सी को खिड़की के पास खिसकाकर, उसके सहारे खिड़की की चौखट पर चढ़ जाता और बाहर झांकने लगता। शायद अपनी स्वतंत्रता महसूस करने के लिए एक भाव! जो खिड़की से झांकने पर उसे हमेशा महसूस होता था। दिन-ब-दिन दूर की चीज़ें उसे धुंधली दिखने लगी थीं। सड़क पार का अस्पताल, जिसे वह अक्सर देखा करता था, उसकी दृष्टि परिधि के बाहर हो गया था। और अगर उसे याद न होता कि वह चारलोट स्ट्रीट पर रहता है तो वह विश्वास कर लेता कि उसकी खिड़की किसी रेगिस्तानी उजाड़ में खुलती है, जहां भूरी पृथ्वी और भूरा आकाश मिलकर एक हो जाते हैं। उसकी चतुर बहन ने दो बार देखकर ही समझ लिया था कि कुर्सी खिड़की के पास क्यों पड़ी हुई है। इसके बाद से कमरा साफ करने के बाद वह कुर्सी को उसी स्थान पर रख दिया करती थी। यहां तक कि कभी-कभी खिड़की भी खोल देती थी।

Scanned with OKEN Scanner

अगर ग्रेगोर धन्यवाद कह पाता तो उसे बहन की सेवाओं से इतना अनाथ-बोध न होता। बहन हमेशा ग्रेगोर के अधिक-से-अधिक अनुकूल होने की कोशिश करती थी। धीरे-धीरे ग्रेगोर भी समझदार होना शुरू हो गया, लेकिन जिस ढंग से वह कमरे में प्रवेश करती थी, उससे ग्रेगोर को तक़लीफ होती थी। कमरे में कदम रखते ही वह सीधे खिड़की की तरफ भागती थी, बिना इसकी चिंता किए कि दरवाज़ा बंद है या नहीं। (वह हमेशा ग्रेगोर को दूसरों की नज़रों से छिपाने का प्रयत्न करती थी।) फिर जैसे दम घुट रहा हो, खिड़की खोलकर लंबी-लंबी सांसें भरने लगती थी। ग्रेगोर घबराकर सोफे के नीचे दुबक जाता था। वह जानता था कि अगर बहन के लिए बिना खिड़की खोले उसके पास खड़े रहना संभव होता, तो वह कभी उसे दुखी न करती।

लगभग एक माह बाद जब वह ग्रेगोर की कुछ आदी हुई (पूरी तौर से आदी होना असंभव था) तो एक सुबह रोज़ की अपेक्षा कुछ जल्दी आ गई। उसने देखा कि ग्रेगोर परम शांत और बिना हिले-डुले खिड़की के बाहर देख रहा है और पीछे से एक विशाल पिस्सू की तरह लग रहा है। यह दृश्य देखते ही वह भागी और डरकर किवाड़ बंद करती गई। उसे ग़लतफहमी हो गई थी कि ग्रेगोर इस इंतज़ार में है कि जैसे ही वह अंदर आए, झपटकर उसे काट ले। ग्रेगोर तुरंत उतरकर सोफे के नीचे छिप गया और बहन की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन वह दोपहर से पहले नहीं आई। बहन की उदासी से उसे पता चला कि वह कितना वीभत्स लगता है। उसे इस पर अफ़सोस हुआ कि बहन को उसके शरीर के उस हिस्से को, जो सोफे के नीचे नहीं छिपता, देखने और बर्दाश्त करने में कितनी कोफ़्त होती होगी। बहन को इस कष्ट से मुक्त करने के लिए एक दिन वह चादर लादकर ले आया। इसके लिए उसे पूरे चार घंटे मेहनत करनी पड़ी। उसने चादर को सोफे पर इस तरह से व्यवस्थित कर दिया कि वह पूरी तौर से छिप जाए। जब बहन आई तो ग्रेगोर ने यह जानने के लिए कि बहन ने उसकी नई व्यवस्था को किस रूप में लिया, चादर से झांका, उसे बहन की आंखों में कृतज्ञता की झलक दिखाई दी।

पहले पखवारे में ग्रेगोर के मां-बाप की हिम्मत उसके कमरे में आने की नहीं हुई, हालांकि वे बहन की प्रशंसा ज़रूर करते थे। (इसके पहले उन्होंने उसे एक नाकारा लड़की घोषित कर दिया था।) लेकिन जब बहन कमरा साफ कर रही होती तो वे दरवाज़े पर ज़रूर आ खड़े होते। बहन के बाहर निकलते ही वे उससे अंदर की जानकारी लेते, जैसे ग्रेगोर ने आज क्या खाया? क्या उसकी हालत में कोई सुधार हुआ? एक बार मां ने उसे देखने की इच्छा प्रकट की तो बहन और पिता ने उनका विरोध किया। एक दिन कमरे की ओर झपटीं तो दोनों ने उन्हें ज़बर्दस्ती रोक लिया। मां चिल्लाती रहीं, "मुझे अपने अभागे बेटे के पास जाने दो।" इस पर ग्रेगोर ने सोचा अधिक बार नहीं तो हफ़्ते में कम-से-कम एक बार ज़रूर मां को उसके कमरे में आने देना चाहिए। आख़िर वे बहन के मुकाबले ज्यादा अनुभवी और समझदार हैं।

मां की इच्छा जल्द पूरी हो गई। ग्रेगोर नहीं चाहता था कि दिन के वक़्त कोई उसे खिड़की पर देखे। न ही यह संभव था कि फ़र्श
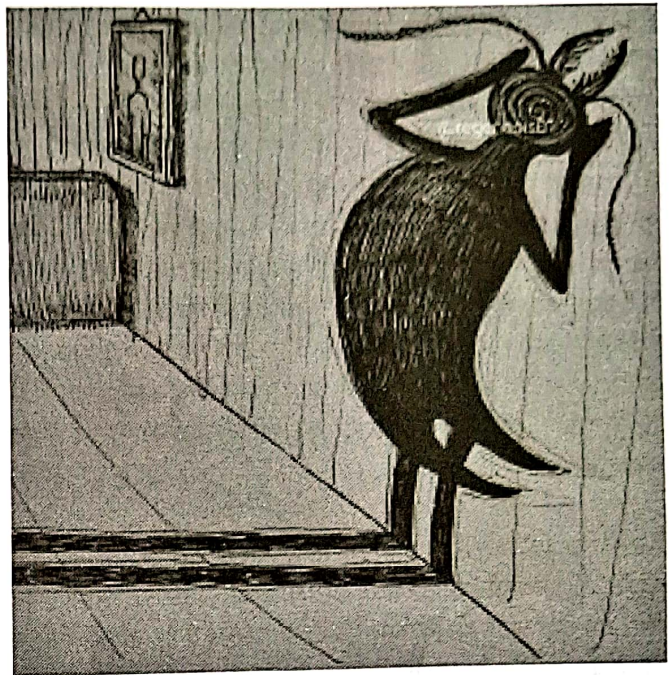
की कुछ वर्ग गज जगह पर वह अनंत काल तक घूमता रहे। रात भर निष्क्रिय पड़े रहने से उसे ऊब होने लगी थी। इधर खाने में भी उसकी रुचि कम होने लगी थी। इसलिए नए मनोरंजन की तलाश में उसने दीवारों और सीलिंग पर घूमने की आदत डाल ली। उसे सीलिंग से उल्टा लटकने में विशेष मज़ा आता था। यह फ़र्श पर पड़े रहने से तो बेहतर था। यहां खुलकर सांस ली जा सकती थी। इसके अलावा शरीर को हिलाया-डुलाया जा सकता था। लेकिन इसमें कभी-कभी उसके पैर छूट जाते थे और वह फ़र्श पर गिर पड़ता था। लेकिन अब उसका अपने शरीर पर नियंत्रण हो चुका था, जिससे गिरने पर ज्यादा चोट नहीं आती थी।

बहन को उसके नए मनोरंजन का पता जल्द चल गया। दीवारों पर, जहां से वह गुज़रता था, उसके चिपचिपे पैरों के निशान छूट जाते थे। इससे बहन को ख़्याल आया कि उसके घूमने के वास्ते उसे ज्यादा जगह देनी चाहिए और इसके लिए कमरे का फर्नीचर हटा लेना चाहिए। लेकिन ये काम उससे अकेले-अकेले संभव नहीं था। इसलिए जब एक दिन पिता बाहर गए हुए थे, उसने मां के सामने अपना प्रस्ताव रखा, जिसे मां ने तुरंत स्वीकार कर लिया। लेकिन ग्रेगोर के कमरे में पदार्पण करते ही उनका उत्साह भंग हो गया। यह देखने के लिए कि कमरे में सब कुछ ठीक-ठाक है, पहले बहन ने प्रवेश किया। ग्रेगोर ने जल्दी से अपनी चादर अपने ऊपर खींच ली। कुछ इस तरह कि वह सोफे पर पड़े चादर के एक ढेर की तरह दिखे। उसने चादर के अंदर से झांकने की कोशिश भी नहीं की।

"आ जाइए" बहन ने मां से कहा और उनका हाथ पकड़कर कमरे में ले आई। पहले ग्रेगोर को अपना संदूक सरकाए जाने की आवाज़ सुनाई दी। कोई पंद्रह मिनट की मेहनत के बाद मां ने सुझाव दिया कि संदूक यथास्थान रख दिया जाना चाहिए। इसलिए कि संदूक बहुत भारी है, जिसे पिता की मदद के बिना हटाया जाना नामुमकिन

है। दूसरे, उसके कमरे के बीचोंबीच आ जाने के कारण ग्रेगोर को घूमने-फिरने में दिक्कत आएगी। अंत में मां ने फुसलाकर कहा, "फर्नीचर हटाने से क्या वह यह नहीं सोचेगा कि हमने उसके ठीक होने की उम्मीद छोड़ दी है और हम उसे उसके हाल पर छोड़ रहे हैं?" मां की बातों से ग्रेगोर ने निष्कर्ष निकाला कि दो महीने से किसी के साथ संवाद न होने के कारण उसकी सोच गड़बड़ा गई है, क्या सारा फर्नीचर निकल जाने के बाद उसका कमरा एक खाली मांद में नहीं बदल जाएगा? जिसमें उसको घूमने-फिरने की आज़ादी तो होगी, लेकिन उसकी सारी मानवीय स्मृतियों के लोप होने की कीमत पर। कमरे से कुछ भी नहीं हटाया जाना चाहिए। सारी चीज़ें उसी हालत में रहनी चाहिए। फर्नीचर की मौजूदगी का उसके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

दुर्भाग्य से बहन की राय मां से भिन्न थी। वह अपने को ग्रेगोर के मामलों का विशेषज्ञ मानती थी। इसलिए मां की राय पर वह न केवल संदूक बल्कि सोफे के अलावा सारे फर्नीचर हटाने पर आमादा हो गई। वह देख चुकी थी कि घूमने-फिरने के लिए ग्रेगोर को अधिकतम जगह की ज़रूरत है। फर्नीचर का इस्तेमाल वह कभी नहीं करता था। इसलिए वह अपने संकल्प पर दृढ़ रही। थोड़ी-सी झड़प के बाद मां संदूक को बाहर निकालने में उसकी मदद करने लगीं। यह देखने के लिए कि वह उनके लिए क्या कर सकता है, ग्रेगोर ने सोफे के नीचे से सिर निकाला। लेकिन दुर्भाग्य से मां, हॉल से, जहां सटे संदूक जमाने की कोशिश कर रही थी, पहले लौटीं। मां उसे देखने की आदी नहीं थीं, इसलिए ग्रेगोर छिपने के लिए सोफे के दूसरे सिरे की ओर भागा। इस हड़बड़ी में उसके ऊपर से चादर हट गई। मां को स्तब्ध करने के लिए इतना काफी था। वह एक क्षण के लिए सन्न खड़ी रह गईं, फिर उल्टे पैरों ग्रेटे की ओर भागीं। हालांकि ग्रेगोर अपने को बराबर विश्वास दिला रहा था कि उसके साथ कोई अनहोनी नहीं हो रही, सिर्फ कमरे का फर्नीचर हटाया जा रहा है। फिर भी उसे मानना पड़ा कि दोनों महिलाओं का कमरे में बार-बार आना-जाना, उनकी चीखें और फर्नीचर के घसीटे जाने की आहटें उसे चारों दिशाओं से आने वाले किसी विस्फोट की तरह लग रही थीं, जिसे वह ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वे उसका कमरा खाली कर रही थीं। उसकी हर उस चीज़ को हटा रही थीं, जो उसे प्रिय थी। वह संदूक, जिसमें उसकी आरी और बढ़ईगिरी के हथियार रखे थे, हटाया जा चुका था। अब वे उसका डेस्क खोल रही थीं, जिस पर वह उस समय, जब वह कमर्शियल अकादमी और ग्रामर स्कूल का विद्यार्थी था, अपना होमवर्क किया करता था। ग्रेगोर उन दोनों महिलाओं का, जो बग़ल के कमरे में व्यस्त थीं, अस्तित्व भूल चुका था। उनके नेक इरादों पर जाया करने के लिए उसके पास वक्त नहीं था।

वह तुरंत सोफे के नीचे से निकला। (इस वक्त दोनों महिलाएं बग़ल के कमरे में, उसके लिखने वाले डेस्क पर झुकी हुई सुस्ता रही थीं।) चलते वक्त उसने कई बार अपनी दिशा बदली, क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि किस सामान की रक्षा सबसे पहले करनी चाहिए। तभी उसकी निगाह सामने दीवार पर फरकोट वाली लड़की के चित्र की ओर गई। उस दीवार से शेष सभी तस्वीरें उतारी जा चुकी थीं। वह फुर्ती से दीवाल पर चढ़ गया और तस्वीर के कांच से चिपक गया। कांच की सतह उसके पंजों की पकड़ के योग्य थी। इसके अलावा ठंडे कांच से उसके गर्म पेट को राहत मिल रही थी। कम-से-कम इस तस्वीर को, जिसे उसने अपनी समूची काया से ढंक रखा है, वह किसी को भी नहीं ले जाने देगा। वह सिर घुमाकर रिहायशी कमरे की ओर देखने लगा, ताकि लौटती हुई महिलाओं पर निगरानी रख सके।

महिलाओं के पास ज्यादा आराम करने की फुर्सत नहीं थी। वे लौट रही थीं। सहारा देने के लिए ग्रेटे ने मां की कमर में हाथ डाल रखा था। "अब क्या निकाला जाए?" ग्रेटे ने चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए कहा, तभी दीवाल की तस्वीर पर चिपके ग्रेगोर से उसकी आंखें टकराईं। ख़ासतौर से मां की ख़ातिर अपना संतुलन कायम रखने के लिए उसने मां के ऊपर अपना सिर झुका दिया ताकि मां ऊपर न देख सकें और लड़खड़ाते स्वर में कहा, "बेहतर होगा, कुछ समय के लिए हम रिहायशी कमरे में चलें।" ग्रेगोर के लिए बहन के इरादे साफ थे। पहले वह मां को सुरक्षित कर आएगी, फिर ग्रेगोर को दीवाल से भगाएगी। "ठीक है, उसे कोशिश करने दो।" ग्रेगोर ने कहा और तस्वीर से इस कदर चिपक गया कि ज़रूरी हुआ तो वहीं से बहन पर छलांग लगा देगा। ग्रेटे के शब्दों से मां के मन में अव्यक्त-सी बेचैनी होने लगी। वह एक क़दम बग़ल में हटीं और उनकी निगाह, फूलों वाले वालपेपर से चिपके उस विशाल कत्थई जंतु पर टिकी और बिना ये समझे कि यह ग्रेगोर है, उनके मुख से एक भई हुई चीख निकली, "हे ईश्वर। हे ईश्वर!।..." और जैसे प्राणांत हो रहा हो, वह दोनों हाथ फैलाकर सोफे पर गिर पड़ी,

"ग्रेगोर।" उसे घूरती और उस पर मुट्ठियां हिलाती हुई बहन चिल्लाई। कायांतरण के बाद यह पहला मौका था, जब बहन ने उसे सीधे नाम लेकर पुकारा था। फिर वह बग़ल के कमरे से कोई संजीवनी अर्क लेने चली गई, जिससे मां को बेहोशी के दौर से जगाया जाए। ग्रेगोर बहन की मदद करना चाहता था। (तस्वीर से उतरने के लिए काफी वक्त था लेकिन तस्वीर का कांच उससे मज़बूती से जा चिपका था। उससे अलग होने के लिए उसे कोशिश करनी पड़ी। तस्वीर से उतरने के बाद वह अपनी बहन के पीछे बग़ल वाले कमरे में भागा, जैसे हमेशा की तरह बहन को कोई सलाह देना चाहता हो। लेकिन वहां उसे बहन के पीछे असहाय भाव से खड़े रहना पड़ा। तमाम बोतलों के बीच, दवा की तलाश करने के बाद बहन पीछे मुड़ी तो ग्रेगोर को देखकर डर गई। एक बोतल फर्श पर गिरी, फूटी और कांच का एक टुकड़ा उछलकर ग्रेगोर के जबड़े में लगा। इसके साथ ही किसी दवा की बोतल ने उसे भिगो दिया। बिना एक क्षण गंवाए ग्रेटे ने जितनी बोतलें वह ले जा सकती थी, समेटीं और मां के पास दौड़ गई और अपने पीछे पैर से दरवाज़ा बंद करती गई। अब ग्रेगोर अपनी मां से, जो शायद उसके कारण मर रही थी, बिल्कुल कट गया था। इस ख़्याल से कि बहन को मां की तीमारदारी के लिए उनके पास रहना चाहिए, और वह उसे देखकर डर जाएगी, ग्रेगोर को इसलिए खुद दरवाज़ा खोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। अब उसके पास

Scanned with OKEN Scanner

सिवा इसके कोई विकल्प नहीं था कि इंतज़ार करे। और चिंताओं और आत्मधिक्कार से बचने के लिए उसने कमरे की हर चीज़ फर्नीचर, दीवारों और सीलिंग पर चहलकदमी शुरू कर दी। अंत में सारा कमरा उसे अपने चौ-गिर्द घूमता नज़र आने लगा, उसके पैर छूट गए और वह एक बड़ी टेबल के बीचोंबीच आ गिरा।

कुछ देर बाद ग्रेगोर कमज़ोरी महसूस करता हुआ टेबल पर पड़ा था। चारों ओर शांति छाई हुई थी। तभी दरवाज़े की घंटी बजी। नौकरानी किचन में थी, इसलिए बहन को ही किवाड़ खोलने पड़े, आने वाले उसके पिता थे। "क्या हो रहा है?" उनके मुंह से निकले ये उनके पहले शब्द थे। ग्रेटा के चेहरे ने उनसे बहुत कुछ कह दिया था।

"मां बेहोश है, लेकिन अब बेहतर है। ग्रेगोर छूट गया है।..." ग्रेटे ने पिता की छाती में सिर छिपाकर टूटे-फूटे शब्दों में कहा।

"वही हुआ जिसका मुझे डर था, लेकिन उस वक़्त तुम औरतों के कान पर जूं नहीं रेंगी।" ग्रेगोर पर साफ़ था कि पिता ने ग्रेटे के संक्षिप्त से वाक्य को गंभीरतम अर्थों में लिया है। वे ग्रेगोर को किसी हिंसक काम का अपराधी मान रहे थे। अब ग्रेगोर के लिए लाज़िमी था कि वह पिता के मिज़ाज को ठंडा करे। लेकिन ग्रेगोर के पास स्पष्टीकरण देने का न तो कोई माध्यम था, न समय। इसलिए वह सीधा अपने कमरे की ओर भागा और किवाड़ से चिपककर बैठ गया ताकि पिता देख लें कि कैसे उनके आते ही वह अपने कमरे में जा रहा है। उसे हांकने की ज़रूरत नहीं। बस कमरे का दरवाज़ा खोल दिया जाए, वह आप ही अदृश्य हो जाएगा। लेकिन पिता इन बारीकियों को समझने की मनःस्थिति में नहीं थे। "आह" पिता उसे देखते ही चिल्लाए। ग्रेगोर ने पिता को देखने के लिए अपना मुंह उठाया। सचमुच ये वे पिता नहीं थे, जिसकी कल्पना उसने कर रखी थी। सच है कि हाल के दिनों में ग्रेगोर सीलिंग पर रेंगने के खेल में काफी मज़ा लेता रहा है और परिवार को भूला रहा है। उसे कुछ परिवर्तनों के लिए तैयार रहना वही चाहिए था। लेकिन फिर भी।...फिर भी क्या ये उसी के पिता थे...वही व्यक्ति जो, जब भी वह व्यापारिक यात्राओं पर जाता था, बेचैनी से बिस्तर में दुबके रहते थे और रात को उसके लौटने पर, गाउन पहने, कुर्सी पर लेटे, (क्योंकि वह खड़े नहीं हो सकते थे,) हाथ उठाकर उसका स्वागत करते थे। और जब कभी छुट्टियों में सपरिवार बाहर जाते तो हमेशा ग्रेगोर और उसकी मां के बीच में रहकर छड़ी के सहारे धीरे-धीरे चलते थे।

और अब पिता एक बिलकुल नए और स्वस्थ व्यक्ति के रूप में उसके सामने खड़े हुए थे। उन्होंने सुनहले बटनों वाली नीली वर्दी पहन रखी थी, जैसी कि बैंक के मैसेंजर पहनते हैं। उनका सख़्त दाढ़ी में गढ़े वाला जबड़ा, जाकेट के कलफदार कॉलर पर लटक रहा था। उनकी घनी भौंहों वाली आंखों में चमक और पैनापन था। उनके हमेशा उलझे रहने वाले सफेद बाल, नफ़ासत से बीचोंबीच से मांग निकालकर संवारे हुए थे। उन्होंने अपनी टोपी को, जिस पर किसी बैंक का मोनोग्राम लगा हुआ था, सारे कमरे को लांघते हुए सोफे पर फेंका और दोनों दोनों हाथ पैंट की जेबों में दिए, गंभीर चेहरा बनाए धीरे-धीरे ग्रेगोर की ओर बढ़ने लगे। शायद वे ख़ुद नहीं समझ पा रहे
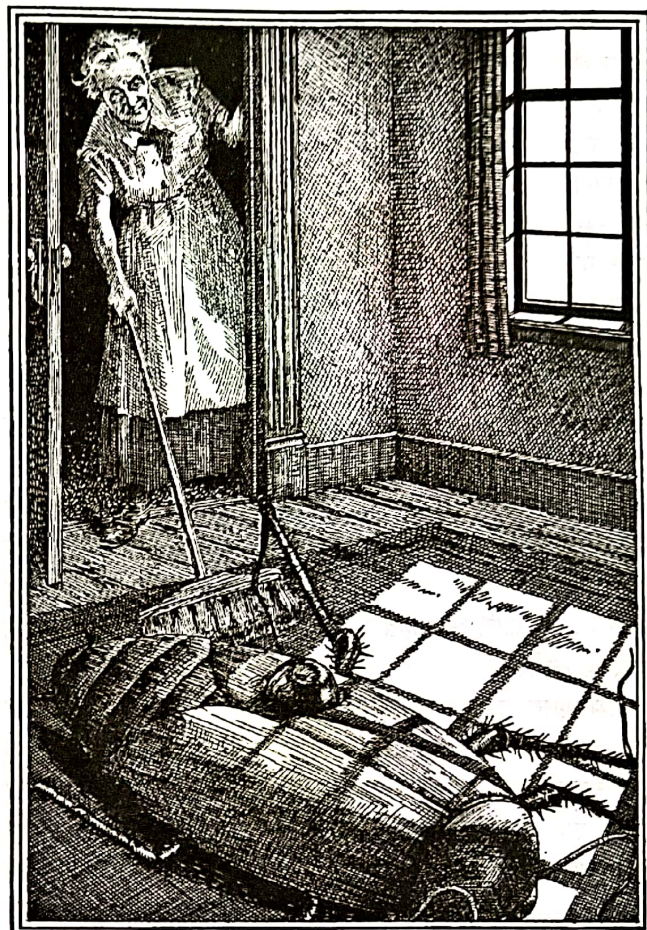
थे कि उसके साथ क्या करने जा रहे हैं, जो भी हो उन्होंने अपना एक पैर असाधारण ऊंचाई तक उठाया और ग्रेगोर उनके जूते का विशाल सोल देखकर दंग रह गया। ग्रेगोर ने उनके सामने खड़े रहने का जोख़िम नहीं उठाया। उसे पहले ही पता चल गया था कि वे उसके साथ सख़्त से सख़्त व्यवहार के पक्ष में हैं। इसलिए उसने उनके सामने से भागना शुरू कर दिया। जब पिता रुकते तो वह रुकता, जब वे चलते तो वह चलने लगता। इस तरह बिना कुछ निर्णयात्मक घटे, उन्होंने कमरे के कई चक्कर लगाए। इस प्रक्रिया को पीछा करना नहीं कहा जा सकता क्योंकि दोनों की गति काफी धीमी थी। ग्रेगोर मैदान छोड़कर इसलिए नहीं भागा क्योंकि पिता उसके दीवाल या सीलिंग पर जा चढ़ने को उसकी दुष्टता का सबूत मानते। इसके साथ ही वह पिता के आगे-आगे भागने को भी ज्यादा देर तक नहीं चला सकता था क्योंकि जब पिता उसकी ओर एक पैर बढ़ाते तो उसे एक साथ कई पैरों को सक्रिय करना पड़ता था। उसकी सांस फूलने लगी थी। यों भी उसके फेफड़े कभी ज्यादा मज़बूत नहीं रहे। उसकी आंखें अधखुली थीं और उसकी सारी शक्ति भागने में लगी हुई थी। यहां तक कि पिता के आगे भागने के अलावा वह बचाव के सारे विकल्प भूल चुका था, जबकि वह अगल-बगल की दीवारों पर चढ़ सकता था, जो सुंदर फर्नीचर और खूटियों से सजी हुई थीं। तभी उसके पीछे कोई चीज़

Scanned with OKEN Scanner

गिरी और उसके आगे तक लुढ़कती गई। यह एक सेब था। इसके बाद दूसरा सेब। ग्रेगोर डरकर रुक गया। भागने में कोई फायदा नहीं था क्योंकि पिता तुले हुए थे। उन्होंने तश्तरी के फलों को अपनी जेबों में भर लिया था और उस पर एक के बाद एक सेबों की बौछार कर रहे थे। हालांकि उनका निशाना ठीक नहीं था। हल्के से फेंका गया एक सेब उसकी पीठ में लगा और बिना चोट पहुंचाए छिटक गया। लेकिन दूसरा पीठ के बीचोंबीच लगा और वहीं धंस गया। ग्रेगोर ने भागने की कोशिश की, जैसे इससे उसका असह्य दर्द वहीं छूट जाएगा। लेकिन उसे लगा जैसे वह उसी जगह कीलित हो गया और होशो हवास खोकर वहीं पसर गया। होश खोते-खोते उसने देखा कि उसके कमरे का दरवाज़ा खुला और मां चीख़ती हुई उसकी ओर आ रही हैं। उनके पीछे बहन। वह सिर्फ बॉडिस पहने हुए थीं। वह जल्द स्वस्थ हो सकें, इसलिए बहन ने उनके कपड़े उतार दिए थे। उसने देखा कि उसकी मां एक के बाद एक पेटीकोटों को फर्श पर छोड़ती और उन्हें रौंदती हुई सीधे पिता की ओर भागीं और उनकी गर्दन बाहुओं में जकड़कर अपने बेटे के प्राणों की भीख मांगने लगीं। और यहीं ग्रेगोर की दृष्टि धुंधलाने लगी।

उस भीषण चोट, जिसने ग्रेगोर को महीने भर के लिए अपाहिज कर दिया था, (उस की पीठ में सेब उसी तरह धंसा था, क्योंकि किसी ने उसे निकालने की हिम्मत नहीं की) ने जैसे पिता को स्मरण करा दिया था कि ग्रेगोर भी उनके परिवार का एक सदस्य है। उसके दुर्भाग्य और घृणित शक्ल के कारण उससे शत्रुओं जैसा व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। इसके विपरीत उनका कर्त्तव्य होता था कि अपने क्षोभ को दबाकर रखें और धैर्य से काम लें। कुछ नहीं, बस धैर्य!

हालांकि ग्रेगोर का घाव (शायद हमेशा के लिए) भर गया था। उसके हिलने-डुलने की शक्ति कम हो गई थी। अब किसी अपाहिज की तरह उसे कमरे का फ़र्श पार करने में कई-कई लंबे मिनट लग जाते थे। (दीवारों पर चढ़ने का सवाल ही नहीं था।) लेकिन उसके अपने ख़्याल से, इसकी क्षतिपूर्ति दूसरे रूप में हो गई थी। शाम के वक़्त रिहायशी कमरे की तरफ वाला दरवाज़ा हमेशा के लिए खोल दिया गया था। ताकि वह अपने कमरे से, सबसे अदृश्य रहकर, लैंप की रोशनी में सबको देख सके और उनकी बातें सुन सके।

हालांकि अब उनकी बातचीत में पिछले समय वाली जीवंतता नहीं होती थी और वे ज्यादातर शांत रहते थे। भोजन के बाद पिता अपनी आरामकुर्सी पर सो जाते थे। मां और बहन एक-दूसरे को शांत रहने की हिदायतें देने लगती थीं। बीच में जब पिता की नींद खुलती तो जैसे इससे बिल्कुल अनजान कि अभी तक सो रहे थे, वे मां से कहते, "आज तुम कितनी सिलाई कर रही हो?" और फिर गहरी नींद में डूब जाते। एक-दूसरे की ओर देखती हुई मां-बेटी के होठों पर थकी हुई मुस्कान खेल जाती।

पिता अब पूरी दृढ़ता के साथ घर में भी अपनी वर्दी पहने रहने लगे थे। उनका गाउन व्यर्थ-सा खूंटी पर लटकता रहता। वे जहां भी बैठते, वहीं अपनी वर्दी में सो जाते, कुछ इस तरह जैसे अफसर के ज़रा से संकेत पर हर क्षण सेवा को तैयार हों। इसका परिणाम यह हुआ कि उनकी वर्दी, जो काफी पुरानी थी, मां और बहन के सारे प्रयत्नों के बावजूद गंदी दिखने लगी। कभी-कभी ग्रेगोर उनकी वर्दी में पड़े चिकनाई के धब्बों और चमचमाते हुए सुनहले बटनों को देखने में अपनी सारी शाम गुज़ार देता। इस वर्दी को पहने हुए उसके पिता बड़ी असुविधा, लेकिन पूरी शांति के साथ बैठे-बैठे सो जाते। जैसे ही रात के दस बजते, मां पिता को कोमल शब्दों में जगातीं और बिस्तर पर सोने का आग्रह करतीं क्योंकि वहां बैठे-बैठे वे पर्याप्त नींद नहीं ले सकेंगे, जिसकी उन्हें सबसे ज्यादा ज़रूरत है। सुबह छह बजे उन्हें काम पर जाना है। मां या बहन कितना भी आग्रह करतीं, वह पंद्रह मिनट तक आंखें मूंदे और सिर हिलाते हुए इंकार करते रहते। मां उन्हें बाहुओं से पकड़ कर उनके कान में प्रेम भरे संबोधन दोहराती, बहन अपनी किताब छोड़कर मां की सहायता के लिए दौड़ी आती, लेकिन पिता पर कोई असर नहीं पड़ता। इसके विपरीत वे कुर्सी में और भी धंस जाते। जब तक दोनों महिलाएं उन्हें कंधों से नहीं उठातीं, वे अपनी आंखें नहीं खोलते। फिर वे बारी-बारी दोनों को देखते और बड़बड़ाते, "ये मेरी ज़िदगी है। ये मेरे बुढ़ापे की शांति और विश्रांति है?" और दोनों महिलाओं के कंधों पर झूमते हुए अपने को घसीटने लगते। जैसे ख़ुद पर ही असह्य बोझ हों। बहन और मां उन्हें उनके कमरे के दरवाज़े तक पहुंचातीं। इसके बाद वे उन्हें विदा करते और अकेले बढ़ जाते।

अपनी क्षमताओं से अधिक मेहनत करने वाले इस परिवार में किसके पास समय था कि ग्रेगोर की विशेष देखभाल कर सके? इसके अलावा परिवार सिकुड़ने लगा था। पिछली नौकरानी को निकाल दिया गया था। उसकी जगह एक सफ़ेद हड्डी और विशाल काया वाली नौकरानी, सुबह-शाम, छोटा-मोटा काम करने के लिए आने लगी थी। बाकी सारा काम मां करती थीं। (सिलाई के ढेर से काम के अलावा) घर की माली हालत यह हो गई थी कि पारिवारिक आभूषण, जिन्हें उसकी मां और बहन पार्टियों और उत्सवों में सगर्व पहनती थीं, बिक चुके थे। इसकी सूचना ग्रेगोर को उसी शाम, उनसे मिलने वाली कीमत की चर्चा से मिली थी। लेकिन इससे भी ज्यादा अफ़सोस उन्हें इस बात का था कि इस हाल में भी वे अपने फ्लैट को, जो उनकी ज़रूरतों के हिसाब से बहुत बड़ा था, नहीं छोड़ सकते थे क्योंकि ग्रेगोर को साथ ले जाने का कोई तरीका उन्हें नहीं सूझ रहा था। यों ग्रेगोर पर साफ था कि सिर्फ यही ख़्याल फ्लैट बदलने में बाधक नहीं, क्योंकि उसे छेदोंदार बक्से में बंद कर आसानी से ले जाया जा सकता था। जो उन्हें फ्लैट बदलने से रोक रहा था, वह शायद उनकी अपनी हताशा और ये विश्वास था कि उनके साथ जैसा दुर्भाग्य घटित हुआ, वैसा उनके किसी रिश्तेदार या परिचित के साथ नहीं हुआ। यों वे वह सब करते थे, जो संसार ग़रीबों से कराता है। उसके पिता बैंक में क्लर्कों का खाना ले जाने वाले मुलाज़िम हो गए थे। उसकी मां अपरिचित ग्राहकों के लिए अंडरवियर सिलती थीं, और बहन को ग्राहकों की मांग पर दिन भर काउंटर के आगे-पीछे दौड़ना पड़ता था।

उस दिन ग्रेगोर की पीठ का ज़ख़्म फिर हरा हो उठा, जब उसने देखा कि उसकी मां और बहन पिता को सुलाकर वापस आईं और

Scanned with OKEN Scanner

अपना काम छोड़कर एक-दूसरे से सटकर बैठ गई। मां ने उंगली से कमरे की ओर संकेत करते हुए कहा, "ग्रेटे! दरवाज़ा बंद कर दो।" दरवाज़ा बंद हुआ और ग्रेगोर अंधेरे में छूट गया था। जबकि बाहर दोनों महिलाएं या तो रो रही थीं, या सूनी-सूनी आंखों से टेबल को देख रही थीं।

रात हो या दिन, ग्रेगोर को अब शायद ही कभी नींद आती थी। वह अक्सर एक दिवास्वप्न देखने लगा था कि अगली बार दरवाज़ा खुलते ही वह पहले की तरह घर की कमान अपने हाथ में ले लेगा। काम से अपनी लंबी अनुपस्थिति पर उसके ज़ेहन में कंपनी के चीफ, हेड क्लर्क, कंपनी के एजेंट, नए रंगरूट और चपरासियों की शक्लें उभरतीं, लेकिन उसकी मदद के मामले में सब उदासीन। इसलिए जब उसका दिवास्वप्न टूट जाता, उसे प्रसन्नता होती। कभी-कभी वह परिवार की चिंता भूलकर, इस पर उत्तेजित हो उठता कि परिजन अब उसकी उपेक्षा करने लगे हैं। अब उसकी बहन उसकी पसंद का खाना लाने की चिंता नहीं करती थी, बल्कि सुबह और दोपहर को जो भी खाने से बचता, उसके आगे सरका जाती और काम पर चली जाती थी। शाम को कमरे में सिर्फ एक बार झाड़ू लगाने आती थी, इससे बेख़बर कि खाना उसने छुआ या नहीं, या जैसाकि अक्सर होता था, खाना अनछुआ ही पड़ा रहता था। शाम को वह कमरे की सफाई जिस जल्दबाज़ी से करती थी, उससे बड़ी कोई जल्दबाज़ी नहीं हो सकती। सफाई के बावजूद दीवारों पर धूल की लंबी लकीरें खिंची होतीं, सारे कमरे में यहां-वहां कूड़े के ढेर लगे होते। शुरू में, जब बहन कमरे में आती थी, ग्रेगोर उसे किसी विशेष गंदे कोने में बैठा मिलता ताकि वह बहन को लज्जित कर सके। लेकिन अगर वह वहां नहीं ही बैठता तो भी बहन के लिए कोई फर्क नहीं पड़ता। ग्रेगोर की तरह वह भी कमरे की धूल और गंदगी को देख सकती थी, लेकिन उससे कोई छेड़छाड़ करना उचित नहीं समझती थी। फिर भी उसे अपने अंतर में एक नई और कोमल अनुभूति हुई। उसे ख़्याल आया कि वह ग्रेगोर के कमरे की अकेली संरक्षिका है और वह इसकी ईर्ष्यापूर्वक रक्षा करेगी। एक बार मां ने बाल्टियों पानी से ग्रेगोर का कमरा पूरा साफ़ कर दिया (इससे ग्रेगोर खुद बहुत क्षुब्ध हुआ और सारे दिन सोफे पर पड़ा रहा।) और इसके बदले मां को भली-भांति दंडित होना पड़ा। जैसे ही शाम को बहन ने ग्रेगोर के कमरे की बदली हुई हालत देखी, वह गुस्से से भरी रिहायशी कमरे में आई और मां के क्षमा-याचना की मुद्रा में जुड़े हुए हाथों के बावजूद, फुसक-फुसककर रोने लगी। जबकि उसके मां-बाप (पिता इस बीच घबड़ाकर उठ खड़े हुए थे) उसे असहाय विस्मय से देख रहे थे। पहले उन्होंने मां की भर्त्सना इस आधार पर की कि आखिर ग्रेगोर के कमरे की सफाई का अधिकार उन्हें किसने दिया था। इसके बाद वे अपने बाएं खड़ी बहन पर चीख़े कि आगे उसे कभी भी ग्रेगोर का कमरा साफ करने की इजाज़त नहीं दी जाएगी। मां उन्हें उनके सोने के कमरे में ले जाने की कोशिश कर रही थी, क्योंकि वे गुस्से से पागल हो रहे थे। बहन की हिचकियां बंध गई थीं और अब वह अपनी दोनों मुट्ठियों से मेज़ ठोंक रही थी। जहां तक ग्रेगोर का सवाल है, वह ज़ोर-ज़ोर से फूंस रहा था, क्योंकि

एक दिन अलस्सुबह (जब खिड़की के कांचों पर बारिश गिर रही थी, एक संकेत कि बसंत आ रहा है) जब उसने ग्रेगोर को इसी संबोधन से पुकारा तो ग्रेगोर उत्तेजित हो उठा और उसकी ओर ऐसे झपटा जैसे हमला करने आ रहा हो। हालांकि कमज़ोरी से धीरे-धीरे दौड़ते हुए। लेकिन नौकरानी ने बजाय भागने के किवाड़ के पास पड़ी कुर्सी को उठा लिया। जिस तरह से मुंह बाए वह खड़ी थी, उससे स्पष्ट था कि अपना मुंह वह तभी बंद करेगी, जब हाथ की कुर्सी को ग्रेगोर की पीठ पर दे मारेगी।

कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ था और वह सब कुछ देख सकता था।

हालांकि दिन भर के काम से थकी-हारी बहन, ग्रेगोर की पहले की तरह चिंता करने से ऊब चुकी थी।. मां हो या ग्रेगोर, उनके लिए शिकायत रखने का कोई औचित्य नहीं बनता था। इसके लिए नई नौकरानी तैनात कर दी गई थी। वह मज़बूत हड्डियों वाली विधवा, जो जीवन की कठोरतम विपदाओं से गुज़र चुकी थी। हालांकि उसका मन भी ग्रेगोर से दूर भागता था, एक बार संयोग से उसने ग्रेगोर के कमरे के किवाड़ खोले। ग्रेगोर पर नज़र पड़ते ही उसने भौंचक होकर आगे-पीछे भागना शुरू कर दिया, जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो। उतनी देर नौकरानी वहीं हाथ बांधे खड़ी रही। तब से हर सुबह-शाम, वह ग्रेगोर पर एक नज़र डालना नहीं भूलती थी। शुरू में वह उसे कुछ शब्द कहकर, जिन्हें वह दोस्ताना समझती थी, बुलाती थी, "गू के बूढ़े गुरबीले! इधर आओ" या "गू के गुरबीले को तो देखो।" ऐसे संबोधनों पर ग्रेगोर कोई प्रतिक्रिया नहीं करता था। इस तरह बेजुंबिश खड़ा रहता था, मानो दरवाज़ा खोला ही न गया हो।

एक दिन अलस्सुबह (जब खिड़की के कांचों पर बारिश गिर रही थी, एक संकेत कि बसंत आ रहा है) जब उसने ग्रेगोर को इसी संबोधन से पुकारा तो ग्रेगोर उत्तेजित हो उठा और उसकी ओर ऐसे झपटा जैसे हमला करने आ रहा हो। हालांकि कमज़ोरी से धीरे-धीरे दौड़ते हुए। लेकिन नौकरानी ने बजाय भागने के किवाड़ के पास पड़ी कुर्सी को उठा लिया। जिस तरह से मुंह बाए वह खड़ी थी, उससे स्पष्ट था कि अपना मुंह वह तभी बंद करेगी, जब हाथ की कुर्सी को ग्रेगोर की पीठ पर दे मारेगी।

"तो अब तुम नहीं आ रहे हो," ग्रेगोर को मुड़ता देखकर उसने पूछा और शांतिपूर्वक कुर्सी को नीचे रख दिया।

अब ग्रेगोर बमुश्किल कभी कुछ खाता था। जब वह अपने लिए रखे खाने के पास से गुज़रता तो मनोरंजन के रूप में मुंह से कोई टुकड़ा उठा लेता। घंटे भर मुंह में रखे चूसता रहता, फिर थूक देता। पहले उसकी धारणा थी कि भूख न लगने का कारण कमरे की हालत में किया गया परिवर्तन है। लेकिन जल्द ही वह कमरे के बदलाव का

Scanned with OKEN Scanner

आदी हो गया। इधर परिवार की आदत हो गई थी कि जिस सामान के लिए फ्लैट में कहीं जगह न होती, उसे ग्रेगोर के कमरे में फेंक दिया जाता और अब जबकि फ्लैट का एक कमरा तीन लोगों को किराए पर उठाया जा चुका था, ग्रेगोर के कमरे में ऐसे सामानों की भरमार हो गई।

तीनों गंभीर नौजवान (तीनों ने दाढ़ियां बढ़ाई हुई थीं, ग्रेगोर ने किवाड़ की संधि से देखा था।) व्यवस्था के ज़बर्दस्त प्रेमी थे। केवल उनका कमरा व्यवस्थित रहना चाहिए, बल्कि (चूंकि वह उस घर के सदस्य हो चुके थे) सारा घर, ख़ासतौर से किचन व्यवस्थित रहना चाहिए। वे गंदी या फालतू चीज़ों को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। वे अपने साथ कमरे की सजावट का सारा सामान लाए थे, लिहाज़ा उनके कमरे का बहुत-सा सामान, जिसे न फेंका जा सकता था न बेचा, स्वतः ग्रेगोर के कमरे में आ गया। इसी तरह राख और रसोई के कचरे की बाल्टियां भी। कोई भी चीज़ जिसकी बाहर ज़रूरत नहीं होती थी, (नौकरानी द्वारा, जो हर काम जल्दबाज़ी में करती थी) ग्रेगोर के कमरे में फेंक दी जाती थीं। सौभाग्य से ग्रेगोर सामान और उसे फेंके जाने वाले हाथों को देखता था। कोई भी सामान कमरे में जहां गिरता था, वहीं पड़ा रहता था। उस जगह के अलावा, जो ग्रेगोर बड़ी मशक्कत से अपने लिए बना लेता था। हालांकि इस मशक्कत के बाद ग्रेगोर बुरी तरह थका और उदास हो जाता था और अपनी जगह पर घंटों बेहरकत पड़ा रहता था।

चूंकि किरायेदार दोपहर का भोजन रिहायशी कमरे में ही करते थे, उतने समय ग्रेगोर का कमरा बंद रहता था। ग्रेगोर इस हालत का जल्द आदी हो गया, क्योंकि जब शाम को दरवाज़ा खुलता तो वह उस ओर कोई ध्यान न देता। और वह सबके लिए अदृश्य, कमरे के सबसे अंधेरे कोने में पड़ा रहता।

लेकिन एक बार नौकरानी भूल से कमरे को थोड़ा-सा खुला छोड़ गई। दरवाज़ा तब तक अधखुला रहा, जब शाम को किरायेदार भोजन को आए और लैंप जलाया। वे खाने की मेज़ के सिर पर बैठे थे, जहां बैठकर कभी ग्रेगोर अपने मां-बाप के साथ भोजन करता था। उन्होंने अपने नेपकिन खोले और हाथों में छुरी-कांटे उठा लिए। इसके साथ ही मां गोश्त की और पीछे बहन आलू की डिश लिए प्रकट हुईं। खाने से गर्म भाप उठ रही थी। तीनों किरायेदार तश्तरियों पर कुछ इस तरह झुके, जैसे खाने के पहले उसका मुआयना कर रहे हों। बीच में बैठे व्यक्ति ने, जो शेष दोनों पर अधिकार रखता था, तश्तरी से गोश्त का एक टुकड़ा काटा, साफ तौर से यह देखने के लिए कि उसे खाया जाए या रसोई में वापस भेज दिया जाए। वह संतुष्ट दिखा। इस पर ग्रेगोर की मां और बहन ने, जो बेचैनी से उसकी तरफ देख रही थीं, राहत की सांस ली, और मुस्कुराने लगीं।

अब ग्रेगोर का परिवार अपना खाना रसोई में खाता था। इसके बावजूद पिता अदब से सिर झुकाए रिहायशी कमरे में आए। उन्होंने हाथ में टोपी लेकर टेबल का एक चक्कर लगाया, जिससे तीनों किरायेदार अकबकाकर उठ खड़े हुए और आपस में फुसफुसाकर बातें करने लगे। पिता के जाने के बाद उन्होंने निहायत शांतिपूर्वक खाना खाया। खाने की टेबल से आती तमाम आवाज़ों के बीच जो आवाज ग्रेगोर को सबसे साफ सुन पड़ती थी, वह थी उनके दांतों की किटकिटाहट। ग्रेगोर की समझ में आया कि खाने के लिए दांतों की कितनी जरूरत होती है। दांत नहीं तो स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन किस काम का "मुझे भयंकर भूख लगी है," ग्रेगोर ने दुख के साथ ख़ुद से कहा, "उनके जैसे भोजन की नहीं। किरायेदार कितने मज़े से भरपेट खा रहे हैं और यहां मैं भूख से मरा जा रहा हूं।"

तभी किचन से वायलिन के सुर आने लगे। (इस सारे वक्त ग्रेगोर को कभी वायलिन सुनना याद नहीं आया।) किरायेदार भोजन समाप्त कर चुके थे। बीच वाला अपने कमरे से अख़बार उठा लाया था। उसने एक-एक पन्ना शेष दोनों को थमाया और तीनों सिगरेट पीते और कुर्सियों की दो टांगों पर आगे-पीछे झूलते हुए पढ़ने लगे। वायलिन की आवाज़ से किरायेदारों के कान खड़े हो गए और तीनों पंजों के बल चलते हुए हॉल के दरवाज़े से सटकर खड़े हो गए। उनकी आवाज़े किचन तक जा पहुंची क्योंकि ग्रेगोर के पिता ने कहा, "महाशयों! क्या वायलिन से आपके अख़बार पढ़ने में बाधा पहुंच रही है। यदि ऐसा है तो इसे तुरंत बंद कराया जा सकता है।"

"इसके विपरीत क्यों नहीं कुमारी सेम्सा इसी कमरे में आतीं। यहां ज्यादा सुविधाजनक होगा।"

"बिलकुल! बिलकुल!" ग्रेगोर के पिता ने इस तरह चिल्लाकर कहा, जैसे वायलिन ख़ुद उन्हें बजाना हो।

किरायेदार आकर इंतज़ार करने लगे। फिर मां हाथ में संगीत की पुस्तक, पिता म्यूजिक स्टैंड और बहन वायलिन लिए प्रकट हुए। इसके पहले उसके पिता ने किसी को फ्लैट का कमरा किराए पर नहीं दिया था, लेकिन बहन ने शुरू का सारा इंतज़ाम कर लिया। शिष्टता के अतिरेक में उसके मां-बाप कुर्सियों पर बैठने का साहस नहीं कर पा रहे थे। अंत में एक किरायेदार ने मां से आग्रह किया। वह एक कोने में बैठ गई।

बहन ने बजाना शुरू किया। उसके मां और पिता ग़ौर से उसकी उंगलियों की हरकत देखने लगे। वायलिन के स्वर से आकर्षित होकर ग्रेगोर दरवाज़े तक आ पहुंचा और सिर निकालकर देखने लगा। "लोग उसकी हद से ज्यादा उपेक्षा करने लगे हैं," उसने सोचा। ग्रेगोर को उनकी बढ़ती हुई जड़ता पर आश्चर्य नहीं हुआ। एक वक्त वह भी था, जब ग्रेगोर को इस पर गर्व होता था कि वह अपने परिवार की किस कदर चिंता करता है। लेकिन इस वक़्त उसे सबकी निगाहों से छिपकर रहने की सबसे ज्यादा ज़रूरत थी। उसके कमरे में ज़रा सी हरकत से धूल के बगूले उठते थे, और इस वक्त वह धूल की मोटी पर्त से ढंका हुआ था। उसके भोजन के रेशे, जूठन और बाल, उसकी देह से चिपक उसे पीछे घसीट रहे थे। इसके बावजूद उसे उनके कमरे के धुले पुछे फर्श पर चलने में संकोच नहीं हो रहा था। वह इस कदर उत्तेजना से भरा हुआ था।

सब लोग वायलिन की धुनों में डूबे थे। उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया। किरायेदार स्क्रिप्ट पढ़ने के लिए ठीक म्यूजिक स्टैंड के पीछे आ खड़े हुए थे। (जिससे बहन को दिक्कत हो रही

Scanned with OKEN Scanner

होगी।) किरायेदार जल्द ही सिर झुकाए, फुसफुसाकर बातें करते हुए खिड़की के पास जा खड़े हुए। पिता बेचैनी से उनकी ओर देखने लगे। किरायेदारों ने स्पष्ट कर दिया था कि सिर्फ शिष्टाचार के नाते वे बहन का वायलिन सुनते रहे। जिस तरह नाक और मुंह से वे अपने सिगार का धुआं निकाल रहे थे, उससे पता चलता था कि वे अत्यंत क्षुब्ध हैं, जबकि बहन संगीत के सुंदर टुकड़े बजा रही थी। बहन का सिर एक ओर झुका था। उसकी आंखों में वायलिन की धुन का दर्दीला भाव था। ग्रेगोर ने थोड़ा-सा और रेंगकर अपना सिर ऊपर किया ताकि उसकी आंखें बहन की आंखों से जा मिलें। वह पूछना चाहता था कि क्या संगीत से इतना अभिभूत होने के बाद भी मैं महज एक कीड़ा हूं? ग्रेगोर को लगा कि उसे पता चल गया है कि उसकी आत्मा को कैसे पोषण की ज़रूरत है।

- उसने तय कर लिया था कि वह बहन के पास जाकर मुंह से उसकी स्कर्ट खींचेगा ताकि वह समझ ले कि वह उसे मय वायलिन के अपने कमरे में ले जाना चाहता है, क्योंकि वह उसके वायलिन की जितनी प्रशंसा करेगा, उतनी यहां कोई नहीं कर सकता। वह अपनी बहन को अपने कमरे से नहीं निकलने देगा, कम-से-कम तब तक तो नहीं, जब तक वह जीवित है। जीवन में पहली बार उसकी डरावनी शक्ल उसके लिए उपयोगी होगी। वह सारे दरवाज़ों की चौकसी करेगा और जो भी आएगा, उसे फूंसकर भगा दिया करेगा। लेकिन इसमें बहन को कोई जबर्दस्ती नहीं महसूस होनी चाहिए। उसकी आकांक्षा थी कि उसके बगल में सोफे पर बैठकर बहन गंभीरता से उसकी बात सुने। वह उसे बताना चाहता था कि उसे कंजरवेटोरियम भेजने का उसका दृढ़ संकल्प था, कि उसके साथ यह दुर्घटना हो गई। वर्ना पिछले क्रिसमस के दौरान (जिसे गुज़रे ज्यादा दिन नहीं हुए,) बिना किसी के एतराज़ पर कान दिए, उसने यह घोषणा कर दी होती। उसकी बात सुनकर बहन इतनी द्रवित हो जाएगी, (ग्रेगोर ने कल्पना की) कि उसकी आंखों से आंसू बह निकलेंगे और वह स्नेह से उसकी गर्दन को चूम लेगा।

महाशय सेम्सा! बीच वाला किरायेदार उसके पिता पर चीख़ रहा था। उसने बिना एक शब्द फालतू ख़र्च किए, ग्रेगोर की ओर संकेत किया, जो आहिस्ता-आहिस्ता उनकी ओर बढ़ रहा था। सहसा वायलिन बजना बंद हो गया। बीच वाला पहले सिर हिलाकर अपने दोनों दोस्तों की ओर देखकर मुस्कुराया, फिर दिलचस्पी से ग्रेगोर को देखने लगा। ग्रेगोर के पिता को, ग्रेगोर को भगाने के बजाय किराएदारों को शांत करना ज़रूरी लगा। (हालांकि किराएदार कतई उत्तेजित नहीं थे और ज़ाहिर तौर पर वायलिन की अपेक्षा ग्रेगोर को ज्यादा मनोरंजक मान रहे थे।) पिता हाथ फैला कर ग्रेगोर को उनकी नज़रों से ढंकने और उससे अपने कमरे में जाने का आग्रह कर रहे थे। अब किरायेदारों को वाकई गुस्सा आने लगा था। कहना मुश्किल है कि पिता के व्यवहार पर या इस ख़्याल पर कि अब तक, अनजाने में वे कैसे पड़ोसी के साथ रहते रहे हैं। वे पिता से जवाब-तलब कर रहे थे और बड़ी मुश्किल में अपने कमरे में जाने को तैयार हुए। इस बीच ग्रेटे, जो अभी तक खोई-खोई खड़ी थी, हरकत में आई। उसने हाथ

का वायलिन मां की गोद में फेंका और किरायेदारों के कमरे की ओर भागी। उसने फुर्ती से बिस्तर की तकियों और चादरों को व्यवस्थित किया और किरायेदारों के लौटने के पहले कमरे से बाहर निकल आई।

अब पिता शिष्टाचार भूलकर किरायेदारों को उनके कमरे की तरफ़ हांक रहे थे। दरवाज़े पर पहुंचकर बीच वाले ने ज़मीन पर पैर ठोंककर कहा, "मैं इस मकान और इसमें मौजूद परिस्थितियों के कारण," उसने मां और बहन की ओर देखकर कहा, "आपको यहीं नोटिस देता हूं," उसने फर्श पर थूका, "हम लोग जितने दिन यहां रहे हैं, उसके किराए की एक कौड़ी भी अदा नहीं करेंगे। इसके अलावा हमारा जो नुकसान हुआ है, उसकी नालिश पर भी गौर करेंगे।"

"हम दोनों भी इसी वक़्त नोटिस देते हैं," उसके दोनों साथियों ने कहा और कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया।

ग्रेगोर के पिता लड़खड़ाकर कुर्सी पर गिर पड़े। ग्रेगोर अपनी जगह स्तंभित खड़ा था। हताशा और सतत भूख से पैदा होने वाली दुर्बलता ने उसका हिलना-डुलना असंभव कर दिया था। उसे भय हुआ कि अब परिवार का तनाव किसी भी क्षण एक समवेत गुस्से के रूप में उसके ऊपर फट पड़ेगा।

"मेरे प्यारे पिता और मां," बहन ने टेबल ठोंकते हुए आवेश से कहा, "घर इस तरह नहीं चल सकता। शायद आप इस बात को महसूस नहीं कर पाते, लेकिन मैं कर सकती हूं। अपने भाई का नाम मैं इस कीड़े के सामने नहीं लूंगी। सिर्फ इतना कहूंगी कि अब

Scanned with OKEN Scanner

हमें इससे छुटकारा पाना चाहिए। हमने बहुत बर्दाश्त किया। मैं नहीं मानती कि इसके लिए कोई हमें दोष दे सकता है।"

"लड़की सच कहती है," पिता ने कहा। मां, जो अब तक सांस लेने में दिक्कत महसूस कर रही थी, मुंह के आगे हथेली लगाकर खांसने लगी। उनकी आंखों में वहशी भाव उभर रहा था।

ग्रेटे ने मां का सिर थाम लिया। ग्रेटे की बात से पिता के विचारों की धुंध साफ होने लगी। वे टोपी सहलाते हुए ग्रेगोर को, जो अभी तक स्तंभित खड़ा था, अजीब भाव से देखने लगे।

"अब हमें इससे छुट्टी पानी चाहिए," बहन ने स्पष्ट शब्दों में दोहराया। मां अब भी खांस रही थी और खांसने के कारण कुछ भी सुनने में असमर्थ थी। "इसके कारण आप दोनों की मौत भी हो सकती है। मैं साफ-साफ देख सकती हूं। लगातार मेहनत करने के बाद भी सारे घर को यह यातना। कम-से-कम मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकती," और उसने सुबक-सुबककर रोना शुरू कर दिया।

"मेरी प्यारी बेटी! लेकिन हम क्या कर सकते हैं?" पिता ने अपनी बेबसी दर्शाने के लिए अपने कंधे झटके। "काश! यह हमारी बात समझ सकता।"

ग्रेटे ने, जो अभी तक सुबक रही थी, असहमति से हाथ हिलाए, "अगर ये हमारी बात समझ सकता तो हम इसके साथ कोई समझौता कर लेते, लेकिन इस हालत में।..."

"इसे जाना ही होगा," बहन चिल्लाई।" सिर्फ यही एक रास्ता है। आपको सिर्फ अपने दिमाग़ से यह बात निकाल देनी है कि ये ग्रेगोर है। हमारी सारी मुसीबतों की जड़ यही है। ये ग्रेगोर कैसे हो सकता है? अगर होता तो बहुत पहले समझ गया होता कि मनुष्य और कीड़ा एक साथ नहीं रह सकते और खुद ही घर छोड़कर चला गया होता। तब हम इसकी स्मृति का सम्मान करते। लेकिन हाल यह है कि इसने हमारा जीना दूभर कर दिया है। ये हमारे किरायेदारों को बिचकाता है और सारा घर सिर्फ अपने लिए चाहता है, चाहे हमें नाली में सोना पड़े। अब फिर देखो।.." बहन चीख़ी और पिता के पीछे जा छिपी।

लेकिन ग्रेगोर की किसी को डराने की इच्छा नहीं थी। वह महज़ अपने कमरे में जाने के लिए मुड़ा था, जो वास्तव में वीभत्स था। उसने रुककर चारों ओर देखा। लगा वे उसके नेक इरादे को समझते हैं। अब वे उसे चुप्पी के साथ देख रहे थे।

मि. सेम्सा और उनकी पत्नी अपने डबलबेड पर डर गए। नौकरानी की सूचना के बाद उन्हें उस धक्के से उबरने में तकलीफ हुई। मि. सेम्सा ने कंधे पर कंबल डाल लिया। श्रीमती सेम्सा सिर्फ गाउन पहने थीं। सब ग्रेगोर के कमरे में जा पहुंचे। इसी बीच किवाड़ खोलकर ग्रेटे अंदर आई। उसने पूरे कपड़े पहन रखे थे, जिससे लगता था कि वह रात भर नहीं सोई। इसकी गवाही उसके चेहरे के पीलेपन से भी मिलती थी।

"शायद मैं मुड़ना जारी रख सकता हूं?" ग्रेगोर ने सोचा, और फिर कोशिश की। इसमें वह थक गया और उसे सांस लेने के लिए रुकना पड़ा। उसके साथ किसी ने छेड़-छाड़ नहीं की। उसे पूरी तौर से उसके हाल पर छोड़ दिया गया था। उसने धीरे-धीरे अपने कमरे की ओर रेंगना शुरु किया। इसके बारे में किसी ने एक शब्द नहीं कहा।

वह कमरे में दाख़िल हुआ ही था कि पीछे से दरवाज़ा बंद हो गया। बाहर से सिटकनी और ताला लगा दिया गया। आख़िरकार बहन ने चीख़कर कहा और ताले की कुंजी घुमा दी।

"अब।..." अंधेरे में देखने की कोशिश करते हुए ग्रेगोर ने अपने से कहा। उसे जल्द पता चल गया कि अब वह शरीर के किसी भी अंग को हिला-डुला नहीं सकता। सारी देह में भयंकर कष्ट था, जो, लगता था, धीरे-धीरे कम हो रहा है। उसकी पीठ में धंसा सेब (जो सड़ चुका था) और उसके गिर्द की सूजन, जो धूल से ढंकी थी, बहुत पहले सुन्न हो चुकी थी। उसने अपने परिवार के बारे में सहानुभूति से सोचना शुरू किया। बहन का फ़ैसला कि उसे घर छोड़ देना चाहिए, उसे बहुत सही लगा। लेकिन काश! उसके लिए वैसा संभव होता।

टावर क्लॉक के तीन बजाने तक वह इसी उधेड़बुन में लगा रहा। उसने बाहर फैलते हुए प्रकाश को अंतिम बार अपनी चेतना में महसूस किया, फिर उसका सिर फर्श पर लुढ़क गया।

रोज़ की तरह, जब नौकरानी काम पर आई तो उसने आदतन ग्रेगोर के कमरे में झांककर देखा। उसे कुछ भी असामान्य नहीं लगा। उसने सोचा, ग्रेगोर जान-बूझकर बेहरकत पड़ा हुआ है। नौकरानी के ख़्याल से वह काफी चालाक था। उसने उसे दरवाज़े से ही लंबे बांस वाली झाड़ू से कुरेदा। उसमें प्रतिक्रिया नहीं हुई तो उसने गुस्से में आकर झाड़ू की नोक उसके शरीर में कोंच दी। लेकिन जब उसने कमरा झाड़ना शुरू किया और ग्रेगोर ने कोई विरोध नहीं किया तो वह चौंकी और असलियत समझ गई, उसकी आंखें फैल गई। उसने होठों से सीटी बजाई और बिना एक क्षण गंवाए, सेम्सा के कमरे के किवाड़ खोलकर, ज़ोर से आवाज़ दी, "ज़रा देखो!... वह मर गया है।"

मि. सेम्सा और उनकी पत्नी अपने डबलबेड पर डर गए। नौकरानी की सूचना के बाद उन्हें उस धक्के से उबरने में तकलीफ हुई। मि. सेम्सा ने कंधे पर कंबल डाल लिया। श्रीमती सेम्सा सिर्फ गाउन पहने थीं। सब ग्रेगोर के कमरे में जा पहुंचे। इसी बीच किवाड़ खोलकर ग्रेटे अंदर आई। उसने पूरे कपड़े पहन रखे थे, जिससे लगता था कि वह रात भर नहीं सोई। इसकी गवाही उसके चेहरे के पीलेपन से भी मिलती थी।

"मर गया?" श्रीमती सेम्सा ने नौकरानी को सवालिया नज़रों से देखते हुए पूछा। "मेरे ख़्याल से," नौकरानी ने उत्तर दिया।

"ठीक है। ईश्वर को धन्यवाद," मि. सेम्सा ने कहा और अपने को क्रॉस किया। तीनों महिलाओं ने उनका अनुकरण किया।

ग्रेटे की आंखें शव पर टिंकी हुई थीं। बोली, "ज़रा देखो तो, किस क़दर दुबला हो गया था।"

सचमुच ग्रेगोर का शरीर सूखकर एकदम चपटा हो गया था।

"कुछ देर हमारे साथ रहो ग्रेटे," श्रीमती सेम्सा ने कांपती मुस्कान

Scanned with OKEN Scanner
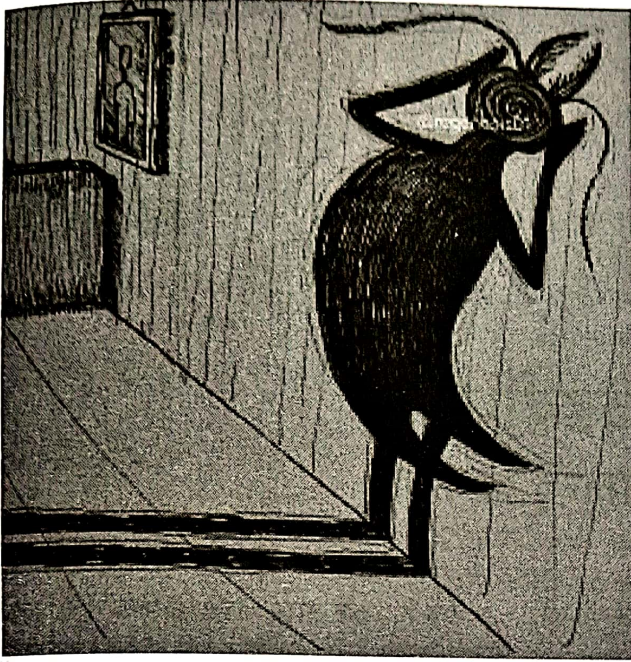
के साथ कहा। नौकरानी ने कमरा बंद करने के बाद खिड़की खोल दी। हालांकि सुबह का वक्त था, हवा में मार्च की खुनकी थी। तीनों किरायेदार अपने कमरे से बाहर आए। नाश्ता नदारद देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ।

"नाश्ता कहां है?" बीच वाले ने पूछा।

नौकरानी ने होंठों पर उंगली रखकर संकेत किया कि वे ग्रेगोर के कमरे में जाएं। कोट की जेब में हाथ दिए वे ग्रेगोर के कमरे में गए और उसके शव को घेरकर खड़े हो गए। कमरे में सुबह का उजाला फैल चुका था।

तभी मि. सेम्सा के कमरे का दरवाजा खुला। मि. सेम्सा अपनी वर्दी में उनकी ओर आते दिखाई दिए। उनके एक बाजू में उनकी पत्नी थी, दूसरे में उनकी लड़की, जिनके चेहरे से लगता था कि दोनों बहुत रो चुकी हैं।"

"तुम लोग इसी वक़्त मेरा मकान छोड़ दो," मि. सेम्सा ने दरवाज़े की ओर इशारा किया।

"क्या मतलब?" बीच वाले ने चकित और कमजोर स्वर में कहा।

"मेरा मतलब वही होता है, जो मैं कहता हूं" मि. सेम्सा ने दृढ़ता से कहा और पत्नी और बेटी को आजू-बाजू लिए उनकी ओर बढ़े। पहले किरायेदारों ने अड़ने की कोशिश की। फिर उसके ख़्याल बदलने लगे।

"तो क्या हमें हर हालत में चले जाना चाहिए?" बीच वाले ने पूछा। मि. सेम्सा ने उसकी ओर अर्थपूर्ण नज़रों से देखते हुए सिर हिलाया। इस पर किरायेदार लंबे-लंबे डग भरते हुए हॉल की ओर बढ़ गए। हॉल में पहुंचकर उन्होंने रैक से अपने टोप और छाता और स्टैंड से अपनी छड़ियां उठाई और चले गए। मि. सेम्सा, दोनों महिलाओं के साथ उनके पीछे सीढ़ियों तक गए।

उन्होंने तय किया कि आज का दिन घूमने और आराम करने में बिताएंगे। उन्हें इसकी सख़्त ज़रूरत थी। वे टेबल पर बैठ गए और तीनों ने तीन अलग-अलग दरख्वास्तें लिखीं। मि. सेम्सा ने बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट को, श्रीमती सेम्सा ने अपने दुकान मालिक को और ग्रेटे ने अपने फर्म-प्रमुख को। जब वे लिख रहे थे तो नौकरानी यह बताने आई कि सुबह का काम पूरा है, इसलिए वह जा रही है। पहले उन्होंने बिना उसकी ओर हो चुका देखे सिर हिलाए, लेकिन जब वह वहीं मंडराती रही तो खीज से उसकी ओर देखने लगे।

"क्या है?" मि. सेम्सा ने पूछा। नौकरानी के हाव-भाव से लगता था कि उसके पास एक अच्छी ख़बर है, जिसे वह बिना पूछे नहीं बताएगी। "हां, क्या बात है?" श्रीमती सेम्सा ने, जिसकी वह सबसे ज्यादा इज़्ज़त करती थी, पूछा।

"ओह।..." नौकरानी ने हंसी रोकते हुए बताया, "यही कि कमरे में पड़ी चीज़ों से छुटकारा कैसे पाएं, उसकी चिंता आप मत करना।"

श्रीमती सेम्सा और ग्रेटे फिर अपनी दरख्वास्तों पर झुक गई। मि. सैम्सा ने यह देखकर कि वह कुछ और कहने जा रही है, उसे हाथ के इशारे से रोका। इस पर नौकरानी को कोई बिसरा हुआ काम याद आ गया। उसने सबको नमस्कार किया और जोर से दरवाज़ा बंद करती हुई चली गई। "इसे शाम को नोटिस दे दिया जाएगा," मि. सेम्सा ने कहा।

पत्नी या बेटी ने कोई उत्तर नहीं दिया। नौकरानी ने उनकी शांति भंग कर दी थी। वे उठकर खिड़की के पास आई और एक दूसरे को पकड़कर खड़ी हो गईं। मि. सेम्सा उन्हें कुछ देर तक देखते रहे। फिर ऊंचे स्वर में बोले, "जो गया, सो गया। अब तुम लोगों को मेरा भी कुछ ख़्याल करना चाहिए।" दोनों महिलाएं झपटकर उनके पास पहुंचीं, उन्हें सहलाया और अपनी दरख्वास्तें पूरी की।

फिर जाने कितने महीनों बाद वे पहली बार एक साथ घर से निकले। ट्राम में बैठकर शहर के बाहर एक खुले हुए गांव में गए। ट्राम में मात्र वे ही तीन यात्री थे और उसमें गुनगुनी धूप भरी हुई थी। आरामदेह कुर्सियों से टिककर उन्होंने अपने भविष्य की संभावनाओं का आकलन किया और पाया कि स्थिति एकदम निराशाजनक नहीं है। जो नौकरियां वे कर रहे थे, वे ठीक थीं। भविष्य में उनकी और तरक्की होने की उम्मीद थी। लेकिन स्थिति में तभी कोई सुधार हो सकता था, जब वे कोई नया मकान तलाश लें। जब ये बातें हो रही थीं, तभी मिस्टर और श्रीमती सेम्सा ने लगभग एक साथ महसूस किया कि हाल के दुख के बावजूद (जिससे ग्रेटे के गालों का रंग पीला पड़ चुका था,) उनकी बेटी एक सुडौल युवती के रूप में विकसित हो चुकी है। वे चुपचाप, आंखों-आंखों में एक दूसरे से सहमत हुए कि जल्द ही उसके लिए एक भले पति की तलाश करने की ज़रूरत है। उनके सपने और शुभ इरादे की पुष्टि तब हुई, जब यात्रा के अंत पर पहले उनकी बेटी पैरों पर उछलकर खड़ी हुई, फिर उसने बदन को प्रकृतिस्थ करने के लिए अंगड़ाई ली।

अनुवाद : वल्लभ सिद्धार्थ

संवाद प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तक 'दंडद्वीप' से साभार

Scanned with OKEN Scanner

दंडद्वीप में

फ्रान्ज़ काफ़्का

"अद्भुत यंत्र!" अफ़सर ने कहा और यंत्र की ओर प्रशंसा से देखा।

सैलानी कमांडेंट के अनुरोध पर आया हुआ था। एक सिपाही को, जिस पर अवज्ञा का आरोप था, मृत्युदंड दिया जा रहा था। कॉलोनी में किसी को इसमें कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी। यही कारण था कि चारों ओर पहाड़ियों से घिरी उस रेतीली घाटी में, सिवाय इन चार व्यक्तियों अफसर, सैलानी, सिपाही और क़ैदी के, और कोई नहीं था. क़ैदी एक बेवकूफों जैसी शक्ल का आदमी था। उसका मुंह चौड़ा था और सिर के बाल खड़े हुए। उसकी गर्दन, कमर और घुटने जंज़ीरों से जकड़े हुए थे। जंज़ीर सिपाही के हाथ में थी। क़ैदी उस आज्ञाकारी कुत्ते की तरह दिखता था, जिसे पहाड़ियों पर घूमने के लिए छोड़ा जा सकता था और दंड के वक़्त सीटी देकर वापस बुलाया जा सकता था।

सैलानी को यंत्र में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह उदासीन भाव से क़ैदी के चारों ओर चक्कर काट रहा था। उतनी देर में अफ़सर ने यंत्र का निरीक्षण पूरा कर लिया। जो काम किसी मिस्त्री से कराया जा सकता था, वह काम वह ख़ुद करता था। शायद इसलिए कि वह यंत्र का दिली प्रशंसक था। या शायद इसलिए कि इतना महत्त्वपूर्ण काम किसी और के ज़िम्मे नहीं छोड़ा जा सकता था।

"तैयार है," अफ़सर ने यंत्र की सीढ़ियां उतरते हुए कहा। वह लंगड़ाकर चलता था, मुंह खोलकर सांस लेता था और उसने अपनी वर्दी की जाकेट के कॉलर में दो जनाने रूमाल टांक रखे थे।

"ऐसे काम में वर्दी से दिक्कत आती होगी?" यंत्र में कोई उत्सुकता प्रकट करने के बजाय सैलानी ने पूछा।

"सच है," अफ़सर ने बाल्टी के पानी से हाथों की ग्रीज धोते हुए कहा। "लेकिन वर्दी में हम सहज़ रहते हैं। अब इस यंत्र को देखिए," उसने तौलिए से हाथ रगड़ते हुए यंत्र की ओर इशारा किया, "अब तक इस पर हाथ से काम किया गया है। आगे का काम यह अपने आप करेगा। यों कभी-कभी इसमें गड़बड़ियां पैदा हो जाती हैं, लेकिन उम्मीद है कि आज कुछ नहीं होगा। फिर भी थोड़ी-बहुत गुंजाइश तो रह ही जाती है। क़ायदे से इसे बिना रुके बारह घंटे चलना चाहिए। कोई छोटा-मोटा नुक्स पैदा होता है तो तत्काल ठीक कर दिया जाता है। आप कुर्सी पर बैठना चाहेंगे?" अफ़सर ने कुर्सियों के ढ़ेर से एक कुर्सी निकालते हुए पूछा। सैलानी इंकार करने की स्थिति में नहीं था। अफ़सर क़ब्र के किनारे बैठ गया। कब्र ज्यादा गहरी नहीं थी। उसके एक तरफ मिट्टी का ढेर था, दूसरी तरफ यंत्र।

"मुझे नहीं पता, आपको कमांडेंट ने यंत्र के बारे में कुछ बताया या नहीं?" अफ़सर ने कहा। सैलानी के इंकार करने पर उत्साहित होकर बताने लगा, "यह हमारे पूर्व कमांडेंट का आविष्कार है। मैं इसमें शुरू से अंत तक उनका सहायक रहा। क्या आपने उनके बारे में कुछ नहीं सुना? नहीं? यदि मैं कहूं कि हमारी सारी व्यवस्था उस अकेले व्यक्ति की देन है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हम, जो उनकी मौत के बहुत पहले से उनके दोस्त थे, जानते थे कि उस वक़्त हमारी कॉलोनी का गठन कितना त्रुटिहीन था कि उनका कोई भी उत्तराधिकारी, चाहे वह कितना भी मेधावी क्यों न हो, आने वाले कई वर्षों तक इसमें किसी सुधार की गुंजाइश नहीं पाएगा। हमारी भविष्यवाणी सही थी, इसे हमारे नए कमांडेंट भी स्वीकार करते हैं। लेकिन,"

Scanned with OKEN Scanner

अफ़सर थोड़ा झिझका, "हम असली मुद्दे से भटक रहे हैं। तो ये हमारा यंत्र है। इसके तीन खंड हैं,जिन्हें अपने काम के अनुसार तीन अलग-अलग नाम दिए गए हैं। नीचे का खंड बिस्तर कहलाता हैं, ऊपर वाला डिजाइनर, और ये तीसरा, जो दोनों के बीच ऊपर-नीचे झूलता है, दरांती।"

"दरांती?" सैलानी ने पूछा। दरअसल वह अफ़सर की बातों को ध्यान से नहीं सुन पा रहा था। उस वृक्षहीन घाटी में सूर्य की चमक इतनी प्रखर थी कि उसे अपने ख़्यालों को नियंत्रित करने में दिक्कत महसूस हो रही थी। हालांकि अफ़सर के लिए, जो अपनी चुस्त वर्दी के बावजूद इतना उत्साहित दिख रहा था, उसके मन में प्रशंसा का भाव था।

अफ़सर बोल रहा था, और इसके साथ ही हाथ के पाने से यंत्र के ढीले पेंचों को कसता जा रहा था। सिपाही की हालत सैलानी जैसी ही थी। उसने जंजीर को अपनी दोनों कलाइयों में लपेट रखा था और बंदूक से टिका, सिर लटकाए हुए कुछ भी नहीं सुन रहा था। इस पर सैलानी को आश्चर्य नहीं हो रहा था। अफ़सर फ्रेंच बोल रहा था, जिसका एक शब्द भी सिपाही या क़ैदी को नहीं आता था। लेकिन इसके बावजूद क़ैदी समझने की कोशिश कर रहा था। इसलिए अफ़सर जिस तरफ उंगली से संकेत करता था, वह भी उसी ओर देखने लगता था।

"हां, दरांती! एकदम सार्थक नाम!" अफ़सर कह रहा था, "इसमें दरांती के दांतों की तरह सुइयां फिट की गई हैं। यह दरांती की ही तरह काम करता है, लेकिन कलात्मक तरीके से। यहां बिस्तर पर अपराधी को लिटा दिया जाता है। अच्छा रहेगा कि यंत्र चालू करने के पहले मैं आपको मोटी-मोटी जानकारियां दे दूं। इससे आपको इसकी प्रक्रिया समझने में सुविधा रहेगी। डिजाइनर का एक चक्का बुरी तरह घिस चुका है। घूमते वक़्त इतना शोर करता है कि आपको अपनी ही आवाज़ न सुनाई दे। इसके पुर्जे यहां मुश्किल से मिलते हैं। तो ये बिस्तर है और ये सूत मिश्रित ऊन का गद्दा। अपराधी को गद्दे पर लिटा दिया जाता है। उसके हाथों, पैरों और गले को मज़बूत पट्टों से कस दिया जाता है। यहां, जहां अपराधी का सिर रहता है, ये डॉट लगा हुआ है। यंत्र चालू होते ही यह अपराधी के मुंह में प्रवेश कर जाता है। इसका काम अपराधी की चीख़ों को रोकना होता है और ये भी कि कहीं अपराधी अपनी जीभ को दांतों से न काट ले। डॉट को मुंह में लेने के लिए अपराधी को मज़बूर किया जाता है, वर्ना वह पट्टे छूटने के चक्कर में अपनी गर्दन तोड़ सकता है।"

"क्या ये भी ऊन और सूत का बना हुआ है?" सैलानी ने झुकते हुए पूछा।

"हां!" अफ़सर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया "छूकर देखें," उसने सैलानी का हाथ पकड़कर बिस्तर से छुआया। "इसे विशेष ढंग से बनाया गया है। इसलिए कुछ विचित्र लगता है। अब मैं आपको बताऊंगा कि इसके पीछे क्या उद्देश्य है।"

यंत्र पुराना और भीमकाय था। सैलानी की दिलचस्पी जगने लगी थी। वह धूप से बचने के लिए आंखों पर हाथ लगाकर उसकी ओर
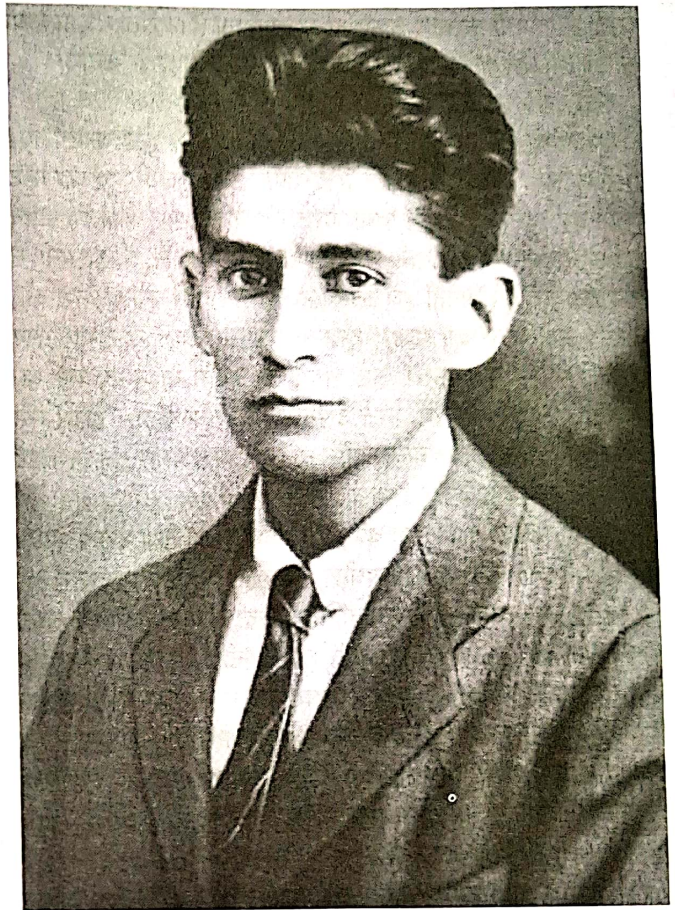
देखने लगा। बिस्तर और डिजाइनर एक ही आकार-प्रकार के थे और काठ के काले संदूकों की तरह दिखते थे। डिज़ाइनर बिस्तर से लगभग दो मीटर की ऊंचाई पर था। उसके दोनों कोनों पर पीतल के ठोस और मज़बूत रॉड जुड़े हुए थे। बीच में दरांती थी। दरांती फौलाद के पट्टे के सहारे ऊपर-नीचे झूलती थी। अफ़सर, जो अभी तक सैलानी की उदासीनता से बेख़बर था, उसकी दिलचस्पी से सतर्क होकर चुप हो गया। ताकि सैलानी बिना किसी अड़चन के यंत्र का निरीक्षण कर सके। क़ैदी सैलानी की नकल करने लगा। हथकड़ियों के कारण वह आंखों पर हाथ नहीं ले जा सकता था। अतः वह वैसे ही आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगा।

"हां, तो यहां अपराधी को लिटा दिया जाता है?" सैलानी ने कुर्सी से टिककर पैर-पर-पैर रखते हुए पूछा।

"हां," टोपी सरकाकर अपने धूप से तपे चेहरे पर हाथ फेरते हुए अफ़सर ने कहा।

"बिस्तर और डिजाइनर दोनों में एक-एक बैटरी फिट की गई है। बिस्तर में बिस्तर की ज़रूरत के लिए। डिज़ाइनर में दरांती के लिए। अपराधी को पट्टों में कसने के बाद बिस्तर को चालू कर दिया जाता है। बिस्तर में तेज़ कंपन शुरू हो जाता है। आपने अस्पतालों में ऐसे बिस्तर देखे होंगे। लेकिन हमारे इस बिस्तर को हमारे अनुसार हिलना-डुलना पड़ता है। आप समझ रहे हैं न? बिस्तर के कंपनों को

Scanned with OKEN Scanner

दरांती के कंपनों के साथ तालमेल रखना होता है। दरांती दंड प्रक्रिया को अंजाम देने वाला असली खंड है।"

"दंड प्रक्रिया कैसी होती है?" सैलानी ने पूछा।

"आपको नहीं मालूम?" अफ़सर ने आश्चर्य से होंठ काट लिए। "मेरी टूटी-फूटी अभिव्यक्ति के लिए माफ़ करेंगे। हमारे पूर्व कमांडेंट इसके बारे में पहले से बता दिया करते थे। लेकिन नए कमांडेंट अपने कर्तव्य से भागते हैं। इतने महत्त्वपूर्ण मेहमान को।..." सैलानी ने हाथ उठाकर उसे अपनी इज़्ज़त अफ़ज़ाई से रोकने की कोशिश की, लेकिन अफ़सर कहता गया, "कुछ न बताया जाए, यह हमारे लिए एक नई बात है।" अफ़सर कड़े शब्दों का प्रयोग करने जा रहा था, लेकिन अपने को काबू में करते उसने सिर्फ इतना कहा, "इसमें मेरी कोई ग़लती नहीं। मुझे बताया नहीं गया। मेरे पास हमारे पूर्व कमांडेंट द्वारा तैयार की गई डिज़ाइन मौजूद है।"

"पूर्व कमांडेंट द्वारा तैयार की गई डिज़ाइन। तो क्या उनमें बहुत-सी ख़ूबियां थीं? सैनिक, न्यायाधीश, डिज़ाइनर... सब एक साथ?"

"बिलकुल," अफ़सर ने स्वीकृति की मुद्रा में सिर हिलाया। अपने हाथों का जायज़ा लिया और पानी की बाल्टी के पास जाकर उन्हें दोबारा साफ़ किया। फिर जेब से चमड़े का एक छोटा-सा ब्रीफकेस निकालते हुए बोला, "हमारे दंड ज्यादा कठोर नहीं होते, सिर्फ अपराधी के जुर्म को सुइयों से उसके शरीर पर गोदा जाता है। उदाहरण के लिए इस कैदी पर गोदा जाएगा। अपने अफ़सरों का सम्मान करो।"

सैलानी ने क़ैदी की तरफ देखा। वह सिर झुकाए दत्तचित्त होकर उनकी बातें सुन रहा था। लेकिन उसके भिंचे हुए मोटे होंठों से ज़ाहिर था कि वह एक भी शब्द नहीं समझा। सैलानी के दिमाग़ में तरह-तरह के सवाल कुलबुला रहे थे। उसने क़ैदी की ओर संकेत करते हुए पूछा, "क्या इसे अपने अपराध की जानकारी है?"

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं। दंड से गुज़रने के दौरान वह अपने आप जान जाएगा," क़ैदी ने सैलानी की ओर देखा। उसकी निगाहें पूछ रही थीं कि क्या वह उसका समर्थन करता है?

"लेकिन क्या यह जानता है कि इसे कोई दंड दिया जा रहा है?"

"नहीं," अफ़सर ने मुस्कुराकर उत्तर दिया।

"तो क्या इसे यह भी नहीं पता कि इसकी 'सफाई' को ख़ारिज कर दिया गया है?"

"इसे सफाई देने का कोई मौका नहीं दिया गया।"

"लेकिन मौका दिया जाना चाहिए था," सैलानी ने कुर्सी से उठते हुए कहा। अफ़सर चलकर सैलानी के पास आया, उसे बाजू से पकड़ा और क़ैदी की ओर हाथ हिलाया। सिपाही ने जंज़ीर को झटका दिया।

"बात यह है कि नौजवान होने के बावजूद मुझे यहां की न्याय-व्यवस्था का दंडाधिकारी बनाया गया है। इस आधार पर कि मैं पूर्व कमांडेंट का सहयोगी था, और इस यंत्र के बारे में किसी भी व्यक्ति के मुक़ाबले ज्यादा जानकारी रखता हूं। मेरा आदर्श वाक्य है- अपराध के बारे में कोई संदेह नहीं किया जाना चाहिए। 'दूसरी अदालतें इस' सिद्धांत पर अमल नहीं कर सकतीं, क्योंकि उनमें विभिन्न मतों वाले न्यायाधीश होते हैं। फिर उनके फैसलों की जांच करने के लिए उच्च न्यायालय होते हैं। हमारे द्वीप की यही परंपरा है। शुरू में नए कमांडेंट ने मेरे काम में टांग अड़ाने की कोशिश की थी। लेकिन मैंने उसे रोक दिया। क्या आप इस मामले के बारे में सुनना चाहेंगे। एकदम सीधा है। सुबह मुझे एक कैप्टन ने सूचित किया कि यह शख़्स, जो उसे बतौर नौकर सौंपा गया था, अपनी ड्यूटी पर सोता पाया गया। इसकी ड्यूटी थी कि रात को कैप्टन के दरवाज़े पर पहरा दे और घंटा बजने पर हर बार उठकर दरवाज़े को सलाम करे। कोई बहुत मुश्किल काम नहीं, लेकिन इसके बावजूद बहुत ज़रूरी क्योंकि इसे संतरी और नौकर दोनों के काम सौंपे गए थे। रात को कैप्टन ने यह देखने के लिए कि यह अपनी ड्यूटी ठीक से करता है या नहीं, दो बजे दरवाज़ा खोला तो इसे सोता हुआ पाया। उसने इसके मुंह पर चाबुक से प्रहार किया। इस शख़्स ने बजाय माफी मांगने के अपने मालिक की टांग पकड़ ली और चीख़कर बोला, "चाबुक फेंक दे वर्ना मैं तुझे जिंदा खा जाऊंगा।" इसका प्रमाण ये है कि कैप्टन ने घंटे भर पहले मेरे सामने एक लिखित बयान दिया। उसी पर मैंने दंड लिख दिया। अगर मैं इससे पूछताछ करता या सफाई मांगता तो ये एक झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलता। उससे मामला और भी उलझता। मैंने इसे तुरंत गिरफ़्तार कर लिया, लेकिन हम बातों में समय गंवा रहे हैं। अब दंड शुरू होना चाहिए। लेकिन अभी तक मैंने आपको यंत्र के बारे में तो बताया ही नहीं। अफ़सर सैलानी को कुर्सी पर बिठाकर यंत्र के पास जा पहुंचा और बताने लगा, "जैसाकि आप देख रहे हैं, दरांती की सुइयों का आकार मनुष्य से मिलता है। ये सुइयां पैरों के लिए हैं, ये धड़ के लिए और सिर के लिए यह बड़ा सूजा। समझ रहे हैं न?" सैलानी खिन्न मन से दरांती के बारे में सोचने लगा। उसने अपने को याद दिलाया कि वह एक दंडद्वीप में है, जहां फौजी अनुशासन कायम रखने के लिए असामान्य तरीकों की ज़रूरत होती है। इसके बावजूद उसे नए कमांडेंट से कुछ उम्मीद थी।

"क्या कमांडेंट महोदय मौके पर उपस्थित रहेंगे?" उसने दूसरा सवाल किया।

"क्या पता," अफ़सर ने रुखाई से जवाब दिया। "हमारे पास ज्यादा समय नहीं, इसलिए ज़रूरी बातें संक्षेप में बताऊंगा। तो अपराधी को बिस्तर पर लिटा दिया जाता है। इसके बाद बिस्तर में कंपन शुरू हो जाते हैं। फिर दरांती को बिस्तर के पास लाया जाता है, लेकिन अभी सूइयां अपराधी के शरीर को नहीं छूतीं। इसके साथ ही दरांती को चालू करने वाला फौलाद का पट्टा घूमने लगता है। दरांती अपना काम शुरू कर देती है। दरांती के कांपने के साथ ही सूइयां अपराधी के शरीर में घुसने लगती हैं। बिस्तर के साथ अपराधी का जिस्म भी कांपता है। दरांती कांच की बनी है। इतनी बड़ी सुइयों को कांच में फिट करने में हमें काफी तकनीकी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था। लेकिन कुछ प्रयोगों के बाद हम सफल हो गए। कांच से होकर अपराधी के शरीर पर गोदे गए अक्षरों को साफ-साफ पढ़ा जा सकता है। क्या आप सूइयों को पास से देखना पसंद करेंगे?"

सैलानी अपनी जगह से उठकर और दरांती पर झुककर देखने

Scanned with OKEN Scanner

लगा।

"आप ग़ौर कर रहे हैं, दरांती में दो तरह की सुइयां लगी हुई हैं। लंबी सुइयां अपराधी के जिस्म को छेदती हैं, जबकि छोटी सुइयां पानी छिड़कने का काम करती हैं, ताकि गोदे गए अक्षरों को साफ-साफ पढ़ा जा सके। खून और पानी एक नली के द्वारा क़ब्र में गिरा दिया जाता है।"

सैलानी ने भय और आश्चर्य से देखा कि क़ैदी दरांती के करीब आ गया है और ग़ौर से देख रहा है। उसने उनींदे सिपाही को जंज़ीर से अपने पीछे खींच लिया था। इस वक़्त वह कांच के ऊपर झुका हुआ था। शायद यह कोई दंडनीय हरक़त थी। इसलिए सैलानी उसे वहां से हटाना चाहता था। अफ़सर ने एक हाथ से सैलानी को रोका, दूसरे से सिपाही पर मिट्टी फेंकी। सिपाही ने आंखें खोलकर क़ैदी की गुस्ताखी पर ग़ौर किया। उसने अपनी बंदूक को नीचे गिर जाने दिया और दोनों एड़ियों को ज़मीन में गड़ाकर एक ज़ोरदार झटका दिया, जिससे क़ैदी लड़खड़ाकर रेत पर गिर पड़ा।

"इसे उठाकर खड़ा करो और सावधान करो।" अफ़सर ने चिल्लाकर कहा, और सिपाही की मदद से क़ैदी को उठाकर उसके पैरों पर खड़ा कर दिया।

"मैंने यंत्र के बारे में सब कुछ समझ लिया," सैलानी ने कहा।

"सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ के अलावा सब कुछ," अफ़सर ने सैलानी की बांह पकड़कर डिज़ाइनर की ओर संकेत किया। "दरांती को नियंत्रित करने वाले सारे चक्के डिज़ाइनर में फिट हैं। यह खंड अपराधी पर गोदे गए अपराध के अनुसार काम करता है। मैं अपने पूर्व कमांडेंट के निर्देशों का पालन करता हूं।" उसने चमड़े के ब्रीफकेस से कुछ काग़ज़ निकाले, "लेकिन खेद है कि मैं आपको इन्हें छूने नहीं दूंगा। ये मेरी सर्वाधिक मूल्यवान निधि हैं। इन्हें आपके सामने फैला देता हूं ताकि आप इनका अवलोकन कर सकें। पढ़िए।"

"मैं नहीं पढ़ सकता।"

"बहुत साफ लिखा है।"

"बिल्कुल, लेकिन मैं नहीं पढ़ सकता।"

"हां!" अफ़सर हंसा और कागज़ों को ब्रीफकेस में वापस रखता हुआ बोला, "कोई बच्चों का काम नहीं। समझने के लिए आपको दिमाग़ लड़ाना पड़ेगा। अपराधी को जल्द नहीं मरने दिया जाता, बल्कि औसतन बारह घंटे बाद। दंड-प्रक्रिया में निर्णायक मोड़ छह घंटे बाद आता है। इसे प्रकट करने के लिए नक्शे में जगह-जगह चक्र बनाए गए हैं। अब आप इस यंत्र में दरांती द्वारा किए जाने वाले काम को समझ सकते हैं। अफ़सर यंत्र की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर गया। वहां पहुंचकर उसने एक चक्का घुमाया और चीख़कर बोला, " होशियार! हटकर खड़े होइए। यंत्र चालू हो चुका है। अगर ये चक्का आवाज़ न करता, तो हमारा यंत्र बेमिसाल होता।"

चक्के की आवाज़ से क्षुब्ध होते हुए अफसर ने हवा में मुट्ठी हिलाई। फिर यंत्र के काम की जांच करने के लिए फुर्ती से सीढ़ियां उतरकर नीचे आ गया। यंत्र में कोई गड़बड़ी थी, जिसे सिर्फ वही समझ सकता था। उसने डिज़ाइनर में दोनों हाथ डाल दिए और

सैलानी ने भय और आश्चर्य से देखा कि क़ैदी दरांती के करीब आ गया है और ग़ौर से देख रहा है। उसने उनींदे सिपाही को जंज़ीर से अपने पीछे खींच लिया था। इस वक़्त वह कांच के ऊपर झुका हुआ था। शायद यह कोई दंडनीय हरक़त थी। इसलिए सैलानी उसे वहां से हटाना चाहता था। अफ़सर ने एक हाथ से सैलानी को रोका, दूसरे से सिपाही पर मिट्टी फेंकी। सिपाही ने आंखें खोलकर क़ैदी की गुस्ताखी पर ग़ौर किया।

चिल्लाकर बोला, "आप समझ रहे हैं, दरांती ने गोदना शुरू कर दिया है। जैसे ही यह एक इबारत पूरी करेगा, नीचे का गद्दा अपराधी को पलट देगा। इससे दरांती को गोदने के लिए नई जगह मिल जाएगी। उतनी देर गोदा हुआ हिस्सा गद्दे पर पड़ा रहेगा। गद्दा ख़ासकर ख़ून सोखने के उद्देश्य से बनाया गया है, ताकि बाद में पहली इबारत को गहराया जा सके। फिर जैसे ही अपराधी का शरीर पलटेगा, दरांती के अगले दांत गद्दे को क़ब्र में उछाल देंगे। लेकिन दरांती का काम फिर भी बाकी रह जाएगा। यह लगातार बारह घंटे तक अपराधी के शरीर पर लिखी हुई इबारत को गहरा करती रहेगी। छह घंटे अपराधी पहले की तरह जिंदा रहता है, दर्द से तड़पता। दो घंटे बाद उसके मुंह से डॉट निकाल दी जाती है, क्योंकि तब तक उसमें चिल्लाने की ताकत नहीं बचती। यहां से बिजली से गर्म रहने वाला चावल का माड़, बिस्तर के सिरहाने इस तरह से टपकाया जाता है कि अपराधी जितना चाहे चाट ले। इसका फायदा हर अपराधी उठाता है। छठे घंटे में अपराधी की खाने की इच्छा मर जाती है। मैं झुक-झुककर अपराधी का निरीक्षण करता रहता हूं। वह माड़ का अंतिम घूंट नहीं पीता। कुछ देर मुंह में भरे रहता है, फिर क़ब्र में बुलक देता है। लेकिन छठे घंटे उसका चेहरा कितना शांत हो उठता है। मूर्ख से मूर्ख अपराधी का चेहरा आलोकित हो उठता है। ज्ञान उसकी आंखों के रास्ते से आता है और वहीं दीप्त होता है। एक दुर्लभ क्षण, जब आपकी दिली इच्छा होने लगती है कि आप भी क़ैदी के साथ होते। इसके बाद कुछ भी नहीं घटता। अपराधी अपनी देह पर गोदी गई इबारत को समझ लेता है, उसके चेहरे के भाव से लगता है, जैसे कुछ सुन रहा हो। आप सोच सकते हैं–जिस इबारत को आंखों से पढ़ना मुश्किल हो, उसे जख्मों की पीड़ा से समझना, उस वक़्त तक दरांती उसके शरीर को आर-पार गोद चुकी होती है। इसके बाद उसके शव को क़ब्र में उछाल देती है। अपराधी ख़ून- पानी से सने गद्दे पर जा गिरता है। इसके साथ ही दंड का अंत। मैं और सिपाही शव को क़ब्र में दफ़्न कर देते हैं।"

जाकेट की जेबों में हाथ दिए सैलानी अफ़सर को ग़ौर से सुन रहा था। इसके साथ ही चालू हो गए यंत्र की ओर भी देख रहा था। क़ैदी भो देख रहा था, लेकिन कुछ भी न समझता हुआ। यकायक क़ैदी झुका। वह दरांती चालू करने को था कि अफ़सर के संकेत पर सिपाही ने पीछे से उसके कपड़ों को चाकू से चीर दिया। क़ैदी के

Scanned with OKEN Scanner

कपड़े अलग-थलग जा पड़े। नंगेपन से बचने के लिए उसने कपड़ों को पकड़ने की कोशिश की। तभी सिपाही ने उसे पीछे से उठाकर उसके बचे-खुचे चीथड़ों को भी झाड़ दिया। अफ़सर ने यंत्र बंद किया। क़ैदी को दरांती के नीचे लिटा दिया गया ; चेनें ढीली कर दी गईं ; क़ैदी के गले और हाथ-पैरों को पट्टों से कस दिया गया। शुरू में लगा, जैसे क़ैदी को आराम मिला हो। क़ैदी एक दुबला-पतला व्यक्ति था, इसलिए दरांती को थोड़ा और नीचे लाया गया। सुइयों के एहसास के साथ ही उसकी देह में ठंडी सिहरन दौड़ गई। सिपाही उसके दाएं हाथ का पट्टा कस रहा था, तभी उसने अपना बायां हाथ बाहर फेंका। संयोग से उधर, जहां सैलानी खड़ा हुआ था। अफ़सर सैलानी का चेहरा भांप रहा था। जैसे उस पर दंड का प्रभाव पढ़ने की कोशिश कर रहा हो।

एक कलाई का पट्टा टूट गया था। शायद सिपाही ने उसे ज्यादा कस दिया था। इस पर अफ़सर को हस्तक्षेप करना पड़ा। उसने सिपाही के पास पहुंचकर सैलानी से कहा, "बहुत पेचीदा यंत्र है। इसकी कोई-न-कोई चीज़ हमेशा टूटती या गड़बड़ होती रहती है, लेकिन हम इससे घबड़ाते नहीं। अब मैं पट्टे की जगह जंज़ीर से काम लूंगा।" जंज़ीर कसते हुए उसने आगे कहा, " यंत्र के रख-रखाव के लिए दी जाने वाली राशि में कटौती कर दी गई है। पुराने कमांडेंट के समय इसके लिए एक निश्चित राशि सुरक्षित रहती थी, जिसे मैं कभी भी निकाल सकता था। एक स्टोर रूम भी दिया गया था, जिसमें मरम्मत के औजार और फालतू कल-पुर्जे रखे रहते थे। लेकिन अब नए कमांडेंट ने सब कुछ अपने चार्ज में ले लिया है। अब अगर मैं उससे नए पट्टे की मांग करता हूं तो वह पुराने पट्टे को देखना चाहेगा। नया पट्टा मंगाने में दस दिन लग जाएंगे और वह भी रद्दी किस्म का। बिना पट्टे के मैं यंत्र से कैसे काम लूं, इसकी फिक्र किसी को नहीं।"

सैलानी सोच-विचार में डूब गया। दूसरों के मामलों में टांग फंसाना हमेशा झंझट का काम होता है। न तो वह इस द्वीप का सदस्य है, न ही उसके देश का नागरिक। वह कोई आलोचना करेगा तो वे उसे टके-सा जवाब दे देंगे "आप बाहरी आदमी हैं। अपने काम से मतलब रखें।" इस पर वह क्या कहेगा। ज्यादा-से-ज्यादा यही कि वह आश्चर्यचकित है। उस द्वीप में सिर्फ एक सैलानी की हैसियत से आया है और दूसरों की न्याय-व्यवस्था में दखलंदाज़ी करने का उसका कोई इरादा नहीं।

यों वह अंदर से काफी क्षुब्ध था। उसे वहां की न्याय-व्यवस्था और उसका क्रियान्वयन अमानुषिक लगा था। उस पर स्वार्थ-प्रेरित होने का आरोप नहीं लगाया जा सकता था। क़ैदी से उसका कोई संबंध नहीं था। उसे उच्चस्तरीय सिफारिश पर भेजा गया था। यह तथ्य कि उसे मृत्युदंड देखने के लिए बुलाया गया है, इस बात का संकेत था कि उसके विचारों को महत्त्व दिया जाएगा। और भी ज्यादा संभावना इसलिए थी, क्योंकि नया कमांडेंट दंडाधिकारी के ख़िलाफ था।

उसी क्षण अफसर की गुस्से से चिल्लाने की आवाज़ आई। वह बड़ी मुश्किल से क़ैदी के मुंह में डॉट ठूंस पाया था कि क़ैदी ने आंखें मूंदकर उल्टी कर दी। अफ़सर ने फुर्ती से डॉट निकालकर क़ैदी का मुंह क़ब्र पर झुका दिया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। क़ैदी ने मशीन में ही उल्टी कर दी थी। "सारी ग़लती कमांडेंट की है," अफ़सर पीतल की रॉडों को झकझोरता हुआ चिल्लाया। "यंत्र सुअरबाड़े की तरह गंदा हो गया है," उसने कांपते हाथों से सैलानी को संकेत किया कि पास आकर देखे। "मैंने कमांडेंट के साथ घंटों सिर खपाया कि अपराधी को दिन भर भूखा रखा जाना चाहिए। लेकिन हमारे नए और मृदु सिद्धांतों का मिज़ाज ही कुछ दूसरा है। अब कमांडेंट की प्रेयसियां विदा के वक्त अपराधी को शुगरकैंडी खिलाती हैं। जो ज़िंदगी भर सड़ी मछली खाता रहा हो, उसे मरते वक्त शुगरकैंडी! मैं इसे भी नज़रंदाज़ करने को तैयार हूं, लेकिन वह मुझे नया डॉट क्यों नहीं देते? तीन महीनों से मांग कर रहा हूं। कोई उस डॉट को अपने मुंह में कैसे रख सकता है, जो सौ से ज्यादा मरते हुए अपराधियों के मुंह में रह चुका हो।"

क़ैदी सिर झुकाए हुए शांत दिख रहा था। सिपाही क़ैदी की कमीज से अंदर की सफाई करने में व्यस्त था।

अफ़सर सैलानी की ओर बढ़ा। पता नहीं क्या समझकर, सैलानी एक क़दम पीछे हट गया, लेकिन अफ़सर ने उसे हाथ पकड़कर एक तरफ खींच लिया।

"मैं आपसे कुछ गोपनीय बातें कह सकता हूं?"

"बिल्कुल!" सैलानी ने कहा और सिर झुकाकर सुनने लगा।

"वर्तमान समय में, हमारी दंड-व्यवस्था का (जिसका दर्शक

होने का स्वर्णावसर आपको मिला है) इस कॉलोनी में मेरे अलावा एक भी समर्थक नहीं। इसके अलावा अपने पूर्व कमांडेंट की परंपरा का भी एकमात्र समर्थक मैं भी अब अपनी व्यवस्था के विस्तार के बारे में नहीं सोचता। यह इसी रूप में बची रहे, इसी की कोशिश में सारी शक्ति ख़र्च हो जाती है। पूर्व कमांडेंट के समय कॉलोनी हमारे समर्थकों से भरी पड़ी थी। उनके विचारों की कुछ शक्ति मुझमें भी है, लेकिन उनकी वास्तविक ताक़त का एक अंश भी नहीं। नतीज़ा ये है कि हमारे समर्थक गुम हो गए हैं। जो हैं भी वे खुलकर नहीं आ सकते। अगर आप आज किसी चाय-घर में बैठें तो वहां आपको उल्टी-सीधी टिप्पणियां सुनने को मिलेंगी। लेकिन वर्तमान कमांडेंट और उसके नए सिद्धांतों के चलते मेरे लिए उनका कोई महत्त्व नहीं। मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूं। क्या कमांडेंट और उनकी महिलाओं (जिनसे वह प्रभावित है) के कारण एक समूची ज़िंदगी के काम को यों ही छोड़ देना चाहिए? क्या किसी को भी इसकी इजाज़त दी जा सकती है? मेरे उन कामों पर, जो मैं दंडाधिकारी की हैसियत से करता हूं, हमला होने वाला है। अब मुझे कमांडेंट के कक्ष में होने वाली सभाओं में नहीं बुलाया जाता? यहां तक कि आपको यहां भेजने के पीछे भी मुझे उसकी कोई साज़िश नज़र आती है। वह बुज़दिल है और आपका उपयोग एक ढाल के रूप में कर रहा है। पुराने वक़्त में मृत्युदंड को हमारे द्वीप में एक पर्व की तरह मनाया जाता था। दिन भर घाटी में दर्शकों का तांता लगा रहता था।

कमांडेंट सुबह से ही अपनी महिलाओं के साथ आ जाते थे। फिर मैं उन्हें सूचित करता था कि यंत्र तैयार है। दर्शकों की भीड़ (उस वक़्त कोई भी बड़ा अधिकारी अनुपस्थित रहने की हिम्मत नहीं कर सकता था) यंत्र के चारों ओर व्यवस्थित हो जाती थी। ये कुर्सियों का ढेर उसी युग की दुखद यादगार है। यंत्र चुस्त-दुरुस्त और चमचमाता हुआ होता था। मुझे हर मृत्युदंड के पहले नए पुर्जे उपलब्ध कराए जाते थे। पंजों पर खड़े सैकड़ों दर्शकों के बीच कमांडेंट स्वयं अपराधी को अपने हाथों से सुइयों के नीचे लिटाते थे। जो आज एक मामूली सिपाही का काम रह गया है, उस वक़्त मेरे लिए होता था। यानी एक दंडाधिकारी का काम, जो मेरे लिए सम्मान की बात होती थी। फिर दंड-प्रक्रिया शुरू हो जाती थी। भीड़ से कोई भी "असहमति की चूं-चपाट यंत्र के रंग को भंग नहीं करती थी। बहुत से लोग यंत्र की तरफ न देखकर रेत में आंखें गड़ाए रहते थे। लेकिन वे जानते थे कि न्याय किया जा रहा है। सन्नाटे में अपराधी की घुटती सांसों के अलावा कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। अब तो अपराधी की चीख़ों को डॉट द्वारा घोंट दिया जाता है। पुराने समय में गोदने वाली सुइयों से तेज़ाब रिसता रहता, जिसकी अब इजाज़त नहीं। फिर छठां घंटा आता था। उस समय सबको नज़दीक से देखने की इजाज़त देना असंभव हो जाता था। बुद्धिमान कमांडेंट का आदेश होता था कि सबसे पहले बच्चों को अवसर दिया जाए। अपने पद के कारण मुझे कमांडेंट के पास बैठने की इजाज़त रहती थी। मैं अक्सर दोनों हाथों में दो बच्चे लिए उनके बग़ल में बैठा होता था। हम किस तरह अपराधी के बिगड़ते हुए चेहरे की यातना को अपने अंदर जज़्ब करते थे! किस कदर हमारे चेहरे न्याय की भावना से चमकते थे! वह कौन-सा वक़्त था साथी?" ज़ाहिरा तौर पर अफ़सर भूल चुका था कि वह किससे बातें कर रहा है।

अफ़सर ने सैलानी को बांहों में जकड़कर उसके कंधों पर सिर रख दिया। सैलानी को अटपटा लग रहा था। इस बीच सिपाही यंत्र साफ कर चुका था और अब बर्तन में चावल का माड़ भर रहा था। जैसे ही क़ैदी ने ये देखा, वह मुंह के चारों ओर जीभ चलाने लगा। (क़ैदी को होश आ चुका था।) सिपाही उसके चेहरे को परे ठेलने लगा, क्योंकि माड़ बाद के घंटों के लिए था। इसके अलावा क़ैदी की लालची आंखों के सामने वह ख़ुद नहीं खा सकता था।

अफ़सर ने प्रकृतिस्थ होते हुए कहा, "मैं आपका दिमाग़ ख़राब नहीं करना चाहता। मैं समझता हूं कि उन दिनों के बारे में किसी को विश्वास दिलाना मुश्किल है। जो भी हो, ये यंत्र अब भी काम करता है। इसके बावजूद इस वीरान घाटी में उपेक्षित पड़ा हुआ है। ये अब भी अपराधी के शव को क़ब्र में उसी सहजता से फेंकता है। हालांकि इसका कमाल देखने के लिए अब भीड़ नहीं होती। उस समय हमने क़ब्र के चारों ओर कंटीले तारों की बाड़ लगा दी थी। पता नहीं उसे किसने उखाड़ दिया।

सैलानी अफ़सर के चेहरे से निगाहें हटाना चाहता था। अफ़सर को लगा, वह घाटी का निरीक्षण करना चाहता है। उसने सैलानी का हाथ पकड़कर अपनी ओर मुख़ातिब किया और आंखों में आंखें डालकर बोला, "आप देख रहे हैं कितनी शर्मनाक हालत है?"

सैलानी ने कोई जवाब नहीं दिया। अफ़सर ने उसे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ देना उचित समझा और टांगें फैलाकर, कूल्हों पर हाथ रखकर रेत के विस्तार को देखने लगा। कुछ ही पलों के बाद उत्साहित होकर फिर कहने लगा, "कल जब कमांडेंट ने आपको आमंत्रित किया, मैं आपके बिल्कुल पास खड़ा था। मैं तभी समझ गया था कि उसका असली निशाना कहां है। उसमें मेरे ख़िलाफ कार्यवाई करने की शक्ति तो है, लेकिन वह हिम्मत नहीं जुटा पाता। उसकी योजना है कि आपके फैसले का मेरे विरुद्ध उपयोग करे। एक विख्यात विदेशी का निर्णय! उसने अपना गणित बहुत चतुराई से बिठाया है। इस द्वीप में आपका दूसरा दिन है। आपको हमारे पूर्व कमांडेंट और उनके तौर-तरीकों की कोई जानकारी नहीं। आप यूरोप के उदारवादी विचारों में संस्कारित हुए हैं और सिद्धांततः मृत्युदंड के ख़िलाफ हैं, विशेष रूप से ऐसे यांत्रिक मृत्युदंड के। इसके अलावा आपने यह भी देखा है कि हमारे पास जन समर्थन नहीं। एक जर्जर और रूढ़ अनुष्ठान! जिसे हम एक पुराने और जर्जर यंत्र के सहारे संपन्न करते हैं। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए क्या यह संभव नहीं कि आपको मेरे तौर-तरीके न पसंद आएं। (कमांडेंट की सोच यही है।) अगर ऐसा होगा तो आप उससे छिपाएंगे भी नहीं, क्योंकि आप ऐसे व्यक्ति हैं, जिसे अपने निष्कर्षों पर विश्वास होता है। आप तरह-तरह के लोगों से मिलते हैं और उनका सम्मान करते हैं। अतः आप हमारे काम के प्रति कोई वैसा कठोर रुख़ न अपनाएं, जैसा अपने देश में

Scanned with OKEN Scanner

करते। लेकिन कमांडेंट को उसकी ज़रूरत भी नहीं। मेरे ख़िलाफ़ आपका कोई मामूली-सा नुक्ता, कोई असावधान-सी टिप्पणी ही उसके लिए काफी होगी। वह आपसे छिपे हुए सवाल पूछेगा। उसकी महिलाएं कान खड़े किए, आपको घेरकर बैठ जाएंगी और आप कुछ इस तरह बोल रहे होंगे, "हमारे देश की न्याय-व्यवस्था आपसे भिन्न है या हमारे यहां दंड से पहले अभियुक्त को सफाई देने का अवसर दिया जाता है या हमारे देश में मध्य युग के बाद यातना देना बंद है।" इस तरह के जुम्ले, जो आप जैसे व्यक्ति के लिए बिलकुल स्वाभाविक हैं। निरीह-सी टिप्पणियां, जो हमारे तौर-तरीकों पर कोई निर्णय नहीं देतीं। लेकिन कमांडेंट पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, इसका अंदाज़ा मैं लगा सकता हूं। वह कुर्सी से उठकर बालकनी की ओर लपकेगा। उसके पीछे चीख़ती हुई उसकी महिलाएं। मैं उसके स्वर की कल्पना कर सकता हूँ, जिसे स्त्रियां घन-गर्जना के विशेषण से विभूषित करती हैं। वह कहेगा, एक प्रसिद्ध पश्चिमी पर्यटक ने, जिसे संसार के तमाम देशों की न्याय-व्यवस्थाओं के अध्ययन के लिए भेजा गया है, अभी-अभी कहा है कि हमारी पुरानी न्याय-व्यवस्था अमानवीय है। इतने महत्त्वपूर्ण अन्वेषी के इस फैसले के बाद मेरे लिए पुरानी न्याय-व्यवस्था को चलने देना असंभव है। इसलिए मैं आदेश देता हूं कि आज से।..." बाद में आप इसका खंडन कर सकते हैं कि आपने ऐसी कोई बात नहीं कही, कि आपने हमारी न्याय-व्यवस्था को अमानवीय नहीं, बल्कि अत्यंत मानवीय और मानवीय गरिमा के अनुकूल बताया है और आप मेरे यंत्र के प्रशंसक हैं। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। आप बालकनी तक कभी नहीं पहुंच सकेंगे, क्योंकि वहां स्त्रियों की भीड़ होगी। आप लोगों का ध्यान खींचने के लिए चिल्लाना चाहेंगे तो किसी महिला की हथेली आपका मुंह बंद कर देगी। और मैं और हमारे स्वर्गीय कमांडेंट हमेशा के लिए दफ़्न हो जाएंगे।

सैलानी ने अपनी मुस्कुराहट को दबाया। जिस काम को वह इतना मुश्किल समझ रहा था, वह वास्तव में कितना आसान है। "आप मेरे प्रभाव को बढ़ा-चढ़ाकर आंक रहे हैं," सैलानी ने कहा। "कमांडेंट ने मेरे काग़ज़-पत्र देखे हैं। वे जानते हैं कि मैं न्याय-व्यवस्था का विशेषज्ञ नहीं। मेरी व्यक्तिगत राय का कोई असर उन पर होगा, इसका सवाल ही नहीं। लेकिन जैसाकि आपने बताया है, यहां की न्याय-व्यवस्था पर उनका पूरा अधिकार है और वे आपके विचारों के विरुद्ध हैं। ऐसी हालत में मुझे भय है कि आपकी परंपरा का अंत निकट है।"

क्या अफ़सर की समझ में कुछ आया? नहीं! वह एक शब्द भी नहीं समझा। उसने सिर को झटका देकर सिपाही और क़ैदी की ओर देखा। इस पर क़ैदी और सिपाही ने चावलों से हाथ हटा लिए, जो वे खा रहे थे। फिर वह सैलानी के पास जाकर धीरे से बोला, "आप कमांडेंट को नहीं जानते। आप भले ही एक बाहरी आदमी हों, आपकी राय को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया जा सकता। जब मुझे पता चला कि आप हमारे दर्शक होकर आ रहे हैं, तो मुझे खुशी हुई थी।"

यह काम कमांडेंट ने मेरे विरुद्ध एक चाल के रूप में किया है। लेकिन मैं उसका पांसा पलटकर इससे ख़ुद फायदा उठाऊंगा। आपने मेरा स्पष्टीकरण सुन लिया है, यंत्र देख चुके हैं और दंड-प्रक्रिया देखने जा रहे हैं। आप अपने निष्कर्षों पर पहुंच चुके होंगे। कुछ शंकाएं होंगी तो सज़ा देने का ढंग देखकर दूर हो जाएंगी। आपसे एक अनुरोध है– "कमांडेंट के ख़िलाफ़ मेरी मदद कीजिए।"

"मैं कैसे कर सकता हूं!" सैलानी ने चीख़कर कहा, "मैं न तो आपकी मदद कर सकता हूं, न ही आपको रोक सकता हूं।"

"तुम कर सकते हो," अफ़सर ने उत्तेजित होकर कहा। सैलानी ने डरते हुए देखा कि अफ़सर की मुट्ठियां भिंची हुई थीं। "आप कर सकते हैं," अफ़सर ने आग्रह के साथ दोहराया, "मेरी एक योजना है, जिसके असफल होने का सवाल ही नहीं। अगर आपके ख़्याल से आपका कोई महत्त्व नहीं, तो भी क्या? क्या एक महान परंपरा को बचाने के लिए छोटे-मोटे प्रयत्न नहीं किए जाने चाहिए? मेरी योजना यों है– पहली बात तो ये कि आपने जो कुछ यहां देखा, उसके बारे में कम-से-कम बताएं। वह भी तभी, जब आपसे पूछा जाए। आपके जवाब बहुत संक्षिप्त और आम हों, बहस तो बिलकुल नहीं। फिर भी यदि आपको अपने ऊपर नियंत्रण न हो तो मेरे ख़िलाफ कठोर शब्दों का प्रयोग करें। मैं नहीं कहता कि आप झूठ बोलें, सिर्फ नपे-तुले जवाब दें। जैसे "हां, मैंने आपकी दंड-व्यवस्था देखी है," सिर्फ इतना। लेकिन हो सकता है कि बीच में आपका सब्र टूट जाए, जबकि कमांडेंट से ऐसी कोई उम्मीद नहीं। ये ज़रूर होगा कि वह आपके शब्दों की मनमानी व्याख्या करेगा, ग़लत अर्थ निकालेगा। मेरी योजना इसी पर निर्भर है। कल उसके सभापतित्व में कॉलोनी के वरिष्ठ अधिकारियों की मीटिंग होने जा रही है। कमांडेंट ने मीटिंग को सार्वजनिक रूप दे रखा है। सभा-भवन में एक गैलरी बनवा दी है, जो दर्शकों से भरी रहती है। मुझे उसके भाषणों से ऊब होती है, लेकिन मुझे उपस्थित होने का आदेश है। आपको उस मीटिंग में ज़रूर बुलाया जाएगा। लेकिन अगर किसी रहस्यमय कारण से नहीं भी बुलाया जाता, तो आप निमंत्रण की मांग करें, जो आपको दिया ही जाएगा। तो कल आप इस समय कमांडेंट के बॉक्स में उसकी सुंदर स्त्रियों के साथ बैठे होंगे। वह आपकी ओर बार-बार आश्वस्त भाव से देख रहा होगा। कुछेक महत्त्वहीन और मज़ाकिया मामलों के बाद, (जो सिर्फ जनता पर प्रभाव जताने के लिए उठाए जाते हैं और ज्यादातर बंदरगाह के बारे में होते हैं) यहां की न्याय-व्यवस्था पर बहस छिड़ जाएगी। अगर कमांडेंट इस मुद्दे को नहीं उठाएगा, तो मैं उठाऊंगा। मैं अपनी कुर्सी से खड़ा होकर घोषित करूंगा कि आज एक मृत्युदंड संपन्न हुआ है। इस पर कमांडेंट हमेशा की तरह दोस्ताना मुस्कुराहट के साथ आभार प्रकट करेगा। इसके बाद वह अपने को इस स्वर्णावसर से फायदा उठाने से रोक नहीं पाएगा। वह कहेगा, 'अभी-अभी सूचित किया गया है' या इसी आशय के कोई दूसरे शब्द, कि 'आज एक मृत्युदंड दिया गया है।' इस पर मैं सिर्फ इतना कहूंगा, 'एक विश्वविख्यात अन्वेषी ने इसका अवलोकन किया है, जैसाकि आप सबको विदित है, उन्होंने हमारे यहां आकर हमारे द्वीप को सम्मानित किया है। उनकी उपस्थिति से हमारी आज की सभा का महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। क्या ऐसे

Scanned with OKEN Scanner

अवसर पर हमें इस विश्वविख्यात अन्वेषी से अपनी न्याय-प्रणाली पर कोई राय नहीं लेनी चाहिए? मैं देख रहा हूं कि मेरे प्रस्ताव का ज़ोरदार स्वागत हो रहा है। 'इसके बाद कमांडेंट आपके आगे सम्मान से झुकेगा और फिर बोलना शुरू कर देगा,' तो मैं इस सभा की ओर से आपसे पूछता हूं कि।...' इस समय आप बॉक्स के किनारे आ जाएं और अपने हाथों को वहां रखें, जहां से उन पर निगाह रख सकें, वर्ना कमांडेंट की महिलाएं आपकी उंगलियों को दबाना शुरू कर देंगी। मैं नहीं सोच पाता, उस क्षण के तनाव को कैसे बर्दाश्त करूंगा। इसके बाद आप बोलना शुरू कर दें। बोलते वक़्त झिझकिएगा मत। पूरी दृढ़ता से सुनाइए। लेकिन शायद यह चीज़ आपके चरित्र से मेल नहीं खाती। आपके मुल्क में ऐसे काम दूसरे तरीकों से किए जाते हैं। तो फिर आप ऐसा करें कि कुछ शब्द धीरे से बुदबुदाएं, जिन्हें सिर्फ आपके नीचे बैठे हुए अधिकारी भर सुन सकें। दंड-व्यवस्था के पक्ष में कोई जनमत नहीं, इसकी चर्चा न करें। यंत्र के आवाज़ करने वाले चक्के, टूटे हुए पट्टे या गंदे डॉट का भी कोई ज़िक्र नहीं, यह काम मैं करूंगा। और विश्वास मानिए कि मेरे आरोपों से घबड़ाकर कमांडेंट अगर सभा-भवन छोड़कर नहीं भागा तो घुटने टेककर इतना कहने को ज़रूर मजबूर हो जाएगा कि ' हे पूर्व कमांडेंट! मैं तुझे सिर झुकाता हूं। "तो मेरी योजना यह है। क्या आप मेरी मदद करेंगे?" अफ़सर ने सैलानी के दोनों हाथ जकड़ लिए और लंबी सांसें भरता हुआ उसके चेहरे को देखने लगा।

सैलानी अनुभवी व्यक्ति था। उसे शुरू से ही कोई दुविधा नहीं थीं। वह निडर और सम्मानित आदमी था। फिर भी उसे सिपाही और क़ैदी के सामने कुछ कहने में झिझक हुई।

"नहीं!" सैलानी ने कहा। कहने के बाद गहरी सांस ली। अफ़सर ने कई मर्तबा पल्कें झपकाई।

"क्या बताऊं कि क्यों नहीं?" सैलानी ने पूछा। अफ़सर ने गर्दन हिला दी।

"मैं आपके तरीकों का समर्थन नहीं करता। पहले, जब आपने मुझे विश्वास में लिया, मैं तय नहीं कर पा रहा था कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं दखलंदाजी करूं या नहीं? अगर करूं, तो उसमें सफलता मिलेगी या नहीं। लेकिन अब मेरी समझ में आ गया है कि मुझे किसके पास जाना चाहिए। कमांडेंट के पास। लेकिन इससे मेरा इरादा दृढ़ नहीं हुआ, बल्कि इसके विपरीत आपकी ईमानदारी और निष्ठा ने मुझे गहरे छुआ है। हालांकि इससे मेरे विचार बिल्कुल प्रभावित नहीं।"

कुछ पलों के लिए अफ़सर चुप रहा, फिर यंत्र की ओर बढ़ गया। उसने पीतल की रॉड को हिलाया। फिर डिज़ाइनर में झांककर देखा। इस बीच सिपाही और क़ैदी में समझौता हो चुका था। क़ैदी के इशारे पर सिपाही उसके ऊपर झुका हुआ था। क़ैदी फुसफुसाहट में कुछ कह रहा था, सिपाही सिर हिला रहा था। सैलानी ने अफ़सर के पास जाकर कहा, ₹ मैं कमांडेंट को अपनी राय बताऊंगा, लेकिन अकेले में, और मैं यहां किसी सभा के लिए कल रुकूंगा नहीं। सुबह चला जाऊंगा। " ऐसा नहीं लगा कि अफ़सर ने कुछ सुना।

"तो आख़िर आपको हमारी दंड-व्यवस्था ठीक नहीं लगी?"

बुदबुदाने के बाद अफ़सर कुछ उसी तरह मुस्कुराया, जैसे कोई बुजुर्ग किसी की बचकानी हरक़त पर मुस्कुराता है और मुस्कुराहट के पीछे अपनी सोच जारी रखता है।

"तो आख़िरकार समय आ गया!" अफ़सर ने कहा और सैलानी की ओर देखा। उसकी आंखें चमक रही थीं।

"समय! किस बात का समय?" सैलानी ने बेचैनी से पूछा। अफ़सर ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"अब तुम आज़ाद हो," अफसर ने क़ैदी से उसकी भाषा में कहा। क़ैदी को विश्वास नहीं हुआ।

"तुम्हें आज़ाद किया जाता है," अफ़सर ने दोहराया।

क़ैदी का चेहरा चमकने लगा। जो कुछ वह सुन रहा है, क्या सच है? या अफ़सर की कोई सनक, जो कुछ देर बाद बदल जाएगी? क्या विदेशी ने इससे उसके प्राणों की भीख मांग ली है। जो भी हो, क़ैदी आज़ाद होना चाहता था। दरांती में जिस सीमा तक गुंजाइश थी, उसने संघर्ष शुरू कर दिया।

"तुम मेरे पट्टे तोड़ दोगे," अफ़सर ने डपटकर कहा, "चुपचाप पड़े रहो। हम खोल रहे हैं।" सिपाही को संकेत करने के बाद उसने क़ैदी को खोलना शुरू कर दिया। क़ैदी को हंसी आ रही थी। उसने पहले अफ़सर को देखा, फिर सैलानी को, फिर सिपाही को।

"इसे बाहर निकालो," अफ़सर चीखा। सुइयों की वजह से इस काम में विशेष सावधानी की ज़रूरत थी। क़ैदी ने बेसब्री में अपनी पीठ को खुरच लिया था। इसके बाद अंत तक अफ़सर ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

अफ़सर तेज़ी से सैलानी के पास आया। जेब से ब्रीफकेस निकाला

Scanned with OKEN Scanner

और अंदर के कागज़ों को इधर-उधर किया। अंत में एक कागज़ निकालकर सैलानी के सामने फैलाता हुआ बोला, "इसे पढ़ो!"

"मैं नहीं पढ़ सकता, पहले ही कह चुका हूं।"

"और पास से देखो," अफ़सर सैलानी के एकदम क़रीब आ गया, ताकि दोनों एक साथ देख सकें। इससे भी बात नहीं बनी तो कनिष्ठ उंगली के संकेत से एक-एक अक्षर पढ़कर बताया," लिखा है–"न्याय पर अडिग रहो।" अब आप पढ़ सकते हैं।

सैलानी कागज़ पर झुक गया। इस डर से कि कहीं वह कागज़ को छू न ले, अफ़सर ने कागज़ परे हटा लिया।

"हो सकता है। मुझे आपका विश्वास है।"

"तब ठीक है," अफ़सर ने आंशिक संतुष्ट होते हुए कहा और हाथ में कागज़ लिए हुए यंत्र की सीढ़ियां चढ़ने लगा। उसने कागज़ को डिज़ाइनर में डाल दिया। फिर चक्कों का क्रम बदलने लगा। यह काफी मेहनत का काम था। कुछ देर के लिए तो वह डिज़ाइनर में बिलकुल ही गुम हो गया।

सैलानी नीचे से लगातार उसकी मेहनत को देख रहा था। उसकी गर्दन अकड़ गई थी। धूप से आंखें चौंधिया गईं थीं। इस समय क़ैदी और सिपाही दूसरे काम में जुटे हुए थे। सिपाही ने बंदूक पर लगे चाकू से क़ैदी के कपड़े क़ब्र के बाहर निकाल लिए थे। कमीज़ बुरी तरह गंदी हो गई थी। क़ैदी पीछे से फटे हुए थे। क़ैदी उसे बाल्टी के पानी से धो रहा था। जब उसने कपड़े पहने तो दोनों को हंसी आ गई। कमीज़ और पतलून दोनों पीछे से फटे हुए थे। क़ैदी को लगा, सिपाही का मनोरंजन होना चाहिए। वह अपने फटे कपड़ों में सिपाही के सामने गोल-गोल नाच रहा था। सिपाही ज़मीन पर बैठा, हथेली से घुटनों को ठोंकता हुआ हंसी से दोहरा हो रहा था।

एक बार फिर अफ़सर ने हर पुर्जे को बारीकी से परखा। डिज़ाइनर को, जो हमेशा खुला रहता था, बंद किया। फिर क़ैदी की ओर देखा। उसे संतोष हुआ कि उसने कपड़े पहन लिए हैं। फिर हाथ धोने के लिए बाल्टी की ओर बढ़ गया। बाल्टी का पानी गंदला हो गया था। अफ़सर के चेहरे पर अफ़सोस उभरा। अंत में उसने अपने हाथ गर्म रेत में ठूंस दिए। इससे उसे तक़लीफ हुई, लेकिन बचने का कोई उपाय नहीं था। इसके बाद वह अपनी जगह पर अकड़कर खड़ा हो गया। वर्दी की जाकेट के बटन खोलते समय दोनों जनाने रुमाल उसके हाथों पर आ गिरे।

"तुम्हारे रुमाल," अफ़सर ने कहा और रुमालों को क़ैदी की ओर उछाल दिया। स्पष्टीकरण के तौर पर सैलानी से कहा, "कमांडेंट की महिलाओं की सौगात!"

हालांकि अफ़सर को जल्दी थी, फिर भी उसने वर्दी के प्रत्येक कपडे को बड़े जतन से उतारा। यहां तक कि जाकेट पर टंगी चांदी की बेलबूटेंदार किनारी को उंगलियों से सहलाया, फुंदनों को हवा में हिलाया। लेकिन इस भावुकता का उसकी बाद की हरक़तों से कोई मेल नहीं बैठता था। जैसे ही वह किसी कपड़े को उतार चुकता, उसे बड़ी निर्ममता से क़ब्र में उछाल देता। उसके शरीर पर रहने वाली अंतिम चीज़ एक तलवार और उसकी बेल्ट थी। उसने तलवार को म्यान से बाहर निकाला, तोड़ा और टुकड़ों को क़ब्र में इतनी ज़ोर से फेंका कि गिरते वक्त तेज़ आवाज़ें हुई।

अब अफ़सर मादरजाद नंगा खड़ा था। सैलानी ने होंठ काट लिए। वह समझ चुका था कि अब क्या होने जा रहा है, लेकिन अफ़सर को रोकने का उसे कोई अधिकार नहीं था। अगर उस दंड-व्यवस्था का (जिसका वह अंतिम प्रतिनिधि था और जिससे उसे इतना मोह था) अंत निकट था, तो अफ़सर एक सही काम कर रहा था। अफ़सर की जगह वह होता तो वह भी यही करता।

शुरू में क़ैदी और सिपाही की समझ में कुछ भी नहीं आया। क़ैदी रुमाल पाकर प्रसन्न था, लेकिन उसकी प्रसन्नता ज्यादा देर तक नहीं टिकी। सिपाही ने एक अप्रत्याशित झटके से रुमालों को अपने कब्ज़े में कर लिया था। अब क़ैदी उन्हें सिपाही के बेल्ट के नीचे से निकालने की कोशिश कर रहा था। वे आपस में मज़ाकिया कुश्ती लड़ रहे थे। अफ़सर बिलकुल नंगा हो गया तो दोनों का ध्यान उसकी ओर गया। क़ैदी की समझ में आ रहा था कि उसके भाग्य में कोई बड़ा बदलाव आ रहा है। जो उसके साथ होने वाला था, अब वही शुरू से अंत तक अफ़सर के साथ होने जा रहा था। उसके लिए इसमें प्रतिशोध था। क़ैदी के चेहरे से एक चुपचाप और खिली हुई मुस्कुराहट आ चिपकी, जो अंत तक बनी रही।

अफ़सर यंत्र में प्रवेश कर चुका था। वह यंत्र से अच्छी तरह से वाकिफ था और देख रहा था कि अब तक वह यंत्र से किस तरह काम लेता रहा है, और यंत्र किस तरह उसकी आज्ञा का पालन करता रहा है। उसने हाथ उठाकर दरांती को चालू कर दिया। दरांती कई बार ऊपर-नीचे होती हुई उतनी ऊंचाई पर स्थिर हो गई, जितनी में अफ़सर समाता था। अफ़सर ने कांपते हुए बिस्तर के किनारे को छुआ। तभी ऊन और रूई वाला डॉट उसके मुंह में घुसने की कोशिश करने लगा। अफ़सर ने एक क्षण प्रतिवाद किया। अंत में उसे मुंह में प्रवेश कर जाने दिया। तभी क़ैदी को ख़्याल आया कि अफ़सर के हाथ-पैर खुले हुए हैं। उसने सिपाही को इशारा किया। दोनों पट्टे कसने के लिए दौड़े। इस बीच अफ़सर ने पैर से लीवर दबाकर डिज़ाइनर चालू कर दिया था। उन दोनों को देखकर उसने पैर पीछे खींच लिए ताकि पट्टे कसे जा सकें। पट्टे कसते ही यंत्र ने अपना काम चालू कर दिया। बिस्तर कांपने लगा; सुइयां अफ़सर के शरीर पर नाचने लगीं; दरांती ऊपर-नीचे होने लगी; सैलानी देखता रहा। तभी लगा जैसे कोई चक्का आवाज़ कर रहा हो।

यंत्र चल रहा था। सैलानी का ध्यान क़ैदी और सिपाही की ओर आकृष्ट हुआ। क़ैदी खुश दिख रहा था। सैलानी को उन पर गुस्सा आ रहा था। वह वहां अंत तक ठहरना चाहता था, लेकिन उन दोनों की उपस्थिति उसे बर्दाश्त के बाहर लग रही थी।

"अपने घर जाओ," सैलानी ने कहा।

सिपाही जाने को तैयार हो गया, लेकिन क़ैदी ने इसे एक सज़ा के रूप में लिया। वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा, फिर घुटनों पर गिरकर गिड़गिड़ाने लगा। सैलानी ने देखा कि मौखिक आदेश से काम नहीं चलेगा। वह पास जाकर उन्हें भगाने को था कि डिज़ाइनर

Scanned with OKEN Scanner

से तेज़ शोर उठने लगा। डिज़ाइनर का ढक्कन धीरे-धीरे उठ रहा था। डिज़ाइनर का ढक्कन उठा और एक तेज़ आवाज़ के साथ खुल गया। फिर एक चक्के के दांत दिखना शुरू हुए। जल्द ही पूरा चक्का दिखने लगा। लग रहा था, जैसे कोई दानवी शक्ति डिज़ाइनर को भींच रही हो, जिससे अंदर के चक्कों के लिए कोई जगह न बची हो। चक्का डिज़ाइनर के सिरे तक आने तक घूमता रहा। अंत में गिरा और रेत में लुढ़कता हुआ एक जगह लेट गया। इसके बाद दूसरा चक्का। इसके बाद अनगिन बड़े, छोटे और बेहद छोटे चक्के। दृश्य को देखकर क़ैदी सैलानी का आदेश भूल गया। वह सिपाही की मदद से चक्कों को पकड़ना चाहता था, लेकिन पीछे लुढ़कते आते दूसरे चक्कों को देखकर डर जाता था।

सैलानी हैरान था। यंत्र विखंडित हो रहा था। सहसा उसे याद आया कि इस वक़्त उसे अफ़सर के पास होना चाहिए। जब अंतिम चक्का भी निकल चुका तो उसने दरांती के अंदर झांककर देखा और आश्चर्य से पाया कि दरांती लिख नहीं रही थी, सिर्फ सुइयों को चुभो रही थी ; न ही बिस्तर उलट रहा था ; बल्कि दरांती की लय के साथ ऊपर-नीचे हो रहा था। सैलानी यंत्र को बंद करना चाहता था क्योंकि यह अफ़सर द्वारा चाही गई कलात्मक मौत न होकर साफ़-साफ़ हत्या थी। उसने हाथ बढ़ाए, तभी दरांती एक तरफ मुड़ी। (जैसाकि अमूमन बारह घंटे के बाद होता था।) शव के सैकड़ों सूराख़ों से रक्त बह रहा था। पानी के नल ने अपना काम बंद कर दिया था। यंत्र अपने अंतिम काम को अंजाम देने में भी असफल रहा। दरांती की बड़ी-बड़ी सुइयों से बिंधा हुआ शव क़ब्र में नहीं गिरा, बल्कि रक्त टपकाता हुआ अधर में झूलता रहा।

"दौड़ो! मदद! सैलानी ने सिपाही और क़ैदी को आवाज़ दी और ख़ुद दौड़कर शव के पैर पकड़ लिए। वह चाह रहा था कि सिपाही और क़ैदी शव का सिर पकड़ लें ताकि उसे ढीला करके क़ब्र में गिराया जा सके। सिपाही और क़ैदी तय नहीं कर पा रहे थे कि मदद करें या नहीं। क़ैदी ने तो भागने की तैयारी कर ली थी। सैलानी को उसके साथ जबर्दस्ती करनी पड़ी और यहीं उसको न चाहते हुए भी शव का चेहरा देखना पड़ा। अफ़सर का चेहरा वैसा ही था, जैसा जीवित अवस्था में हुआ करता था। 'मुक्ति' जिसका वायदा उससे किया गया था, का कोई चिन्ह उसके चेहरे पर नहीं था। यंत्र में जो दूसरों को मिला था, उसे नहीं मिला। अफ़सर के होंठ भिंचे हुए थे। उसकी खुली हुई आंखों में वही ख़ामोशी भरा विश्वास था। माथे के आर-पार एक बड़ा-सा सूजा ठुका हुआ था।

सैलानी, उसके पीछे सिपाही और क़ैदी जैसे ही कॉलोनी के सिरे के घरों के पास पहुंचे, सिपाही ने संकेत किया, "यह रहा चाय-घर!"

यह मकान के निचले तल्ले में एक गुफानुमा जगह थी, जिसकी छत और दीवारें धुएं से काली पड़ चुकी थीं। इसमें सड़क से सीधे प्रवेश किया जा सकता था। चाय-घर कॉलोनी के दूसरे घरों (जो बेहद जर्जर हो चुके थे और कमांडेंट के महलनुमा हेड क्वार्टर तक फैले हुए थे) से भिन्न था। इससे सैलानी को पुराने युग की ताकत का अंदाजा हुआ। वह क़ैदी और सिपाही के साथ टेबलों के बीच से गुज़रता हुआ चाय- घर में दाख़िल हुआ और अंदर से आती ठंडी, नम हवा में लंबी-लंबी सांसें भरने लगा।

"यहां हमारे पूर्व कमांडेंट दफ़्न हैं," सिपाही ने बताया।

"पादरी उन्हें चर्च के अहाते में जगह देने को तैयार नहीं था। उसमें और कमांडेंट के अनुयायियों में झगड़ा हुआ था। अंत में उन्हें यहां दफ़्नाया गया। अफ़सर ने आपको यह इसलिए नहीं बताया क्योंकि इस बात को लेकर वह बहुत शर्मिंदा था। उसने कई बार रात के वक़्त शव को खोद निकालने की कोशिश की, लेकिन उसे खदेड़ दिया गया।"

"क़ब्र कहां पर है?" सैलानी ने पूछा।

सिपाही और क़ैदी उस तरफ भागे, जहां क़ब्र होनी चाहिए थी। वे उसे एक दीवार के पास ले गए, जहां कुछ ग्राहक टेबलों पर बैठे हुए थे। वे बंदरगाह पर काम करने वाले कामगार थे- छोटी, चमकीली और काली दाढ़ियों वाले लोग उनके शरीर पर जाकिटें नहीं थी। वे सिर्फ फटी हुई कमीज़े पहने हुए थे। सैलानी के आते ही वे दीवार से सटकर खड़े हो गए और टकटकी बांधकर देखने लगे।

"कोई अजनबी है, क़ब्र देखना चाहता है," उन्होंने आपस में फुसफुसाकर कहा।

उन्होंने एक टेबल सरकाई। टेबल के नीचे क़ब्र का पत्थर था। एक मामूली-सा पत्थर। उस पर छोटे-छोटे अक्षरों में कुछ खुदा हुआ था। सैलानी ने झुककर पढ़ा लिखा था–"यहां हमारे पूर्व कमांडेंट विश्राम करते हैं। उनके अनुयायियों ने, जो अपने को प्रकट नहीं करना चाहते, यह क़ब्र खोदी और पत्थर लगाया। ऐसी भविष्यवाणी हैं कि कुछ वर्षों बाद कमांडेंट पुनर्जीवित होंगे और इसी जगह से अपने अनुयायियों का नेतृत्व करते हुए पुनः कॉलोनी पर विजय प्राप्त करेंगे।"

पढ़ने के बाद सैलानी उठा। उसने देखा कि उसे घेरकर खड़े लोग मुस्कुरा रहे हैं, जैसे उन्होंने भी इबारत को पढ़ा हो और उसे हास्यास्पद मान रहे हों, और सैलानी से उम्मीद कर रहे हों कि उनका समर्थन करे। सैलानी ने उनमें कुछ सिक्के बांटे, टेबल को यथास्थान रखने की प्रतीक्षा की, और फिर चाय- घर से सीधा बंदरगाह की ओर भागा। चाय- घर में क़ैदी और सिपाही के कुछ परिचित मिल गए थे। उन्होंने उन्हें रोक लिया, लेकिन सैलानी को नदारद पाकर वे भी वहां से भागे। सैलानी बंदरगाह की आधी सीढ़ियां उतर चुका था, जब वे दौड़ते हुए उसके पीछे हो लिए। शायद वे उस पर अंतिम बार दबाव डालना चाहते थे कि उन्हें भी अपने साथ ले ले। जब सैलानी किश्ती वाले से स्टीमर तक पहुंचाने का किराया तय कर रहा था, वे सीढ़ियां उतर रहे थे। जब वे आख़िरी सीढ़ी पर पहुंचे तो किश्ती किनारा छोड़ रही थी। वे छलांग लगाकर किश्ती में पहुंच सकते थे, लेकिन सैलानी ने एक मोटा गांठदार रस्सा उठाकर उन्हें डराया और इस तरह उन्हें छलांग लगाने से रोक दिया।

अनुवाद : वल्लभ सिद्धार्थ

संवाद प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तक 'दंडद्वीप' से साभार

Scanned with OKEN Scanner

एक छोटी महिला

फ्रान्ज़ काफ़्का

वह एक छोटी महिला है; स्वाभाविक रूप से पतली, अच्छी सुसज्जित, जब भी मैं उससे मिलता हूँ, वह हमेशा उसी पोशाक में होती है, जो भूरे-पीले कपड़ों की बनी है, इसका रंग लकड़ी से मिलता-जुलता है। यह व्यवस्थित तरीके से कटा हुआ है तथा इस पर कपड़े के रंग के ही बटन की तरह दिखनेवाले फुदने लगे हैं। वह कभी टोप नहीं पहनती तथा उसके बाल सुलझे हुए हैं, लेकिन ढीले-ढाले ढंग से बँधे हुए हैं। यद्यपि वह पूर्ण रूप से सुसज्जित है, लेकिन वह फुर्तीली है तथा तेजी से चलती है, वास्तव में वह अपेक्षाकृत कुछ ज्यादा ही तेजी से चलती है, उसे अपनी कमर पर हाथ रखकर तथा अपने ऊपरी भाग को अचानक एक ओर आश्चर्यजनक रूप से मोड़ना बहुत पसंद है। उसके हाथ के प्रभाव को महसूस करके मुझे ऐसा लगा कि उसके हाथ में उँगलियों के बीच जितना स्पष्ट अंतर है, वह मैंने पहले कभी नहीं देखा, फिर भी उसके हाथों में कुछ संरचनात्मक विचित्रता नहीं है, ये पूरी तरह से सामान्य हैं।

यह छोटी महिला मुझसे खुश नहीं रहती है, उसे हमेशा मुझमें कुछ-न-कुछ कमी दिखाई देती है। मैं हमेशा उसके साथ कुछ-न-कुछ गलत करता रहा हूँ, मैं हर कदम पर उसे नाराज़ करता रहा हूँ; अगर जीवन को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित किया जाए तथा इसके सभी टुकड़ों का अलग-अलग मूल्यांकन किया जाए तो मेरे जीवन का हर बचा टुकड़ा निश्चित रूप से उसके लिए एक अपमान होगा। कभी-कभी मुझे यह आश्चर्य होता है कि मैं उसके साथ ऐसा क्यों करता हूँ; हो सकता है कि मेरे से संबंधित सब चीज़ें उसके सौंदर्य, सम्मान, उसकी न्याय भावना, उसकी आदतों, परंपराओं, आशाओं आदि को आहत करती हों। मेरा और उसका स्वभाव पूर्णतः असंगत है, लेकिन इससे उसे इतनी परेशानी क्यों होती है? हमारे बीच ऐसा कोई संबंध नहीं है, जो उसे मेरी तरफ़ से परेशान होने को विवश करे। उसे सिर्फ यह करना चाहिए कि मुझे आगंतुक मानकर सम्मान करना चाहिए। मैं एक आगंतुक तो हूँ ही और इसमें मुझे कोई बुराई भी नज़र नहीं आती, बल्कि मुझे इसका स्वागत भी करना चाहिए। उसे सिर्फ मेरे अस्तित्व को नज़रअंदाज करना चाहिए जो कि मैंने कभी भी उसका ध्यान खींचने की कभी कोशिश नहीं की, और न ही कभी करूँगा और स्पष्टतः उसकी पीड़ा का अंत हो जाएगा। मैं अपने बारे में नहीं सोच रहा हूँ कि मैं सिर्फ इस कारण छोड़ रहा हूँ, क्योंकि मुझे उसका रवैया निश्चय ही चिड़चिड़ा देनेवाला लगता है, तथा मैं इस कारण भी इस बात की अनदेखी करता हूँ, क्योंकि मेरी परेशानी उसकी पीड़ा के मुकाबले कुछ भी नहीं है। उसी तरह मैं इस बात से भी भली-भाँति परिचित हूँ कि उसकी परेशानी में मेरे प्रति कोई सहानुभूति नहीं है, वह मुझमें कोई वास्तविक सुधार लाना नहीं चाहती। इसके अलावा उसे मुझसे जो भी परेशानी है, वह इस तरह की नहीं है जिससे कि मेरे विकास में कोई बाधा आए।

फिर भी मेरे विकास की उसे कोई परवाह भी नहीं है, उसे तो बस अपनी किसी वस्तु में व्यक्तिगत रुचियों से ही सरोकार होता है, वे रुचियाँ ये हैं कि उन्हें मेरे द्वारा दी गई अपनी पीड़ा का बदला लेना तथा मेरे द्वारा भविष्य में इस प्रकार की किसी आशंका को रोकना। मैंने तो एक बार पहले ही यह संकेत देने की कोशिश की कि भविष्य में उनके निरंतर आक्रोश के कारण को बंद करने जा रहा हूँ, लेकिन मेरी कोशिशों से ही उसे इतना गुस्सा आया कि भविष्य में मैं वह कभी भी नहीं दुहराऊँगा।

मैं भी एक तरह की जिम्मेदारी महसूस करता हूँ। हम दो अजनबी, जैसे कि मैं और वह अजनबी महिला

हैं, और जो भी हो, सच्चाई यह है कि हमारे बीच किसी प्रकार के संबंध का एक ही कारण है और वह है, वह आक्रोश, जो मैं उसे देता हूँ बल्कि वह आक्रोश देने के लिए वह मुझे उकसाती है, मुझे उससे होनेवाली स्पष्ट शारीरिक पीड़ा के प्रति उदासीन नहीं होना चाहिए। प्रायः बार-बार मुझे यह सूचना मिलती है कि वह प्रातः पीड़ा से पीड़ित है, सोई नहीं है या सिर दर्द की वज़ह से काम करने में असमर्थ है। इसका परिवार इस वजह से परेशान रहता है तथा उन्हें यह समझ नहीं आता है कि उसकी परेशानी का कारण क्या है। केवल मुझे ही यह पता है कि उसकी परेशानी निरंतर है और वह मेरी वज़ह से है। यह सच है कि उसके परिवार की तरह मैं उसके लिए चिंतित नहीं हूँ। वह मजबूत है। कोई भी व्यक्ति जिसके भीतर यह तीव्र भावना होती है, वह संभवतः इसके प्रभावों को भी झेलने में समर्थ होता है। मुझे आशंका है कि उसकी पीड़ाएँ, कम-से-कम कुछेक, मेरे ऊपर सार्वजनिक आशंका उत्पन्न करने के लिए एक दिखावा मात्र हैं। वह गर्व के तौर पर यह कहती है कि मेरा अस्तित्व मात्र ही उसकी पीड़ा का कारण है। मेरे विरुद्ध लोगों से अपील को वह आत्म-सम्मान के लिए एक चुनौती के रूप में देखती है। मेरे प्रति घृणा, बल्कि निरंतर सक्रिय घृणा ही उसे हमेशा मेरे बारे में सोचने को विवश करती है। उसकी इस पीड़ा पर सार्वजनिक चर्चा करना लज्जाजनक है। लेकिन किसी ऐसी चीज़ के बारे में बिल्कुल खामोश रहना जो उसे निरंतर परेशान करता है, वह भी बहुत कठिन है। इसलिए स्त्रीजनित चतुराई के साथ वह मध्य मार्ग चुनती है। वह खामोश तो रहती है पर विषय पर सार्वजनिक ध्यान आकर्षित करने के लिए वह गुप्त वेदना के सभी बाहरी संकेतों को छुपा जाती है। उसे यह उम्मीद थी कि एक बार यदि सार्वजनिक आकर्षण मुझ पर केंद्रित हो जाए तो मेरे विरुद्ध सामान्य सार्वजनिक विरोध उत्पन्न होगा, जो अपनी पूरी शक्ति के साथ उसकी निजी कमजोर घृणा से कहीं अधिक शीघ्रता एवं प्रभावशाली ढंग से मेरी निंदा करेगा। तब वह पृष्ठभूमि में चली जाएगी और राहत की साँस लेगी। सही में यदि ऐसा है तो वह स्वयं को धोखा दे रही है। सार्वजनिक मत उसकी भूमिका अदा नहीं कर सकती। लोग मुझे कभी भी इतना आपत्तिजनक नहीं समझेंगे, यहाँ तक कि अपनी शक्तिशाली सूक्ष्म दृष्टि का उपयोग करके भी। मैं ऐसा भी बिल्कुल बेकार नहीं हूँ, जैसा वह समझती है। मैं कोई गर्व करना नहीं चाहता विशेषकर उस संबंध के विषय में। यदि मैं उपयोगी गुणों के कारण महत्त्वपूर्ण नहीं हूँ, तो निश्चित रूप से मैं उनकी कमी की वजह से भी महत्त्वपूर्ण नहीं हूँ। सिर्फ उसे या उसकी सफेद आँखों में मैं ऐसा प्रतीत होता हूँ, वह किसी को भी यह विश्वास नहीं दिला पाएगी। इस मामले में मैं बिल्कुल आश्वस्त हूँ, क्या मैं आश्वस्त हो सकता हूँ? नहीं बिल्कुल भी नहीं; क्योंकि यदि यह सबको पता चल जाता है कि मेरे आचरण की वजह से वह सकारात्मक रूप से बीमार है तो कुछ लोग उसके बारे में मुझे सूचनाएँ देते रहते, उनको यह पता चलाना मुश्किल नहीं है; या कम-से-कम वे यह प्रभाव देंगे कि उन्हें सब कुछ मालूम है, लोगों को मुझसे यह प्रश्न करना चाहिए कि मैं बेचारी छोटी महिला को क्यों परेशान करता हूँ, तथा क्या मैं उसे इतना परेशान करना चाहता हूँ कि वह मर जाए, या मुझमें इतनी समझ कब आएगी तथा शालीन मानवीय संवेदनाएँ मुझे उसके साथ ऐसा व्यवहार करने से रोकेंगी, यदि लोग ऐसे प्रश्न करेंगे तो मेरे लिए उनके उत्तर देना मुश्किल होगा। क्या मुझे स्पष्ट रूप से यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि मैं बीमारी के इन लक्षणों में विश्वास नहीं करता तथा ऐसा प्रभाव पैदा करना चाहिए कि मैं एक ऐसा इनसान हूँ, जो स्वयं को आरोपों से बचाने के लिए दूसरों पर आरोप लगाता है, वह भी अत्यंत धृष्टता के साथ? और मैं कैसे यह खुले तौर पर कह सकता हूँ कि यद्यपि मुझे यह विश्वास है कि वह सचमुच में बीमार थी, पर मुझे उसके प्रति थोड़ी- सी सहानुभूति नहीं है, क्योंकि वह एक अपरिचित है तथा उसके और मेरे बीच किसी भी प्रकार का संबंध एक तरफ़ा तथा उसकी स्वयं की कृति है। मैं यह नहीं मानता कि लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे; उनकी इसकी गहराई में जाने में रुचि नहीं होगी, वे तो सिर्फ मेरे इस कमज़ोर, बीमार महिला के विषय में दिए उत्तरों को नोट कर लेंगे तथा वह मेरे लिए थोड़ा ही होगा। मेरा कोई भी उत्तर इस प्रकार के मामलों को आवश्यक रूप से प्रेम-प्रसंग के रूप में देखने में लोगों की असमर्थता के विरुद्ध होगा, यद्यपि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि ऐसे किसी संबंध का कोई अस्तित्व नहीं है, यदि ऐसा हो भी तो यह मेरी ओर से होगा न कि उसकी ओर से। मुझे उस छोटी महिला के निर्णय की शीघ्रता तथा निष्कर्ष निकालने की उसकी निरंतर दृढ़ता की प्रशंसा करनी चाहिए, पर ऐसा तब होता जब वह अपने इन गुणों को मेरे विरुद्ध अस्त्र के रूप में प्रयोग नहीं करती। वह मेरे प्रति तनिक मात्र दोस्ती नहीं दर्शाती; इस मामले में वह ईमानदार एवं सच्ची है, तथा यही मेरी अंतिम आशा थी, क्योंकि इस बात की थोड़ी भी आशंका नहीं थी कि कभी भी मेरे प्रति उसका व्यवहार बदलेगा। लेकिन सार्वजनिक मत, जो ऐसे मामलों में पूर्णतः असंवेदनशील होता है, वह पक्षपातपूर्ण होगा तथा मेरा त्याग होगा।

इसलिए मेरे लिए एकमात्र चीज़ यह थी कि मैं समय के साथ बदल जाऊँ, इससे पहले कि लोग इस मामले में हस्तक्षेप करें, ताकि उस छोटी महिला की मेरे प्रति घृणा कम हो सके। वास्तव में, मैंने कई बार स्वयं से पूछा है कि क्या मैं अपनी वर्तमान सोच से इतना खुश हूँ कि मैं बदलना नहीं चाहता था, मैं बदलने की कोशिश नहीं कर सका। यद्यपि मुझे यह करना चाहिए, इसलिए नहीं कि यह ज़रूरी है, बल्कि उस छोटी महिला के मेरे प्रति क्रोध को शांत करने के लिए। मैंने ईमानदारी से यह कोशिश की है, इसके लिए कुछ परेशानियाँ भी उठाई, यहाँ तक कि मुझे फायदा भी हुआ। यह एक प्रकार का ध्यान भंग भी था। कुछ परिवर्तनों के परिणाम भी आए जो बिल्कुल स्पष्ट होने में समय लगा, मैं उस ओर उसका ध्यान आकृष्ट करना नहीं चाहता। उस तरह की चीज़ों का पता उसे मुझसे जल्दी लग जाता है। मेरे दिमाग में क्या चल रहा है, इसका पता भी उसे मेरी अभिव्यक्ति से पहले चल जाता है। लेकिन मेरी कोशिशों को कोई सफलता नहीं मिली। यह कैसे इस तरह संभवतः कर सकता था। उसकी मेरे प्रति घृणा जो मुझे मालूम है, बुनियादी है। उसे कोई भी ख़त्म नहीं कर सकता, यहाँ तक कि मैं स्वयं ख़त्म हो जाऊँ तब भी। अगर उसे पता चल जाए कि मैंने आत्महत्या कर ली है तो उस पर क्रोध छा जाएगा।

Scanned with OKEN Scanner

अब तो मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि इतनी तीक्ष्ण बुद्धिवाली महिला मेरी तरह अपने द्वारा की गई कार्रवाइयों की निरर्थकता एवं उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप ढलने की मेरी मज़बूरी को नहीं समझती है। निश्चय ही, वह यह समझती है, लेकिन स्वभावतः लड़ाका होने के कारण वह यह भूल जाती है, और मेरी दुर्भाग्यपूर्ण मनोदशा, जिसका मैं कुछ नहीं कर सकता क्योंकि यह स्वभावतः ही ऐसा है, और जो मुझे किसी भी उस व्यक्ति को हल्की डाँट लगाने के लिए उकसाता है, जो उग्रतापूर्ण व्यवहार करता है। इस प्रकार स्पष्टतः हमारे संबंध कभी अच्छे नहीं होंगे। सुबह सवेरे जब सुखद मूड में मैं घर छोडूंगा तो मेरी नज़र उसके मुखड़े पर ही पड़ेगी, जो मुझे देखते ही झुक जाता है। उसकी गहरी सजग निगाहें, जो उचटती हुई मुझ पर पड़ती हैं लेकिन फिर भी सब कुछ ताड़ जाती हैं; उसके युवा गालों पर उभरते व्यंग्यात्मक मुसकान, नज़रों में शिकायत, कमर पर रखे हाथ, जो उसे अपना संतुलन बनाने में मदद करते हैं, और तभी क्रोध के वेग से पीली पड़ जाती है तथा काँपने लगती है।

अभी थोड़ा पहले ही मैंने मौका पाकर, पहली बार आश्चर्यजनक अनुभूति के साथ अपने एक अच्छे मित्र से अनौपचारिक रूप से इस बात पर चर्चा की; मैंने एक मामूली घटना के रूप में उसे अपने मित्र को बताया। उत्सुकतावश मेरे मित्र ने उसकी अपेक्षा नहीं की, बल्कि इसे गंभीरता से लिया और उस पर विचार-विमर्श के लिए आग्रह किया। इससे भी ज्यादा उत्सुकता की बात यह थी कि उसने एक विषय विशेष को गंभीरता से नहीं लिया, क्योंकि उसने थोड़े समय के लिए चले जाने की मुझे गंभीर सलाह दी। कोई भी सलाह कम समझने योग्य नहीं हो सकती। यह बात तो बिल्कुल साधारण थी, जो कोई भी इसे निकट से देखता, इसे समझ सकता था, फिर भी यह इतना आसान भी नहीं कि सिर्फ मेरे चले जाने भर से ही सब कुछ सही हो जाएगा, यहाँ तक कि इसका बड़ा भाग भी। इसके विपरीत इस तरह के प्रस्थान से ही मुझे बचना चाहिए। यदि मुझे किसी योजना पर काम ही करना हो तो वह यह होना चाहिए कि इस विषय को मुझे इसकी वर्तमान संकीर्ण सीमा में रखना चाहिए, जिसमें बाहरी दुनिया की कोई संलिप्तता न हो। दूसरे शब्दों में, मैं जहाँ हूँ, वहीं चुपचाप रुक जाना चाहिए तथा जहाँ तक संभव हो उससे अपने आचरण को अप्रभावित रखूँ। मुझे किसी और से इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए, इसलिए नहीं कि यह एक खतरनाक रहस्य है, बल्कि यह एक मामूली एवं विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत मामला है, और इसी कारण इसे गंभीरता से नहीं लेना चाहिए तथा उसे उस स्तर पर ही रखना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर मेरे दोस्त की टिप्पणी बिल्कुल निरर्थक भी नहीं थी। उससे मुझे कुछ नया सीखने को नहीं मिला फिर भी उससे मेरा मूल संकल्प मजबूत हुआ। निकट से देखने पर ऐसा लगता है कि समय के साथ उस मामले में प्रगति हुई है, लेकिन वास्तव में यह इस विषय पर प्रगति नहीं थी, बल्कि मेरा उसे देखने के नज़रिए में बदलाव था। एक ओर तो यह अधिक संगठित, मजबूत और घातक बन गया था तो दूसरी ओर निरंतर तनाव के कारण, जिससे मैं उबर नहीं सकता, चाहे यह जितना भी हल्का हो, इससे मेरा चिड़चिड़ापन बढ़ा ही था। अब मैं इस बात की वजह से कम परेशान हूँ कि मैं मानता हूँ कि मैं समझता हूँ कि किसी निर्णायक संकट की स्थिति में पहुँचना कितना असंभव है; जो कभी-कभी इतना अवश्यंभावी प्रतीत होता है; कोई भी आसानी से छोड़ देता है, विशेषकर जब वह युवा होता है, ताकि निर्णायक क्षणों के पहुँचने की गति को बढ़ा सके। जब कभी भी मेरी छोटी आलोचक मुझे देखते ही बेहोश होती है, एक हाथ से कुर्सी की पीठ को पकड़ते हुए तथा दूसरे हाथ से अपने अंतः वस्त्रों के फीते को तेजी से खींचते हुए जब कुर्सी के एक ओर धँस जाती है, उसके गालों पर क्रोध और निराशा के आँसू बहने लगते हैं, तो मैं यह सोचा करता था कि अब वह क्षण आ गया है तथा मैं अपने लिए जवाब देने के लिए बस बुलाया ही जाने वाला हूँ, फिर भी वह निर्णायक क्षण या बुलावा नहीं था। महिलाएँ तुरंत बेहोश हो जाती हैं तथा लोगों के पास उनकी करतूतों को देखने का समय नहीं होता। और इन वर्षों में वास्तव में क्या घटा है? कुछ भी नहीं, सिवाय इसके कि ऐसे अवसर बार-बार आते रहे हैं, कभी अधिक तो कभी कम उग्रता से, तथा उनका कुलशेष उसी के अनुरूप बढ़ा है। आरंभ में लोग एक निश्चित दूरी बनाते थे तथा तभी हस्तक्षेप करते, जब उन्हें इसे करने का कोई रास्ता दिखाई पड़ता; लेकिन उन्हें ऐसा कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ता। इसलिए अब तक तो उन्हें अपने पर्यवेक्षण पर ही निर्भर रहना पड़ता था, फिर भी वह लोगों को अपने काम में व्यस्त रखने के लिए काफी था; इससे ज्यादा यह कुछ नहीं कर सकता था। फिर भी बुनियादी तौर पर परिस्थिति हमेशा ही ऐसी थी, अनावश्यक तमाशाइयों से भरी, जो हमेशा ही अपनी उपस्थिति को किसी-न-किसी धूर्त बहाने के द्वारा सही साबित करती। कभी-कभी तो वे रिश्तेदार होने का नाटक भी करते तथा बातों की गहराई तक पहुँचने की कोशिश करते, लेकिन उनकी कुल उपलब्धि यह थी कि वे अभी भी मौजूद थे। एकमात्र अंतर यह था कि अब मैं धीरे-धीरे पहचानने लगा था। बहुत पहले मैं यह समझता था कि वे अभी-अभी धीरे-धीरे बाहर से अंदर आए हैं, तथा यह इस बात की व्यापक प्रतिक्रिया की परिणति है तथा ये स्वयं एक संकट को जन्म देंगे। आज मैं यह समझता हूँ कि मूझे मालूम था कि ये तमाशाई शुरू से ही हमेशा से वहाँ मौजूद थे तथा उनका किसी संकट की आवश्यकता से थोड़ा-बहुत या बिल्कुल भी लेना-देना नहीं था। और स्वयं, उसे मुझे इस नाम से गौरवान्वित क्यों करना चाहिए? यदि ऐसा कभी होता है, निश्चय ही कल या कल के बाद भी नहीं, शायद कभी भी नहीं, फिर भी सार्वजनिक मत ख़ुद ही इस बात का फैसला करेगी, जो कि मैं एक बार फिर दुहराता हूँ कि, यह बात उसकी क्षमता के बाहर है। निश्चय ही, मैं भी इससे बच नहीं सकता, लेकिन दूसरी ओर लोगों को इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि मैं भी लोगों की नज़र में अनजान नहीं हूँ। मैंने भी लोगों के बीच एक लंबा जीवन जिया है, वह भी पूरे विश्वास एवं भरोसे के साथ, और यही बात उस छोटी महिला को परेशान करती है। मेरे जीवन में देर से आनेवाली यह महिला, जो मुझे टिप्पणी करने को विवश करती है, कोई भी दूसरा व्यक्ति इसे सहज ही अनसुनी कर देता कि यह महिला ज्यादा-से-ज्यादा बुरा यह कर सकती है कि

शेष पृष्ठ 39 पर

Scanned with OKEN Scanner

ग्यारह बेटे

फ्रान्ज़ काफ़्का

मेरे ग्यारह लड़के हैं। पहला लड़का बाहर से साधारण दिखता है, लेकिन गंभीर एवं चालाक है। फिर भी मैं उसे प्यार करता हूँ जैसा कि मैं अपने सभी बच्चो से करता हूँ। मैं उसे श्रेष्ठ नहीं मानता हूँ। मुझे उसकी मानसिक प्रक्रिया बिल्कुल साधारण लगती है। वह न तो दाएँ, न ही बाएँ और न ही सुदूर देखता है। वह हर समय घूमता ही रहता है, बल्कि अपनी छोटी-सी विचार परिधि में ही चक्कर काटता रहता है।

दूसरा लड़का आकर्षक, छरहरा और गठीला है। लोग साँस रोककर उसे तलवारबाजी करते देखते हैं। वह चालाक भी है और दुनिया का अनुभव भी उसे है। उसे व्यापक अनुभव है, इसलिए हमारा देश उसे देश में रहनेवालों की तुलना में अधिक रहस्य सौंपता है। फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि यह लाभ उसे न सिर्फ और न ही आवश्यक रूप से भ्रमण की वजह से है बल्कि यह उसके अतुलनीय स्वभाव की वज़ह से है, जो उदाहरणार्थ सभी मानते हैं, जिसने कभी भी उसकी नकल करने की कोशिश की। हमें कहना चाहिए कि जब वह पानी में ऊँचा गोता लगाता है, कई बार कलाबाजियाँ खाते हुए, तब भी वह ज़बरदस्त आत्मनियंत्रण में होता है। गोताखोरी के तख़्ते के अंतिम छोर पर खिलाड़ी उसका पीछा करने का अपना साहस और अपनी इच्छा को बनाए रखता है, लेकिन उस क्षण में भी वह हवा में उछलने की बज़ाए अचानक बैठ जाता है तथा क्षमा के तौर पर अपना हाथ ऊपर उठाता है। इसके बावजूद भी (हमें ऐसा बेटा होने पर स्वयं को धन्य समझना चाहिए) मेरा उससे लगाव चिंतामुक्त नहीं है। इसकी बाई आँख दाहिनी आँख से थोड़ी छोटी है तथा कुछ ज्यादा ही फड़कती है। एक छोटी- सी कमी, जो उसके चेहरे को अधिक निर्भीकता प्रदान करती है, अन्यथा कोई भी उसकी आत्म- परिपूर्णता को देखते हुए शायद ही उसकी छोटी आँख की कमी और उसकी फड़फड़ाहट की ओर ध्यान देगा। फिर भी मैं उसका बाप होने के नाते यह करता हूँ। निश्चित रूप से मुझे उसकी शारीरिक कमी से चिंता नहीं होती, बल्कि उसके स्वभाव की थोड़ी अनियमितता, अपनी पूर्ण क्षमता के विकास की असमर्थता, जो सिर्फ मैं ही देखता हूँ, आदि परेशान करती है। दूसरी ओर सिर्फ यही उसे मेरा सच्चा पुत्र बनाती है, क्योंकि यह कमी तो मेरे पूरे परिवार में है, लेकिन उसमें यह थोड़ा ज्यादा स्पष्ट है।

तीसरा बेटा भी आकर्षक है, लेकिन उस तरह नहीं जैसे मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ। उसका चेहरा गायक जैसा सुंदर है– कटावदार होंठ, स्वप्निल आँखें, सिर ऐसा मानो पगड़ी लगाने से और आकर्षक बन जाए, गहरी धनुषाकार छाती, तेजी से ऊपर उठने और गिरनेवाले हाथ, नज़ाकत से बढ़ती टाँगें; क्योंकि वे वजन नहीं सँभाल सकतीं। इसके अलावा उसकी आवाज का टोन भी पूर्ण नहीं था। एक क्षण के लिए वह सुनता है, विशेषज्ञ उसके कान खींचता है, लेकिन लगभग तुरंत ही वह शांत हो जाता है। यद्यपि सामान्य रूप से सभी चीज़ें मुझे अपने इस बेटे को सभी के संपर्क में लाने के लिए लुभाती थीं, लेकिन मैं उसे पृष्ठभूमि में ही रखना पसंद करता हूँ। वह जिद्दी नहीं

Scanned with OKEN Scanner

है, इसलिए नहीं कि वह अपनी कमियों से परिचित है, बल्कि वह निश्छल है। इसके अलावा वह सुखद अनुभव नहीं करता है, मानो उसने हमारे परिवार को तो स्वीकार कर लिया, लेकिन उसे लगता है कि किसी और परिवार से उसका संबंध है, जो उसने हमेशा के लिए खो दिया है। कभी-कभी वह उदास हो जाता है और फिर उसे किसी चीज़ से भी खुशी नहीं मिलती।

मेरा चौथा बेटा सभी बच्चों में शायद सबसे ज्यादा घुलने-मिलने वाला है। अपनी उम्र के बिल्कुल अनुरूप सभी के लिए सहज़ और इसलिए सभी उसे पसंद करते हैं। शायद इस व्यापक प्रशंसा के कारण ही उसका स्वभाव लचीला, चाल स्वच्छंद एवं निर्णय निष्पक्ष होते हैं। उसकी कई टिप्पणियाँ तो बार-बार उद्धृत करने योग्य होती हैं, लेकिन उनमें अधिकांश परेशान करने वाली ही होती हैं। वह इस तरह का व्यक्ति है, जो ज़मीन से तो शानदार उड़ान भरता है, गौरैया की तरह हवा में रास्ता बनाता है और फिर निस्सहाय निर्जन भूमि पर वापस आ जाता है। इन्हीं चीज़ों की वजह से मुझे गुस्सा आता है।

मेरा पाँचवाँ बेटा दयालु एवं सभ्य है। जितना काम करता है, उतनी बातें नहीं करता है। इतना साधारण हुआ करता है कि कोई भी उसकी उपस्थिति में अकेला महसूस करता है। इसके बावजूद उसने कम ही प्रसिद्धि प्राप्त की है। यदि मेरे से पूछा जाए कि यह कैसे हुआ तो मैं शायद ही यह बता पाऊँगा। शायद ही इस संसार की अफ़रा-तफ़री में अपना रास्ता आसान बनाती है और वह निश्चित रूप से निश्छल है। हर किसी के साथ मित्रवत् है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मुझे उसकी प्रशंसा सुनकर अच्छा नहीं लगता है। फिर प्रशंसा इतनी सस्ती लगने लगती है कि स्पष्टतः मेरे बेटे जैसे अनेक प्रशंसनीय लोगों के लिए की जानी चाहिए।

मेरा छठा बेटा पहली नज़र में सभी बेटों में सबसे ज्यादा विचारवान लगता है। उसका सिर हमेशा झुका रहता है। फिर भी वह बहुत बड़ा बातूनी है। इसलिए उसे समझना आसान नहीं है। यदि वह सुस्त है तो वह गहरी उदासी में है, यदि वह सक्रिय है तो वह अत्यधिक बातें करता है। फिर भी हम उसे अपने विचारों में मग्न रहने देते हैं। दिन के उजियारे में वह अपने विचारों से इस तरह लड़ता रहता है मानो सपने में हो। वह कभी बीमार नहीं पड़ता, बल्कि उसका स्वास्थ्य अच्छा है; कभी-कभी वह लड़खड़ाता है, विशेषकर संध्या बेला में, लेकिन उसे किसी सहायता की ज़रूरत नहीं होती और न ही वह कभी गिरता है। शायद उसके शारीरिक विकास के कारण ही ऐसा है कि वह अपनी उम्र से बहुत लंबा है, सामान्य रूप से तो यह भद्दा लगता है, लेकिन व्यापक रूप से उसमें विशिष्ट सौंदर्य है, विशेषकर उसके हाथ और पैर। उसका माथा भी भद्दा है, शायद हड्डियों की संरचना और त्वचा का विकास भी इस कारण प्रभावित हुआ।

सातवें बेटे की अन्य बेटों की तुलना में मेरे से अधिक निकटता है। लोगों को उसकी प्रशंसा करना नहीं आता। यह उसकी विशिष्ट प्रकार की बुद्धि को नहीं समझते हैं। मैं उसे ज्यादा महत्त्व नहीं देता। मैं जानता हूँ कि यह ज्यादा महत्त्व नहीं रखता। यदि लोगों में उसकी प्रशंसा न करने के सिवाय कोई भी खराबी है तो यह निर्दोष है। लेकिन परिवार समूह में मुझे अपने बेटे के सिवाय होने पर मुझे ध्यान नहीं देना चाहिए। वह कुछ हद तक परंपरा के लिए सम्मान पैदा करता है तो कुछ बेचैनी भी और उन दोनों को जोड़ता भी है, कम-से-कम मुझे तो ऐसा लगता है। यह सच है कि अन्य की तुलना में उसे कम ही पता है कि उस उपलब्धि का क्या करूँ। वह कभी भी किसी काम को शुरू नहीं कर सकता है। फिर भी उसकी मनःस्थिति उत्साहवर्धक है तथा आशाओं से पूर्ण भी। मैं कामना करता हूँ कि उसके बच्चे तथा बच्चों के बच्चे भी हों। दुर्भाग्यवश मुझे नहीं लगता कि वह मेरी मनोकामना पूरी करेगा। आत्म-संतुष्टि के साथ मैं यह समझता हूँ कि जितना मैं निंदा करता हूँ तथा जो विश्व मान्यता के विरुद्ध है, वह हर जगह अकेला ही जाता है, लड़कियों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है फिर भी उसके हास्य में कोई कमी नहीं है।

मेरा आठवाँ बच्चा शोकग्रस्त है। मुझे नहीं पता ऐसा क्यों है? वह मुझसे दूरी रखता है फिर भी पितृत्व की गहरी भावना मुझे उससे बाँधे रखती है। समय के साथ इस तक़लीफ़ में कमी तो आई है, वरना पहले तो मैं उसके बारे में सोचते हुए भी काँपने लगता था। वह अपने तरीके से चलता है। उसने मेरे साथ हर प्रकार का संपर्क काट रखा है। निश्चित रूप से अपने कठोर निर्णय के कारण। जब वह बच्चा था तो सिर्फ उसकी टाँगें ही कमजोर थीं, जो अब शायद अपने आप ही ठीक हो गई हैं। वह जो काम करता है, उसमें सफल होता है। पहले तो मैं उससे पूछता था कि सब कुछ कैसा चल रहा है, उसने पिता से ही स्वयं को क्यों अलग कर लिया है और जीवन में उसका मूल उद्देश्य क्या है और अब तो वह इतना दूर है तथा इतना समय बीत गया है कि जो जैसा है वैसा ही रहे तो ठीक है। मैंने सुना है कि वह ही मेरा एकमात्र बेटा है, जिसकी पूरी दाढ़ी है। निश्चय ही उसके जैसे छोटे कद के व्यक्ति पर यह बिल्कुल नहीं जँचता है।

मेरा नौवाँ बेटा आकर्षक है और आँखें जैसा कि महिलाएँ मानती हैं, पिघला देने वाली हैं। इतनी आकर्षक कि कभी-कभी वह मुझे भी मोहित कर लेता, यद्यपि कि मैं जानता कि इस सांसारिक आकर्षक के लिए एक गीला स्पंच ही काफी है। लेकिन उसके बाद उत्सुकता भरी बात यह है कि वह कभी भी मोहित करने की कोशिश नहीं करता है। अपनी ज़िंदगी सोफे पर पड़े तथा छत को ताकते हुए बिता कर वह संतुष्ट रहता है या आँखें बंद करके पड़े रहने में संतुष्ट रहता है। बातें करना उसे पसंद है और वह अच्छी तरह बातें करता है; लेकिन बातें वह सीमित दायरे में करता है। एक बार जब वह उनसे बाहर निकल जाता है, जो उसके लिए मुश्किल नहीं है, क्योंकि वे अत्यंत सीमित हैं; वह कहता है कि वह बिल्कुल खाली है। कोई उसे रुक जाने का संकेत करता है, यदि किसी को आशा है कि ये उम्मीदी आँखें संकेतों के प्रति सचेत हैं।

मेरे दसवें बेटे का चरित्र अनिष्ठापूर्ण समझा जाता है, मैं पूरी तरह से न तो इसकी पुष्टि करता हूँ, न ही इससे इनकार करता हूँ। निश्चय ही जब कोई भी उसे अपनी दुगुनी उम्र वाले की तरह नव्यता से चलते देखेगा, बटन लगा फ्रॉक कोट पहने, सिर पर पुरानी, लेकिन साफ़-सुथरी टोपी पहने, भावहीन चेहरों, उभरी ठुड्डी, अपने पीछे रोशनी को छुपाते उभरे पलक; प्रायः होंठों पर रखी दो उँगलियाँ, कोई भी ये

Scanned with OKEN Scanner

देखकर सोचने को विवश होगा कि वह कितना बड़ा धूर्त है। फिर उसे सिर्फ बोलते हुए देखिए ! कितनी समझ और विचार से पूर्ण, जीवंतता के साथ विश्व के बिल्कुल अनुरूप; ऐसी अनुरूपता जो कि स्वाभाविक, आश्चर्यजनक तथा आनंददायक है; आवश्यकता की अनुरूपता जिससे गला गर्व से ऊँचा हो जाता है और शरीर गर्व से भर जाता है। कुछ लोगों को, जो स्वयं को चालाक समझते थे तथा उसके बाहरी हाव-भाव के कारण उससे घृणा करते थे, वे भी अब उसकी बातचीत से प्रभावित होकर उसके प्रति गहरा लगाव महसूस करते हैं। दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो उसके हाव-भाव से तो अप्रभावित हैं लेकिन वे उसकी बातचीत को धूर्ततापूर्ण मानते हैं। मैं पिता होने के नाते उसके लिए कोई फैसला नहीं करूँगा, लेकिन इतना ज़रूर स्वीकार करता हूँ कि पहली श्रेणी के आलोचकों की तुलना में दूसरी श्रेणी के आलोचकों को अधिक गंभीरता से लेने की जरूरत है।

मेरा ग्यारहवाँ बेटा बड़ा ही नाज़ुक है, शायद सब बेटों में सबसे कमज़ोर, लेकिन भ्रामक, क्योंकि कभी-कभी तो वह शक्तिशाली और दृढ़ हो जाता है, फिर भी अंतर्निहित कमज़ोरी हमेशा ही होती है। लेकिन यह कोई लज्जित करनेवाली कमज़ोरी नहीं है, बस यह एक कमज़ोरी भर है, जो कभी घटती-बढ़ती रहती है। इस प्रकार के लक्षण ही मेरे बेटे की विशेषता हैं। निश्चय ही, ये ऐसे लक्षण नहीं हैं जिससे किसी पिता को खुशी होगी; बल्कि इससे तो किसी परिवार पर नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। कभी-कभी तो वह मेरी ओर ऐसे देखता है मानो कुछ कहेगा, "पिताजी, आपको मैं अपने साथ ले जाऊँगा।" तब मैं सोचता हूँ, "तुम ही वह अंतिम व्यक्ति हो जिस पर मैं विश्वास रखता हूँ।" लेकिन फिर उसका चेहरा यह कहता प्रतीत होता है, "ठीक है फिर तो मुझे कम-से-कम अंतिम ही रहने दीजिए।"

ये मेरे ग्यारह बेटे हैं।

अनुवादक : अरुण चन्द्र

...पृष्ठ 36 का शेष भाग

एक छोटी महिला

सार्वजनिक मत को प्रभावित कर सके, जिसने बहुत पहले ही मुझे समाज के एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया है। आज यही स्थिति है, और इससे मुझे प्रभावित होने की तनिक संभावना है।

तथ्य तो यह है कि समय के साथ मेरे में भी कुछ नकारात्मक बदलाव आए हैं, लेकिन उसका इस विषय से कुछ सरोकार नहीं है। कोई व्यक्ति किसी की घृणा का निरंतर केंद्र बनना बर्दाश्त नहीं कर सकता है; जबकि वह जानता है कि यह घृणा अकारण है, निराधार है। तब वह परेशान हो जाता है; तब वह अंतिम निर्णय की अपेक्षा करने लगता है तथा एक समझदार व्यक्ति की तरह उसे यह विश्वास होता है कि ऐसा निर्णय अभी आनेवाला नहीं है। आंशिक रूप से भी, यह बढ़ती उम्र के लक्षण हैं। यौवन हर चीज़ को आकर्षक बना देता है तथा भद्दे लक्षण यौवन की उफ़नती ऊर्जा में कहीं गुम हो जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति की युवक के रूप में निगाहें चौकस हैं तो कोई इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता, यहाँ तक कि वह व्यक्ति स्वयं भी। लेकिन जो चीज़ें बुढ़ापे तक साथ रहती हैं, वे हैं अवशेष। हर चीज़ आवश्यक है, कुछ भी नया नहीं है। हर चीज की जाँच-परख जारी है तथा किसी उम्रदराज व्यक्ति की निगाहें स्पष्टतः चौकस हैं तथा उन्हें पहचानना मुश्किल भी नहीं है। उसकी स्थिति में सिर्फ यह ही वास्तविक गिरावट नहीं है, इस मामले में भी यही बात है।

यदि किसी भी दृष्टिकोण से मैं इस मामले पर विचार करूँ तो ऐसा लगता है, कि यदि मैं इस पर अपना हाथ रखूँ तो चाहे बहुत हलके से भी, मैं लोगों की भावनाओं से अप्रभावित हुए बिना तथा उस महिला के सारे आक्रोश के बावजूद आनेवाले समय में शांतिपूर्वक एक लंबा जीवन जीऊँगा, मैं इस बात के प्रति दृढ़ हूँ।

अनुवादक : अरुण चन्द्र

भारतीय ज्ञानपीठ की मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला (जैन धर्म) की पुस्तकें लोदी रोड, नयी दिल्ली पर उपलब्ध

भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला के अंतर्गत जैन धर्म की धार्मिक और सांस्कृतिक पुस्तकों का प्रकाशन एवं बिक्री का कार्य यथावत किया जा रहा है। ये सभी पुस्तकें हमारे कार्यालय **18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110003 (साई बाबा मंदिर के ठीक पीछे, समीपतम मेट्रो स्टेशन जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम) में उपलब्ध हैं।** लेखक पुस्तक प्रकाशन हेतु एवं पाठक व संस्थाएँ पुस्तकें खरीदने के लिए यहीं सम्पर्क करें। हमारी कोई और शाखा नहीं है।

डाक से पुस्तकें मँगाने के लिए हमारी
ई-मेल : sales@jnanpith.net तथा gmbharatiyajnanpith@gmail.com
पर अपने आर्डर भेजें।

फोन : 9350536020, 9810015517 (Whatsapp) 011-41523423, 24626467

Scanned with OKEN Scanner

फ्रान्ज़ काफ़्का की दो लघुकथाएँ

अजीब भ्रम

एक आम अनुभव जिसकी परिणीति व्यापक भ्रम में हुई। 'अ' को 'ब' से 'ह' में एक महत्वपूर्ण कार्य के लिए मिलना था। 'अ' शुरुआती बातचीत के लिए 'ह' तक गया और इस यात्रा को दस मिनट में पूरा किया और उतना ही समय लगाकर वापस घर लौटा और अपने परिवार के सामने 'ब' से साक्षात्कार की शेखी बघारता रहा। अगले दिन वो सौदा पक्का करने के लिए फिर 'ह' लौटा। चूँकि इसमें कई घंटे लगने वाले थे, इसलिए 'अ' सुबह घर से बहुत जल्दी निकला। हालाँकि 'अ' की समझ और हिसाब से सारी परिस्थितियाँ पिछले दिन के समान ही थीं फिर भी आज उसे 'ह' तक पहुँचने में दस घंटे लग गए। शाम को जब वह 'ह' तक पहुंचा तो वो काफी थका हुआ था लेकिन उसे बताया गया कि उसकी अनुपस्थिति से नाराज़ 'ब' आधे घंटे पहले ही 'अ' के गाँव की ओर रवाना हो चुका है और हो सकता है दोनों एक समय में एक ही रास्ते से आमने-सामने से गुज़रे हों। 'अ' को वहीं इंतज़ार करने की सलाह दी जाती है। लेकिन सौदा तय होने की घबराहट में 'अ' जल्दी से वापस घर लौटने लगता है। इस बार उसे इस बात का ध्यान नहीं रहता कि उसने यह यात्रा कुल एक क्षण में पूरी कर ली है। घर पर उसे पता लगता है कि 'ब' तो बहुत पहले ही आया था, 'अ' के निकलने के तुरंत बाद ही। उसके मुताबिक 'अ' से उसकी मुलाकात चौखट पर ही हुई थी और उसने 'अ' को सौदे के बारे में ध्यान भी दिलाया था। लेकिन 'अ' ने कहा कि उसके पास बिल्कुल समय नहीं है उसे तत्काल कहीं जाना है। 'अ' के इस अजीबोगरीब व्यवहार के बावजूद 'ब' रुका और 'अ' के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। ये भी सच है कि 'ब' ने कई बार पूछा भी कि 'अ' लौटा या नहीं। हालाँकि वो अभी भी 'अ' के कमरे में बैठा उसका इंतज़ार कर रहा है। 'ब' से फिर मिलने और उसको सब कुछ समझाने का मौका मिलने पर 'अ' ख़ुशी से अपने कमरे की ओर दौड़ा। वो ऊपर तक पहुंचा तभी लड़खड़ा कर गिरा और उसके पैर में मोच आ गई। 'अ' दर्द से लगभग बेहोश होने की कगार पर था, उससे चीखा भी नहीं जा रहा था। बस अँधेरे में उसकी हल्की-सी कराह निकल रही थी, जब उसे लगा कि 'ब' उसके पास या बहुत दूर से, ये तो बताना असंभव था, बहुत गुस्से में सीढ़ियों से धड़धड़ा कर उतरा और हमेशा के लिए ओझल हो गया।

(अनुवादः केशव चतुर्वेदी)

नया वकील

हमारे पास एक नया वकील है, डॉ. ब्यूसेफ्लास। उसकी शक्ल-सूरत में ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपको यह याद दिला सके कि वह ₹एक बार मैसेडोनिया का सिकंदर था।₹ बेशक, यदि आप उसकी कहानी जानते हैं, तो आप कुछ जानते हैं। लेकिन एक साधारण प्रवेशक भी, जिसे मैंने एक दिन अदालत के सामने की सीढ़ियों पर देखा था, कोर्ट का एक व्यक्ति, रेसकोर्स में सीमित रूप से छोटे पंटर के पेशेवर क़द वाला, इस वकील को प्रशंसात्मक नज़र से देख रहा था क्योंकि वह दृढ़ सक्रियता के साथ संगमरमर की सीढ़ियों पर चढ़ रहा था जो उसके पैरों के नीचे बज रही थीं।

सामान्य तौर पर बार ब्यूसेफ्लास के प्रवेश को मंजूरी देता है। आश्चर्यजनक अंतर्दृष्टि के साथ लोग ख़ुद को बताते हैं कि, आधुनिक समाज जैसा है, ब्यूसेफ्लास एक कठिन स्थिति में है, और इसलिए, दुनिया के इतिहास में उसके महत्व को देखते हुए, वह कम से कम एक दोस्ताना स्वागत का हक़दार है। आजकल-इससे इनकार नहीं किया जा सकता- सिकंदर महान मौजूद नहीं है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो लोगों की हत्या करना जानते हैं; दावत की मेज पर से एक दोस्त को भाले से गुलाबी करने के लिए आवश्यक कौशल की कमी नहीं है; और कई लोगों के लिए मैसेडोनिया इतना सीमित है कि वे फिलिप, पिता, को कोसते हैं-लेकिन कोई भी नहीं, बिल्कुल भी नहीं, भारत की ओर पथ प्रज्वलित करने के लिए। यहां तक कि उनके समय में भी भारत के द्वार पहुंच से परे थे, फिर भी राजा की तलवार ने उन्हें रास्ता दिखाया। आज द्वार सुदूर और ऊंचे स्थानों पर सिमट गये हैं; कोई रास्ता नहीं दिखाता; बहुत से लोग तलवारें तो ले जाते हैं, परन्तु केवल उन्हें लहराने के लिये, और जो आँख उनका पीछा करने का प्रयत्न करती है, वह भ्रमित होती है।

तो शायद यह वास्तव में सबसे अच्छा है, वही है जैसा कि ब्यूसेफालस ने किया है-ख़ुद को कानून की किताबों में समाहित कर लें। लैंप की शांत रोशनी में, उसके दोनों बगल सवार की जाँघों से निर्बाध, युद्ध के कोलाहल से मुक्त और दूर, वह हमारी बृहत् ग्रंथों को पढ़ता है और पन्ने पलटता है। (अनुवाद : स्वाति शर्मा)
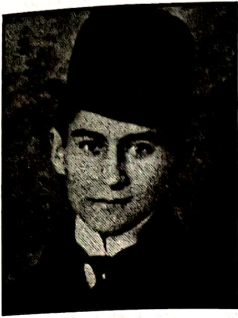
फ्रांज काफ़्का की दो कविताएं

इन्हें काफ़्का ने 9 नवंबर, 1903 (बीस साल की उम्र में) अपने स्कूल के दोस्त ऑस्कर पोलाक को लिखे एक पत्र में शामिल किया था, अपने 'खाली समय में' पढ़ने के लिए।

सोलह जनवरी

सोलह जनवरी। ये पिछले सप्ताह ही था
जैसे हुआ एक पूर्ण पतन। असंभावना
सोने की, असंभावना जागने की,
असंभावना जीवन को जीवन के
सिलसिलेवार रूप की सटीकता से ढोने की।
घड़ियाँ एक दूसरे से मेल नहीं खातीं।
मेरा आन्तर एक नारकीय, या
राक्षसी, नहीं तो अमानवीय
प्रकार से शिकार करता है।
मेरा बाह्य मंथर गति से अपने
नियमित रास्ते पर चलता है। और क्या ही
हो सकता है जब ये दोनों
अलग अलग लोक टूटते हैं,
एक दूसरे से भयावह प्रकार से
दूर होते हैं। ये अकेलापन
जिसका ज़्यादा भाग मुझ पर थोपा गया,
उसका कुछ भाग मेरे उसे ढूंढने का नतीजा है
(हाँ, ये ज़बरदस्ती के सिवाय और हो ही क्या सकता है)
अब बिलकुल गैर-दोहरा और स्पष्ट हो गया है
और उठ गया है

बाहर की अति कहाँ ले जाती है?
ये, ऐसा प्रतीत होता है, कि अनिवार्यतः
पागलपन की ओर ही ले जाती है।
इस बारे में और कुछ नहीं कहा जा सकता।
शिकार मेरे अंदर से गुज़रता है और मुझे चीर देता है।
या मैं ये कर सकता हूँ-भले ही केवल एक बार के लिए-
इसे मुझे सीधा पकड़े रहने दूँ और
शिकार में घसीटने दूँ।
फिर मैं कहाँ से आऊंगा? शिकार करना तो बस एक
छवि है- ऐसा भी कहा जा सकता है :
आक्रमण, अंतिम सांसारिक सीमा के विरुद्ध।

ठंडा और कठोर

ठंडा और कठोर है आज का दिन।
बादल जम रहे हैं।
हवाएँ तनी हुई रस्सियां हैं।
लोग जम रहे हैं।
पदचाप धातु जैसी सुनाई देती हैं
अयस्क के पत्थरों पर,
और आँखें देखती हैं
विशाल सफ़ेद झीलें।

पुराने शहर में खड़े हैं
छोटे चमकीले क्रिसमस घर,
उनकी रंगीन खिड़कियाँ बाहर तकती हैं
बर्फ़ से ढकी जगहों को
चांदनी बिखरी हुई जगहों पर
चुप चाप चलता है
एक आदमी बर्फ़ में आगे की ओर
उसकी बड़ी छाया को
उड़ाती है हवा घरों के किनारे।
लोग जो अँधेरे पुलों को पार करते हैं
सामने से संतों के
मंद रौशनी में।

बादल जो स्लेटी आकाश में
तैरते हैं ऊपर से धुंधले मीनारों वाले
गिरजाघरों के।
वो जो झुका हुआ है चौकोर रेलिंग पर
और शाम के पानी को देख रहा है
प्राचीन पत्थरों पर हाथ टिकाए।

(स्वाति शर्मा का जर्मन से अनुवाद)
ई-मेल: swatisharma.mails@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

काफ़्का पर मिलेना के प्यार के हमले

पीएत्रो चितातो

अप्रैल 1920 के शुरू में टीबी का इलाज कराने काफ़्का मेरानो पहुँचा। जब ओटोबर्ग अतिथिग्रह को उसने पहली मर्तबा देखा, वह उसे भाया नहीं और किसी 'पारिवारिक मकबरे' या 'साधारण कब्र' से ज्यादा कुछ नहीं लगा। कुछ दिनों बाद 10 अप्रैल को वह वापस वहाँ लौटा; ओटोबर्ग अतिथिग्रह इस बार क़ब्रिस्तानों जैसे माहौल के बावजूद या शायद इसी वजह से उसे पसन्द आ गया। सभी मेहमान जर्मन ईसाई थे। काफ़्का ने अपने खाने के लिए एक अकेली मेज़ का आग्रह किया था क्योंकि वह शाकाहारी था और हरेक कौर को सौ बार चबाया करता था। मगर जैसे ही वह अपनी मेज़ पर बैठा, मुख्य मेज के प्रधान, एक कर्नल, ने उसे इतनी विनम्रता से आमन्त्रित किया कि काफ़्का मना नहीं कर सका। सबसे ज्यादा उसे अपने कमरे की बालकनी पसन्द थी-उसका कमरा पहली मंजिल पर था और बालकनी पर खड़े होकर झाड़ियों से ढँके बगीचे को देखा जा सकता था। कमरे में भरपूर सूरज आया करता। चिड़ियाँ और छिपकलियाँ उस से मिलने आते और पार्श्व में खड़ी पेड़ों जितनी ऊँची फूलों से लदी झाड़ियाँ किसी रंगमंच का प्रभाव देती थीं। दिन के ज्यादातर समय वह बिना कपड़े पहने बालकनी में लेटा रहता था। एक दिन उसकी बगल में एक गुबरैला गिर पड़ा था, जो वापस अपनी टांगों पर सीधा नहीं हो पा रहा था; काफ़्का ने उसकी मदद नहीं की क्योंकि वह मिलेना की चिट्ठी पढ़ रहा था; कहीं से आई एक छिपकली ने उसे सीधा किया, गुबरैला निश्चेष्ट पड़ा रहा मानो मर गया हो, फिर अचानक तेज़ी से भागता

हुआ दीवार पर चढ़ गया।

अप्रैल के उन दिनों में काफ़्का ने विएना में एक अत्याचारी पति के साथ दुखी जीवन बिता रही चेक युवती मिलेना जेसेन्स्का को दो चिट्ठियाँ लिखीं। मिलेना से उसकी मुलाकात अक्टूबर 1919 के दौरान प्राहा में हुई थी जब मिरीना ने कहा था कि वह उसकी कहानियों का चेक भाषा में अनुवाद करना चाहती थी। जहाँ काफ़्का को फेलीस के चेहरे का एक-एक विवरण रटा हुआ था, मिलेना के चेहरे की उसे ज़रा भी याद नहीं थी—उसकी स्मृति में एक आकृति थी, एक पोशाक थी और एक आभामण्डल। इस कमज़ोर स्मृति को काफ़्का ने बार-बार उलटा-पलटा, उसे अहसास हुआ कि मिलेना की नाजुक शख़्सियत के नीचे किसानों जैसी ताज़गी थी; विएना से आने वाले पत्रों की संख्या बढ़ती गई और इन पत्रों से मिलने वाली छवियों की मदद से काफ़्का ने एक सुदूरतम छवि का निर्माण किया। मिलेना की पत्र-लेखन की शैली काफ़्का के लिए उसकी आँखों की रोशनी, उसकी देह और हाथों की भंगिमा, और उसके होंठों की साँस बन चुकी थी— लेकिन जब वह चेहरे की कल्पना करता तो उसे केवल आग नज़र आती थी। मिलेना ने लिखा था कि वह विएना में अब "साँस भी नहीं ले सकती।" उसकी उदासी ने काफ़्का को आकर्षित किया और एक शर्मीले साहस के साथ काफ़्का ने उसे मेरानो आने का न्यौता दिया—

मैं सलाह नहीं दे रहा—दे भी कैसे सकता हूँ? —मैं तो बस पूछ रहा हूँ—तुम कुछ दिन के लिए विएना छोड़ क्यों नहीं देतीं? दूसरे लोगों की तुलना में तुम्हारे

Scanned with OKEN Scanner

पास कोई देश तो है ही। क्या बोहेमिया में रहने से तुम्हें ऊर्जा नहीं मिलेगी? और अगर कोई ऐसी वजह है जो तुम्हें बोहेमिया जाने से रोकती है तो शायद मेरानी भी कोई बुरी जगह नहीं।

नैसर्गिक जल्दबाज़ी के साथ काफ़्का ने तुरन्त मिलेना को अपने सारे राज़ बता दिए, मानो वह उसे लम्बे समय से जानता रहा हो– उसका क्षयरोग, क्षयरोग का मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण, उसकी सगाई, उसका अपराधबोध। क्या ऐसा उसने सिर्फ फेलीस और मिलेना के साथ किया? या उसके भीतर दूसरों के सामने ख़ुद को खोल देने वाला एक अलग अकेला इन्सान था? न केवल काफ़्का ने उसके सामने अपना दिल खोला, उसने कोशिश की कि मिलेना भी वैसा ही कुछ करे। बहुत जल्दी ही वह उससे सम्बन्धित हरेक चीज़ को जानने की जिज्ञासा से भर गया–ठीक जैसा फ़ेलीस के साथ हुआ था, हालाँकि इस बार जिज्ञासा इतनी तीव्र नहीं थी। "क्या तुम्हारा घर सुन्दर है?"–एक बार वह पूछता है। उसके बाद वह मिलेना को स्वास्थ्य की बेहतरी को लेकर भी कुछ सुझाव देता है। अपने सावधानी भरे शाब्दिक चुम्बनों और स्पर्श की मदद से काफ़्का ने उसे अपने संसार की तरफ खींचना शुरू किया।

ऐसा नहीं है कि जर्मन भाषा पर तुम्हारा पूरा अधिकार नहीं। आमतौर पर तुम्हारा लेखन शानदार होता है और जहाँ भी तुम उतना अच्छा नहीं लिख पातीं, ख़ुद भाषा तुम्हारे आगे झुक जाती है और यह दुनिया की किसी भी चीज़ से सुन्दर होता है; आमतौर पर कोई भी जर्मनभाषी अपनी भाषा से ऐसी उम्मीद नहीं रखता क्योंकि वह इस कदर निजी तरीके से लिखने की हिम्मत ही नहीं कर सकता। लेकिन मैं चाहूँगा कि चेक भाषा में तुम्हारी लिखी चीज़ें पढ़ पाऊँ क्योंकि चेक तुम्हारी अपनी भाषा है और उसी में तुम पूरी तरह मिलेना हो सकती हो...

उसके दिल में उमड़ी इस हलचल ने उस की नींद उड़ा दी जबकि मिलेना सुकून से सोया करती थी। एक ही साथ एक लड़के और एक बुज़ुर्ग का लहजा लाते हुए काफ़्का ने लिखा–

तो अगर रात को नींद मुझे अनदेखा कर गुज़र भी जाती है, मैं जानता हूँ वह किस रास्ते गई होगी और मैं इस बात को स्वीकार कर लेता हूँ।

वह जानता था कि नींद सबसे बड़ी कृपा होती है और यह भी कि अनिद्रा का शिकार वह सबसे बड़ा अपराधी था। लेकिन एक बार उसने कहा कि अगर उसे नींद नहीं आती तो इसकी वजह यह है कि उसके शरीर का कोई भार है ही नहीं, सो नींद नाम के भारीपन में प्रवेश करने की जगह वह ऊपर टँगी रहती है–कई बार तो छत की ऊँचाई तक।

इस प्रेम के बड़े हिस्से का निर्माण खुद काफ़्का की कल्पना ने किया था। जहाँ फेलीस उसकी चिट्ठियों की लपट के सामने दबी रहती थी, मिलेना ने अपनी रचनात्मकता और कल्पना की मदद से पत्रों पर

निर्भर इस रिश्ते को ज़बरदस्त ताकत दी। काफ़्का को उसके भीतर आवेगों की आग का भान हुआ। वह ख़ुद एक आग थी और उसकी चिट्ठियाँ आग पैदा करती थीं और काफ़्का ईरानी कहावतों वाला पतंगा था, जो इस आग की लपट में भस्म हो जाया करता। बिना एक-दूसरे से मिले दो आत्माओं के बीच एक दहकता सम्बन्ध बन गया था; दूरी के कारण वे एक-दूसरे के ज्यादा नज़दीक हो गए थे; शारीरिक सम्बन्ध या स्पर्श या चुम्बन ग़ैरज़रूरी थे; इच्छा की निर्मल भावना ही दोनों के लिए पर्याप्त थी। इस तरह दिन भर अपने कमरे में या बालकनी में या बादलों में काफ़्का मिलेना की छवि देखा करता-उसकी प्रेयसी ने दूरी की तमाम हदें पार कर ली थीं और वह हमेशा उसके पास हुआ करती।

सच है कि मेरा कमरा छोटा है मगर तुम्हारे भीतर से इतवार को जो सच्ची मिलेना बाहर निकल आई थी, वह यहाँ मेरे साथ है और उसका इस तरह मेरे साथ होना शानदार है... और मैं यह कह दूँ कि मुझे तुम्हारी कमी का अहसास होता है तो मैं झूठ बोल रहा हूँ–यह सम्पूर्ण और बेहद दर्दभरा जादू है–मैं जहाँ भी जाऊँ तुम मेरे साथ होती हो।

मिलेना के प्यार के हमले के सामने काफ़्का ने समर्पण कर दिया–वह पूरी तरह उस पर निर्भर हो कर किसी परछाई में तब्दील हो गया। फ़ेलीस के साथ बिताए समय में ऐसा कभी नहीं हुआ था। मिलेना के साथ रहते हुए वह हर चीज़ हार गया-अपना नाम भी। कभी-कभी, विशेषतः बाद के दिनों में उसे लगता था कि किसी एक व्यक्ति पर

Scanned with OKEN Scanner

इस तरह निर्भर रहना 'धार्मिक पाप' सरीखा है–इस निर्भरता के कारण उसके भीतर एक वेदना उपजी। यह वेदना प्यार में उपजने वाली नैसर्गिक वेदना से अलहदा थी–यह प्रेम में समर्पण कर देने की वेदना थी। वह बार-बार कहता था कि वह उसकी थी, चाहे वे आपस में कभी न मिल सकें, और यह ज़रूरी था कि मिलेना भी काफ़्का पर वैसी ही निर्भरता महसूस करे–लेकिन काफ़्का जानता था कि ऐसा सच नहीं हो सकता था। उसे मिलेना से विवाह की दरकार न थी। उसे खुशी चाहिए थी–भरपूर, जलती हुई अदम्य खुशी। उसे लगता था कि मिलेना उसकी खुशी के लिए आत्मदाह कर रही है और वह इसके एवज़ में उसे धन्यवाद दिया करता था। फ़ेलीस के साथ हुए लम्बे पत्र-व्यवहार के दरम्यान काफ़्का के भीतर कोई चीज़ बिल्कुल ठस्स रहती थी; यहाँ उसने अपने आप को पूरी तरह मुक्त कर लिया था और ऐसा अनुभव उसे जीवन में कभी नहीं हुआ था। जीवन में पहली बार उसे अहसास हुआ कि मुक्त होने के मानी क्या होते हैं।

उसे तुरन्त ऐसा भी लगने लगा था कि उनके दरम्यान का प्यार बस एक वेदनाभरी काँप बन कर रह जाएगा। उसे भय था कि अपनी तरफ आकृष्ट कर लेने के बाद मिलेना उसे त्रासदी की तरफ धकेल देगी। लेकिन वास्तव में यह अवश्यंभावी अस्वीकार ही उसे मोहक लगता था। ज़रा-सी बात पसन्द न आने पर उस पर हिस्टीरिया का दौरा जैसा पड़ने लगता था और अपनी सुरक्षा और नियन्त्रण खो चुकने के बाद उस पर चिन्ता और पागलपन की लहरें टूटा करती थीं।

हमारे बीच चिट्ठियों का आना-जाना बन्द होना चाहिए, मिलेना। ये हमें पागल बना देती हैं। मुझे पता नहीं होता मैं क्या लिखता हूँ और जवाब में तुम क्या। जो भी हो मैं हर पल काँपता रहता हूँ... मेरी प्रकृति में सिर्फ वेदना है।

मिलेना की आवाज़ जो काफ़्का को विएना में मौजूद रखना चाहती थी, काफ़्का के लिए खुद ईश्वर की भयावह आवाज़ थी जो जब चाहे फरिश्तों को तलब कर सकती थी-फरिश्तों की ही तरह वह किसी डरे हुए बच्चे या कबूतर जैसा था। उसके चारों ओर का संसार ढह जाया करता। मिलेना के पत्र आने पर वह तनावग्रस्त हो जाता था और उसे किसी खोह में छिप जाने की इच्छा होती थी। वह चाहता था कि तूफान सरीखा वह पत्र किसी तरह खिड़की से बाहर उड़ जाए। लेकिन पत्र तो पढ़ा ही जाना होता था। मिलेना को लिखे उसके पत्र प्रवाहमान नहीं होते थे। फेलीस को लिखे पत्रों के बरख़िलाफ वे अस्पष्ट किरचियों सरीखे हुआ करते थे।

मई के अन्त में मिलेना ने उसे प्राहा वापसी के दौरान विएना में रुकने का न्यौता दिया। लेकिन काफ़्का ने इन्कार कर दिया। उसे भय था पहली सगाई जैसी घटना की पुनरावृत्ति हो सकती थी।

मैं नहीं चाहता (मेरी मदद करो मिलेना। मुझे मेरे शब्दों से परे समझने की कोशिश करो!) मैं नहीं चाहता (मैं हकला नहीं रहा हूँ) कि विएना आऊँ क्योंकि मैं आध्यात्मिक स्तर पर इस प्रयत्न

Scanned with OKEN Scanner

को सहारा नहीं दे सकूँगा। मैं आध्यात्मिक रूप से बीमार हूँ और मेरी शारीरिक बीमारी इसी के अतिरेक से जन्मी है। मैं अपनी दो सगाइयों के चार-पाँच सालों के कारण बीमार हूँ।

उसकी वर्तमान मंगेतर जूली ने उसे तार भेजा था–"आठ तारीख़ को कार्ल्सबाद में आने का निश्चित कार्यक्रम बताओ।" काफ़्का ने मिलेना को इस बाबत बताया। "वह बेहद शान्त, विनम्र और बेपरवाह है।" उसने स्वीकार किया कि तार मिलने के बाद वह उसे पढ़ने में ख़ुद को असमर्थ पा रहा था। मानो उस तार के भीतर एक गोपनीय वाक्य था–"अपनी यात्रा के दौरान विएना होते हुए आना।"

वह बचकाने काम किया करता था-वह गौरेया के लिए डबलरोटी का टुकड़ा उछालता था–अगर गौरेया आई तो वह विएना जाएगा। बाद में उसने ज़ोर देकर कहा कि वह विएना नहीं जाएगा। कार्ल्सबाद भी नहीं। और किन्हीं असम्भव कारणों के चलते उसे विएना जाना ही पड़ा तो वहाँ पहुँचकर उसे दिन या रात के भोजन की ज़रूरत नहीं पड़ेगी–वह चाहेगा कि कुछ पल उसके लेटने को वहाँ स्ट्रेचर जैसा कुछ हो। वह अपने विएना अगमन की कल्पना किया करता था और विस्तार में इस दृश्य का वर्णन भी। अन्ततः मिलेना की प्यार भरी हिंसा के आगे उसने सिर झुका ही दिया। हाँ वह जाएगा विएना-जून के आख़िर में। उसने इस यात्रा को सपने में देखा। वह मिलेना का पता भूल गया था–गली, शहर और बाकी सब बस एक नाम–श्राइबर–बार-बार उसके ज़ेहन में आता था और वह नहीं जानता था वह कौन था। मिलेना खो गई थी। हताश होकर उसने तमाम तरह के प्रयत्न किए जिनमें से बस एक उसे याद रह सका। उसने एक लिफाफे पर लिखा–'मिलेना', और उसके नीचे–"कृपया इस पत्र को पहुँचा दें, अन्यथा कोषागार कार्यालय को बहुत नुकसान पहुँच सकता है।" इस प्रयास के माध्यम से वह उम्मीद करता था कि विएना की सरकारी मशीनरी मिलेना को खोज निकालेगी। फिर उसने सपना देखा कि विएना बस एक चौराहा भर है जिसमें मिलेना का घर है। घर के सामने वह होटल है जहाँ काफ़्का ठहरेगा। उसने एक बार फिर से विएना जाने से इन्कार कर दिया। ऐसी यात्रा के लिए उसके भीतर पर्याप्त आध्यात्मिक ऊर्जा नहीं थी।

मिलेना से मुलाकात से पहले ही काफ़्का ने प्राहा में उस लड़की की छवि बना ली थी जिसने वर्षों तक उसके अस्तित्व पर शासन करना था। फेलिस उसके लिए एक पतिव्रता स्त्री सरीखी थी जबकि मिलेना एक शक्तिशाली, जगमगाती ऐन्द्रिक शय थी अलबत्ता उसके आकर्षण में सैक्स का वैसा आकर्षण नहीं था जिसे काफ़्का ने के . और फ्रीडा के सम्बन्ध में दिखाया था। मिलेना का ऐन्द्रिक आकर्षण आदम और हव्वा के पहले के दुनियावी स्वर्ग की छवि था। जैसा कि काफ़्का ने स्पष्ट शब्दों में बयान किया था-मिलेना ' माँ ' थी-यह उसके अपने इन्सैस्ट से भरपूर सपनों से उभरी विराट ऐन्द्रिक मातृछवि थी। जब मिलेना के सामने वह ख़ुद को पाता था, वह किसी बेटे या बच्चे या छात्र की नकल करने लगता–

मैं तुम्हारा छात्र बन कर बार-बार ग़लतियाँ करना चाहूँगा ताकि तुम मुझे डांटा करो।

चूँकि वह माँ थी, इसलिए समुद्र भी थी–अनन्त तक पानी से भरी हुई, उसकी चिट्ठियाँ प्यास बुझाने के पानी जैसी हुआ करती थीं और काफ़्का का प्यार अपनी मुक्त लहरों में मिलेना को डुबो लिया करता। मिलेना के भीतर सारी मातृसुलभ विशेषताएँ थीं–सन्तुलन, शान्ति, विश्वास, स्पष्टता, सच्चाई की ताक़त, झूठ बोलने में अक्षमता; अन्तर्ज्ञान से सुसज्जित बुद्धिमत्ता, साहस, आत्मा का औदार्य और सारी यातनाओं को दूर रखने वाली मिठास।

लेकिन मिलेना की एक और छवि थी-बिल्कुल उलट सांकेतिक छवि–वह चाँद की तरह पवित्र थी, सुदूर और अप्राप्य-समुद्री लहरों को आकृष्ट करने वाली–अँधेरे जंगल में पशुवत काफ़्का के बिल्कुल विलोम थी वह-सुन्दर और कौमार्यपूर्ण। मिलेना की माँ वाली छवि यातनाओं को दूर तो कर देती थी पर उसकी चन्द्रमा वाली छवि इन्हीं यातनाओं को वापस ले आती थी; संसार की यातना उसकी आँखों से चमका करती। वह खुद यातना झेलती थी और दूसरों के लिए यातना का कारण बनती थी–वह यातना की महारानी थी। पत्र-व्यवहार के शुरू में ही काफ़्का ने उसे मौत के फ़रिश्ते के रूप में देख लिया था-जो लोगों के भीतर से शक्ति और मृत्यु को झेलने के साहस को सोख लेता है। लेकिन मिलेना इस से भी ज्यादा भयावह थी। काफ़्का उसकी बुद्धिमत्ता, उसकी ताक़त, साहस, ऊर्जा, उदासी और शान से भयाक्रान्त था। उसके भीतर केवल एक चीज़ इस भय से परे थी-साहित्य । जहाँ फेलीस के साथ उसके सम्बन्ध ने साहित्य को उड़ान दी थी, मिलेना के मीठे और आज़ाद ऐन्द्रिक आलिंगन ने साहित्य को पनाह मुहैया कराई थी।

24 जून को काफ़्का ने मिलेना को लिखा कि मंगलवार 29 तारीख़ को उसने विएना आने का फैसला कर लिया है–"अगर कोई असम्भव बात न घटे तो।" लेकिन उससे मिलने का समय तय कर पाने का साहस उसके भीतर नहीं था, थकान और बेदना से तक़रीबन अचेत वह सुबह दस बजे वहाँ पहुँचा। वह दो रातों से सोया नहीं था। साउथ स्टेशन से ही उसने एक कैफे में बैठकर तुरन्त मिलेना को लिखा-वह अगले दिन दस बजे होटल रेवा में उसकी प्रतीक्षा करेगा।

मैं तुमसे भीख माँगता हूँ मिलेना, कृपया पीछे से आकर मुझे हैरत में मत डाल देना।

इस बीच वह विएना के स्मारक देखने जाने वाला था–लेरनेनफेल्ड से जहाँ मिलेना रहती थी, वह पोस्ट ऑफ़िस जहाँ मिलेना को उसकी भेजी चिट्ठियाँ मिला करती थीं–अगर सम्भव हुआ तो वह चाहेगा उसे कोई न देख पाए। लेकिन अपने इस कदर जटिल प्रेमी से मिलने को मिलेना इतनी देर इन्तज़ार नहीं कर सकती थी–उसने स्टेशन के

Scanned with OKEN Scanner

आसपास के तमाम होटलों में तलाश के बाद 29 जून को किसी पल काफ़्का को खोज ही लिया।

इस तरह विएना में काफ़्का के साढ़े चार दिनों के प्रवास की शुरुआत हुई-मिलेना के साथ उसकी अन्तरंगता इतने ही समय रही। हमें इस समय के बारे में बहुत जानकारी नहीं है; उन्होंने कई घन्टे विएनीज़ वुड्स में बिताए, वे पार्क में ग्रिलपार्जर की मूर्ति के नीचे बैठे रहे, एक स्टेशनरी की दुकान में गए; काफ़्का ने मिलेना का घर और उसका कमरा देखा जिसमें एक भारी भरकम आल्मारी धरी हुई थी; और इतवार की सुबह जब वह जाने वाला था, मिलेना ने "पागलपन की हद तक सुन्दर" पोशाक पहनी हुई थी। यहाँ हमारे पास दो संस्करण हैं-मिलेना का संस्करण पॉज़िटिव और जीवन्त है जबकि काफ़्का का सन्देहों और संशय से भरा हुआ। कुछ महीनों बाद मिलेना ने मैक्स ब्रॉड को लिखा–

उसे जब भी वेदना होती थी वह मेरी आँखों में देखता था; हम एक पल को इन्तज़ार करते थे मानो साँस लेना असम्भव हो, फिर थोड़ी देर बाद वेदना गायब हो जाती थी। किसी भी तरह का प्रयास करने की ज़रूरत नहीं होती थी–सब कुछ सामान्य और स्पष्ट। मैं उसे विएना के बाहर तमाम पहाड़ियों तक घसीटती हुई ले गई, मैं उसके आगे-आगे भागती हुई चलती थी और वह धीमे-धीमे पीछे आता रहता–पैर पटकता हुआ। और अगर मैं आँखें बन्द कर लूँ तो मुझे सूरज से तपी उसकी गरदन पर सफेद कमीज़ का कॉलर और उसका संघर्ष करना दिखाई दे जाता है। वह सारा दिन चलता था–पहाड़ी पर चढ़ता या उतरता, सूरज के नीचे-और वह एक बार भी नहीं खांसा। वह ख़ूब खाता था और चट्टान की तरह सोया करता। उन दिनों वह स्वस्थ था और ऐसा लगता था उसकी बीमारी साधारण ज़ुकाम से ज्यादा कुछ नहीं थी।

काफ़्का ने सभी दिनों के बारे में अलग-अलग बताया-

पहला दिन अनिश्चित था, तो दूसरा बेहद निश्चित, तीसरा ग्लानि और पश्चाताप से भरा और चौथा दिन बढ़िया था।

एक साल बाद उस ने ब्रॉड को लिखा-

रातों से निचोड़े गए उन चार दिनों में मैं ख़ुश था।

इतवार की सुबह सात बजे काफ़्का प्राहा के लिए रवाना हुआ। मिलेना उसके साथ स्टेशन तक आई।

उस पल तुम किस कदर सुन्दर थीं! या शायद वह तुम थी ही नहीं? इतनी जल्दी जागना तुम्हारे लिए कितना अजीब रहा होगा। लेकिन अगर वह तुम नहीं थीं तो तुम्हें सब कुछ इस कदर याद कैसे है?

रविवार को ख़ुशी और उत्साह से लबरेज़ काफ़्का ने उस शाम प्राहा पहुँचने के बाद मिलेना को तीन चिट्ठियाँ भेजीं–

तुम्हारे बारे में सोचने, तुम्हें अपनी साँस में भरने के लिए मुझे ढेर सारा वक़्त चाहिए–जितना है उस से हज़ार गुना ज्यादा।
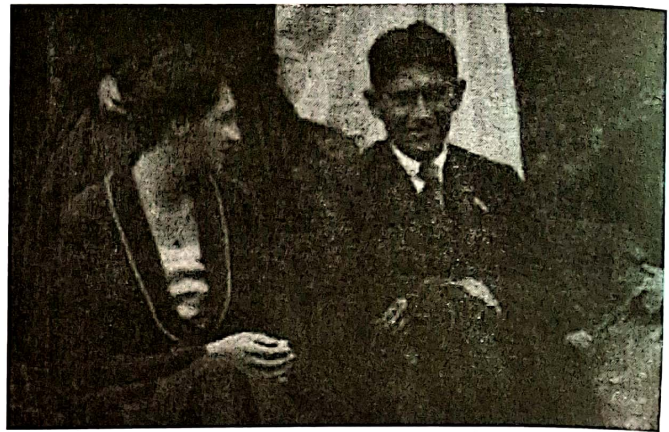
संसार में मिलेना के सिवाय कुछ नहीं बच रहा था। बीते हुए समय और भविष्य का कोई अस्तित्व नहीं बच रहा था। बस वर्तमान था, उसकी नीली आँखों की दिपदिप से भरा हुआ। अपने आनन्दातिरेक में काफ़्का ने एक व्यक्ति को इतनी चोट पहुँचाई जैसा उसने पहले कभी नहीं किया था। अपनी मंगेतर जूली के प्रति वह क्रूरता की हद तक बेरहम हो गया। उसे चार्ल्स स्क्वायर पर मिला और मिलेना की बातें करता रहा उसकी बगल ही बेचारी जूली लगातार काँपती रही। वह कहता गया कि मिलेना के आगे सार पूछा–"मैं अपने आप तो नहीं जा सकती पर तुम दूर भेजोगे तो चली जाऊँगी। क्या जहाज़ जाता है। जूली ने अपना आख़िरी सवाल, तुम मुझसे जाने को कह रहे हो?" "हाँ"–काफ़्का ने जवाब दिया। जूली ने कहा–"लेकिन मैं नहीं जा सकती।" जूली ने जोर देकर कहा कि वह मिलेना को चिट्ठी लिखना चाहती है। काफ़्का यह जानते हुए भी राजी हो गया कि इस वजह से वह दो रातों तक सो नहीं सकेगा। इस पत्र का ट्रैजी–कॉमिक अन्त हुआ। काफ़्का ने जूली से वायदा किया था कि वह मंगलवार को उसके साथ स्टीमबोट पर पिकनिक के लिए जाएगा। लेकिन रात भर जगा होने के कारण उसने पिकनिक का समय छह बजे तक के लिए स्थगित कर दिया और इस बाबत जूली को एक नोट भेजा। नोट में उसने लिखा था कि वह मिलेना को फिलहाल चिट्ठी न भेजे, ₹ हम इस बाबत बात करेंगे ₹ लेकिन जूली सुबह ही मिलेना को चिट्ठी पोस्ट कर चुकी थी। काफ़्का का नोट मिलते ही वह भागती हुई पोस्ट ऑफिस पहुँची और बमुश्किल अपनी चिट्ठी वापस हासिल कर सकी। अपनी सफलता पर प्रसन्न और कृतज्ञ जूली ने अपने बटुए में धरी सारी रकम डाक कर्मचारी को बतौर टिप दे दी।

बृहस्पतिवार की सुबह मिलेना का पहला पत्र आया और मिलेना की छवि एक पल में चकनाचूर हो गई। पत्र मिलेना के पति के बारे में विवरणों से भरा हुआ था; काफ़्का चाहता था विएना जाकर मिलेना को उसके पति से छुड़ाकर प्राहा ले आए। या, उसने प्रस्ताव दिया, मिलेना अपनी दोस्त स्टाशा के साथ खुद ही प्राहा चली आए।

(काफ़्का-पीएत्रो चिताती-अनुवादः अशोक पाण्डे, संभावना प्रकाशन से साभार)

'दिन में एक जादू होता है'

गुस्ताव जैनुक

गुस्ताव जैनुक स्वयं रात में कविताएँ लिखते थे। पिता ने नोट किया कि उनका बिजली का बिल बहुत ज्यादा आ रहा है। खोज की तो पता चला कि उनका बेटा कविताएँ लिखता है। पिता ने एक बार गुस्ताव की कविताएँ पढ़ लीं और अपने दफ़्तर में काम करने वाले काफ़्का को सौंप दीं। वह अपने बेटे को काफ़्का से मिलवाने ले गए। यह 1920 के अन्तिम दिनों की बात है। काफ्का से संबंधित गुस्ताव जैनुक की टिप्पणियों और संस्मरणों का पहला संस्करण 'काफ़्का से संवाद' शीर्षक से छपा। 2006 में हिन्दी पाठकों के लिए वल्लभ सिद्धार्थ ने इसका अनुवाद किया और संवाद प्रकाशन ने इसे 'काफ्का के संस्मरण' शीर्षक से छापा। यहाँ इसी पुस्तक से कुछ अंश साभार ले रहे हैं-

अंशः 1

पिता मुझे दूसरी मंजिल पर लेकर आए। हमने सलीके से सजे-धजे एक हॉलनुमा कमरे में प्रवेश किया। पास लगी दो डेस्कों में से एक के पीछे, एक दुबला-पतला लंबा व्यक्ति बैठा हुआ था। उसके बाल पीछे की ओर खिंचे हुए थे। आँखें अद्भुत, भूरी-नीली, बेहद संकरा माथा और तिक्त मुस्कराते, मधुर होंठ...!

'वही है?' बजाय आगवानी करने के उन्होंने पूछा।

'वही' पिता ने कहा।

'तुम्हें मेरे सामने शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं. क्योंकि मेरे भी बिजली के भारी भरकम बिल आते हैं।'

वे हंसे, मेरा संकोच दूर हुआ।

'तो ये हैं, 'कायंतरण' के रहस्यमय सेम्सा के रचयिता।' मैंने उस सरल-सौम्य व्यक्ति की ओर देखते हुए सोचा।

'तुम्हारी कविताओं में शोर बहुत है,' पिता गए तो काफ़्का ने कहा, 'यह यौवन का बाई प्रोडक्ट है, जो जीवंतता के अतिरेक की ओर संकेत करता है, इसलिए ख़ूबसूरत लगता है, हालांकि कला से इसका कुछ लेना-देना नहीं... इसके विपरीत शोर अभिव्यक्ति का मारक होता है... लेकिन मैं कोई आलोचक नहीं...न ही अपने को झट से किसी अन्य में तब्दील कर सकता हूँ और फिर अपने में लौट कर बीच फ़र्क माप सकता हूँ। तो जैसा कहा है, मैं कोई आलोचक नहीं, बल्कि ख़ुद को बतौर एक दर्शक न्याय के कठघरे में पाता हूँ।'

'और जज...'

उनके चेहरे पर अकुलाहट भरी मुस्कान उभरी,... 'मैं न्यायालय का चपरासी हूँ...हालांकि मैं जज को नहीं जानता...शायद एक विनम्र उपचपरासी, जिसका कोई निश्चित पद नहीं,' काफ़्का हंसे।

'...?'

'निश्चित चीज़ एक ही है मनुष्य की यातना,' उन्होंने गंभीरता से कहा, 'तुम किस समय लिखते हो?'

उनके सवाल ने मुझे चकित किया।

'शाम को, रात को। दिन में बहुत कम। मैं दिन में नहीं लिख सकता।'

'दिन में एक जादू होता है।'

'रोशनी, फ़ैक्ट्री, खिड़कियों और मकानों से मेरी एकाग्रता भंग होती है...'

'एकाग्रता शायद अंदर के अंधेरे से भंग होती है। जब तुम रोशनी से नहाए होते हो तो राहत होती है। अगर मेरी रातें भयानक और निद्राहीन न होतीं, तो मैं कभी न लिखता।'

'क्या यह ख़ुद अपनी कहानी 'कायांतरण' के अभागे तिलचट्टे नहीं?' मैंने बेचैनी से सोचा।

तभी दरवाज़ा खोलकर पिता अंदर आए। मुझे राहत मिली।

काफ़्का की आँखें नीली-भूरी और बड़ी-बड़ी हैं। काफ़्का का चेहरा बोलता है।

जहाँ कहीं शब्दों के बजाय मुद्रा से काम चलता है, काफ़्का चलाते हैं। एक मुस्कान, भौंहों को सिकोड़ना, माथे पर सलवटें, होंठों का खुलना या बंद होना, ये सब काफ़्का के लिए शब्दों के विकल्प हैं। काफ़्का को मुद्राओं से प्रेम है। इसलिए वे इस मामले में मितव्ययी हैं। उनकी मुद्राएँ शब्दों की सहचरी नहीं होतीं, न शब्दों का दोहराव, बल्कि जैसे ख़ुद से संवाद की स्वतंत्र भाषा होती है। काफ़्का यह भी विनम्रतापूर्वक कहते नज़र आते हैं, 'सच है...मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं एक खेल खेलता हूँ। फिर भी उम्मीद करता हूँ कि आपको खेल पसंद आता होगा। आख़िर कुछ देर के लिए मैं आपसी समझदारी चाहता हूँ।'

'काफ़्का आपको बहुत पसंद करते हैं।' मैंने अपने पिता से कहा, 'आप दोनों का परिचय कैसे हुआ?'

'दफ़्तर के मार्फ़त' पिता ने बताया, 'पहला परिचय तब हुआ जब मैंने उनके लिए कार्ड-इंडेक्स केबिनेट का नक़्शा बना कर दिया। काफ़्का को मेरा मॉडल बहुत पसंद आया। फिर हममें बातचीत होने लगी। उन्होंने बताया कि दफ़्तर छूटने पर दोपहर के बाद वे कार्नहासर नामक बढ़ई के कारखाने में बढ़ईगिरी सीखने जाते हैं। फिर हममें व्यक्तिगत बातें होने लगीं। मैंने उन्हें तुम्हारी कविताएँ सुनाईं...इस तरह हम गहरे परिचित हो गए...'

'दोस्त क्यों नहीं?'

पिता ने सिर हिलाया, ' उंहूं...दोस्ती के लिए वे बहुत रिज़र्व और संकोची हैं।'

अंशः 2

अगले दिन काफ़्का दफ़्तर में नहीं थे, इसलिए मैं उनके घर गया। मेरे लिए पहला और अंतिम अवसर जब मैंने उनका घर देखा। काली पोशाक पहने एक शिष्ट महिला ने दरवाज़ा खोला। उनकी सुंदर भूरी-नीली आँखों और नाक के हल्के-से मोड़ से मैंने अंदाज़ा लगाया...ये काफ़्का की माँ हैं।

मैंने अपना परिचय दिया और जानना चाहा कि क्या मैं काफ़्का से मिल सकता हूं?

'वह बिस्तर पकड़े हुए हैं। पूछकर बताती हूँ।'

कुछ मिनट बाद वे लौटकर आईं तो उनके चेहरे की आनंद-दीप्ति को शब्दों में नहीं बताया जा सकता।

'तुम्हारे आने से वे बहुत खुश हैं। तुम्हें कुछ खिलाने को भी कहा। लेकिन कृपया ज्यादा देर मत ठहरना। वे थके हुए हैं...सो भी नहीं पाते...'

मैंने वचन दिया।

काफ़्का अपने छोटे से कमरे में एक सादे बिस्तर पर, जिस पर एक सफ़ेद चादर बिछी हुई थी, लेटे थे। मुझे देखकर वे मुस्कराए,

Scanned with OKEN Scanner

हाथ बढ़ाया, फिर थकान भरी मुद्रा में पायताने की तरफ़ पड़ी कुर्सी की ओर संकेत किया।

'कृपया बैठ जाओ...मैं अधिक देर तक बात नहीं कर सकूंगा... माफ़ करना।'

'माफ़ी मुझे मांगनी चाहिए, जो एकाएक चला आया, मैंने कहा, 'लेकिन मैंने सोचा, मेरे पास आपको दिखाने के लिए एक महत्वपूर्ण चीज़ है...''मैंने अपनी जेब से किताब निकाल कर बग़ल वाली टेबल पर रख दी। और दोस्त के साथ हुई अपनी चर्चा का ज़िक्र किया। जब मैंने कहा कि गार्नेट की किताब 'कायांतरण की नक़ल है, तो उनके होंठों पर एक थकान भरी मुस्कान उभरी।' अपने सिर को असहमतिसूचक जुंबिश देते हुए बोले 'लेकिन नहीं, यह ख़्याल मुझे उससे नहीं मिला। बात हमारे समय की है. हमारे क़ैद की सलाखें यही हैं। हमें मनुष्यों की तुलना में जानवरों के साथ अपनी सादृश्यता अधिक लगती है।'

'क्या मैं आपके लिए कुछ लाऊं?' काफ़्का की माँ पूछ रही थीं।

'नहीं, धन्यवाद। मैं आपको ज्यादा परेशान नहीं करूंगा,' मैंने कहा। माँ ने अपने बेटे की ओर देखा। वे दाढ़ी उठाए, पलकें बंद किए हुए लेटे थे। मैंने कहा, 'मैं सिर्फ़ यह किताब देने आया था।'

काफ़्का ने आँखें खोलकर साइड-टेबल की ओर देखा, 'मैं इसे पढ़ूंगा। अगले हफ्ते दफ़्तर आया तो लेता आऊंगा।'

दस पंद्रह दिन बाद मुझे उनके साथ घर लौटने का अवसर मिला। किताब वापस करते हुए उन्होंने कहा, 'हर व्यक्ति अपनी अपनी सलाख़ों में क़ैद रहता है। यही कारण है कि आजकल लेखक पशुओं के बारे में अधिक लिख रहे हैं। यह एक स्वतंत्र और प्राकृतिक जीवन की आकांक्षा की अभिव्यक्ति है। लेकिन मनुष्य के लिए प्राकृतिक जीवन भी दूसरी तरह का मानव जीवन है। लेकिन वे इसे हमेशा याद नहीं रखते। वे इस तथ्य से इंकार करते हैं कि उनका अस्तित्व उनके लिए एक बोझ है। इससे निज़ात पाने के लिए वे फैंटेसियां लिखते हैं।'

अंशः 3

काफ़्का के ऑफिस पहुंचा तो वहाँ सुनसान था। मेज पर खुले हुए अख़बार इस बात के सबूत थे कि काफ़्का यहीं कहीं हैं। इसलिए मैंने आगंतुकों वाली कुर्सी पर बैठते हुए 'प्रेजर' उठा लिया।

कुछ देर बाद काफ़्का लौटे।

'क्या तुम देर से बैठे हो?'

'नहीं, पढ़ रहा था...' मैंने अख़बार में 'लीग-असेंबली' पर छपा एक लेख दिखाया।

काफ़्का के चेहरे पर असहायता का भाव आया।

'ये लीग...क्या सही मायने में लीग ऑफ़ नेशंस है? मुझे लगता है कि लीग ऑफ नेशंस, नई युद्ध भूमि के लिए एक छद्म नाम भर है...'

'आपका मतलब लीग ऑफ नेशंस कोई शांति संघ नहीं?'

'लीग लड़ाइयों को सीमित रखने भर के लिए है। दूसरे हथियारों से युद्ध जारी है। बैंक सेना की डिवीजनों की जगह ले रहे हैं। अर्थ व्यवस्था की युद्ध-क्षमता, हथियारों-कारखानों की जगह ले रही है...
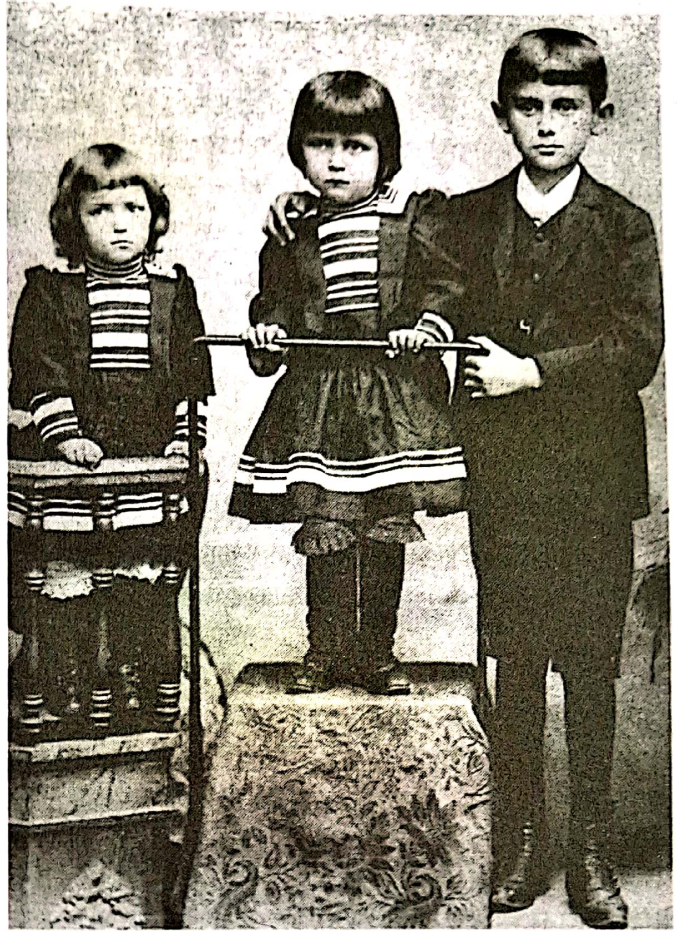
लीग ऑफ नेशंस राष्ट्रों का संगठन नहीं, निहित-स्वार्थों का स्टॉक-एक्सचेंज है...'

हम अख़बार में प्रकाशित लेख पर चर्चा कर रहे हैं, जो 'योरप में शांति क्षीण संभावनाओं' पर था।

'फिर भी पीस-ट्रीटी (शांति समझौता) अंतिम है,' मैंने कहा।

'अंतिम कुछ भी नहीं,' काफ़्का ने कहा, 'अब्राहम लिंकन के समय से यदि कोई समझौता न्यायपूर्ण नहीं हुआ, तो अंतिम भी नहीं हुआ...'

'तो कब होगा?'

'कौन जानता है? मनुष्य देवता नहीं। इतिहास उपेक्षित क्षण या हर सफल या असफल नायकत्व से निर्मित होता है। पानी में एक कंकड़ फेंको तो उससे चक्र-दर-चक्र निर्मित हो जाते हैं। लेकिन ज्यादातर लोग अपने निजी सरोकारों से ऊपर उठकर इतिहास की जिम्मेदारी नहीं समझ पाते। मेरे ख़्याल में बुराई की जड़ यही है। लेकिन 'मार्किवस द साद' यह सब नहीं मानता...'

'मार्किवस द साद' मैं चीखा।

'हाँ वही, जिसकी जीवनी तुमने मुझे पढ़ने को दी थी, हमारे वक्त का सही नायक है।'

'ऐसा नहीं हो सकता।'

'हां, हो सकता है। साद दूसरों की यातना से ख़ुश होता है। कुछ

Scanned with OKEN Scanner

उसी धनी तरह, जिसके ऐश की कीमत ग़रीब को अपने दुख से चुकानी पड़ती है...'

मैं हार नहीं स्वीकारना चाहता था। मैंने काफ़्का को विंसेंट वॉन गॉग के चित्रों का मोनोग्राफ़ दिखाया। काफ़्का ख़ुश हो उठे। 'ये रेस्तरां की बगिया...नीली रात की पृष्ठभूमि में, बहुत सुंदर है। सुंदर दूसरे चित्र भी हैं, लेकिन रेस्तरां की बगिया अद्भुत है। क्या तुम वॉन गॉग के चित्रों के बारे में जानते हो?'

'नहीं।'

'ख़ेद है। वे 'अनाथाश्रम से पत्र' नामक किताब में हैं...मैं भी रेखाचित्र बनाना सीखना चाहता था, सीखना चाहता हूँ। हमेशा कोशिश करता हूँ लेकिन नहीं बनता। मेरे रेखाचित्र भी मेरे लिए एक गोपनीय चित्रलिपि होते हैं, जिनका अर्थ कुछ समय बाद मेरी समझ में नहीं आता।'

1922 में जब ब्रिटिश सरकार ने, भारतीय कांग्रेस पार्टी के सर्वमान्य नेता गाँधी को जेल में डाल दिया, तो काफ़्का ने कहाः

'अब स्पष्ट है कि गाँधी का आंदोलन जीतेगा। गाँधी की जेल पार्टी को नई ऊर्जा देगी। बिना हुतात्माओं के हर आंदोलन में अपना फ़ायदा तलाशने वालों का प्रेशर-ग्रुप बनकर रह जाता है। नदी एक पोखर में तब्दील हो जाती है, जिसमें भविष्य के सारे विचार-बीज सड़ जाते हैं। दुनिया की हर चीज़ की तरह विचार व्यक्तिगत आहुतियों से जीवित रहते हैं।'

अंशः 4

1921 के वसंत में, प्राग में, हाल ही में अन्वेषित, दा ऑटोमेटिक कैमरे लगे, जो छह से लेकर दस कोणों से, एक कार्ड पर उतनी ही तस्वीरें खींच सकते थे। ऐसी ही कुछ तस्वीरें लेकर मैं काफ़्का के पास गया।

'अब दो क्रोन में कोई भी ख़ुद को एक साथ दस कोणों से देख सकता है। कैमरा एक 'स्वयं को जानो यंत्र' है।'

'या स्वयं को भ्रमित करो यंत्र,' काफ़्का ने तल्ख़ मुस्कान से कहा।

मैंने प्रतिरोध किया, 'कैमरा झूठ नहीं बोल सकता।'

'ये किसने कहा?' काफ़्का ने बाएं कंधे की ओर सिर झुकाकर कहा, 'असलियत यह है कि फ़ोटोग्राफ़ी सिर्फ़ सतह पर आँख केंद्रित करती है। जिससे चीज़ों का अंतरंग जीवन, जो अंधेरे और प्रकाश के जादुई खेल से उभरता है, धुंधला जाता है। उसे तेज़ से तेज़ लेंस भी नहीं पकड़ सकते। क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि जिस आवृत-पुनरावृत होते सच की गहनता को, जिसके सामने हर युग के कवियों, कलाकारों और करिश्माइयों की फ़ौजें, थरथराती हुई प्रर्थनारत खड़ी रहीं, उसे एक मामूली से बटन को दबाने से पकड़ा जा सकता है...? यह ऑटोमेटिक कैमरा मनुष्य की आँखों की संख्या नहीं बढ़ाता,बल्कि निहायत सरल तरीके से मक्खी की आँख से देखे गए दृश्य प्रस्तुत करता है।'

मैं नहीं जानता कि युद्धपूर्व (प्रथम विश्व-युद्ध-1914-18) ऑस्ट्रिया-हंगरी में सिनेमा का धंधा किस तरह परिचालित होता था।
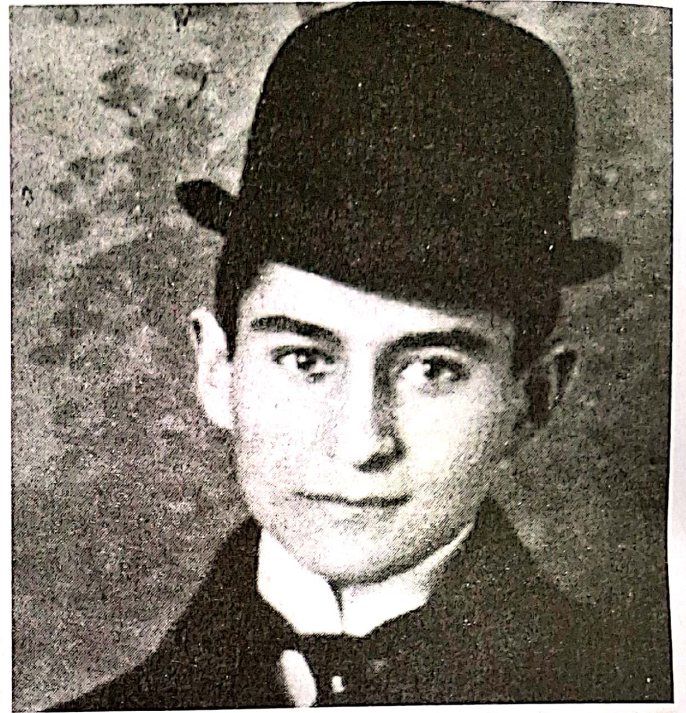
लेकिन पहले चेक-रिपब्लिक में सिने-लाइसेंस सिर्फ़ उन्हीं को दिए जाते थे, जिनके पास कोई विशेष अर्हता होती थी। सिद्धांत रूप में लाइसेंस व्यक्तिगत लोगों को न देकर सिर्फ़ कानूनी तौर से रजिस्टर्ड संस्थाओं को दिए जाते थे, जैसे फ़ायर ब्रिगेड, व्यायामशालाएँ तथा कानूनी तौर से मान्य अन्य संस्थाएं, जो बाद में यह अधिकार मुनाफ़े में हिस्सेदारी, या ठेके के आधार पर कमर्शियल कंपनियों को लीज़ पर देती थी...थोड़े ही समय में 'ख़ास अर्हता'(कंसेशन) का होना धुआंधार कमाई का ज़रिया बन गया। पहले विश्व युद्ध के डिप्रेशन से उबरने के लिए, जनता को मनोरंजन की ज़रूरत थी। इसके तहत सिनेमाओं की मांग, और साथ ही देश में सिनेमाओं की संख्या तेज़ी से बढ़ने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि लाइसेंसधारी संस्थाओं का दिमाग़ इस अभूतपूर्व कमाई से इस तरह बौरा गया कि उन्होंने शहरों, कस्बों, और गाँवों में फ़ैले अपने सिनेमाओं के नाम अपनी संस्थाओं के नाम पर रखने शुरू कर दिए। उदाहरण के लिए चेक जिमनास्टिक एसोसिएशन–'उकाव' के हर शहर और गाँवों में फ़ैले सिनेमा 'उकाव' कहलाने लगे। इनमें एक अजूबा नाम भी था। प्राग की मजदूर कॉलोनी में स्थित एक सिनेमा का नाम 'अंधों का सिनेमा' था, क्योंकि इसकी लाइसेंसधारी संस्था का घोषित उद्देश्य 'अंधों की मदद और उनके प्रति समाज में सहानुभूति पैदा करना था।'

जब मैंने काफ़्का को इस बारे में बताया तो पहले उनकी आँखें अचरज से फ़ैलीं, फिर वे इतनी जोर से हंसे, जितना मैंने कभी नहीं सुना।

काफ़्का ने कहा, 'बल्कि हर सिनेमा का नाम 'अंधों का सिनेमा' होना चाहिए...'

(काफ़्का के संस्मरण, गुस्ताव जैनुक, अनुवादः वल्लभ सिद्धार्थ, संवाद प्रकाशन...से साभार)

Scanned with OKEN Scanner

खिड़की पर खड़ा शख़्स
पीएत्रो चिताती

फ्रान्ज़ काफ़्का से उसकी युवावस्था में और उसके प्रौढ़ हो चुकने पर मिले हुए तमाम लोगों को लगता था कि वह 'काँच की एक दीवार' से घिरा रहता था। वह वहीं रहा करता था, ख़ूबसूरती से टहलता हुआ, इशारों में बात करता, बोलता हुआ; वह किसी अति-सतर्क, बेहद लचीले देवदूत की तरह मुस्कराता था और उसकी मुस्कान विनम्रता से पैदा हुए उस अन्तिम फूल जैसी होती थी जो ख़ुद को प्रस्तुत करते ही वापस लौट जाता हो, ख़ुद को ख़र्च कर चुकने के बाद ईर्ष्या के साथ अपने ही भीतर बन्द हो जाता हुआ। ऐसा लगता था मानो वह कह रहा हो–

मैं तुम जैसा ही हूँ, मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ, तुम्हारी ही तरह यातनाएँ सहता हूँ और प्रसन्न रहता हूँ।

लेकिन जितना अधिक वह दूसरों के भाग्य और उनकी यातना में हिस्सेदारी करता था उतना ही वह ख़ुद को इस खेल से दूर कर लेता था। निमन्त्रण और निर्वासन की वह धुँधली छाया जो उसके होठों पर रहती थी, हमें बताती थी कि वह कभी भी उपस्थित नहीं हो सकता था कि वह बहुत दूर एक ऐसे संसार में रहता था जो स्वयं उसका भी नहीं था।

काँच की उस नाजुक दीवार के पीछे लोग क्या देखते थे? वह एक लंबा आदमी था–दुबला और छरहरा, जो अपने लंबे शरीर को इस तरह साथ लेकर चलता था जैसे वह उसे तोहफ़े में मिला हो। उसे लगता था वह कभी बड़ा नहीं होगा और न ही वह उस चीज़ के भार, स्थिरता और भय को जानेगा जिसे बाकी के लोग एक नासमझ आनन्द के साथ परिपक्वता कहते हैं। उसने स्वीकार करते हुए एक दफा मैक्स ब्रॉड को बताया था–

मैं पुरुषत्व को कभी महसूस नहीं करूँगा, बच्चे से मैं सीधा बूढ़ा बन जाऊँगा-सफेद बालों वाला।

हर कोई उसकी आँखों से आकर्षित हो जाया करता जिन्हें वह बहुत ज्यादा खुली रखता था; कभी-कभी घूरती हुई वे आँखें फोटोग्राफों में मैग्नीशियम की आकस्मिक चमक के कारण किसी विक्षिप्त या स्वप्नदृष्टा की लगती थीं। उसकी भौंहें लंबी थीं: उसकी पुतलियाँ कभी भूरी, कभी सलेटी, कभी नीली और कभी बस गहरी होती थीं। अलबत्ता पासपोर्ट के मुताबिक वे 'गाढ़ी सलेटी नीली' थीं। जब वह स्वयं को आईने में देखता, वह पाता था कि उसकी दृष्टि 'अविश्वसनीय तरीके से ऊर्जावान' थी; लेकिन बाकी के लोगों ने उसकी आँखों के बारे में बोलना और उनकी व्याख्या करना कभी बन्द नहीं किया मानो उन्हीं के पास उसकी आत्मा के वास्ते एक दरवाज़ा हो। कुछ के मुताबिक़ वे उदासी से भरपूर थीं; कुछ समझते थे कि वह लगातार उन पर निगाह धरे उन्हें पढ़ रही हैं; कुछ ने उन्हें अचानक सुनहरे कणों से दिपदिपाते हुए चमकते देखा था, फिर वे विचारमग्न हो जाती थीं; कुछ ने उन्हें देखा था एक विडंबना में रंगते हुए–जो कभी बहुत हल्की होती थीं, कभी बहुत

Scanned with OKEN Scanner

तीखी; कुछ के मुताबिक़ उनमें एक आश्चर्य और एक अजीब कुढ़न थी; कुछ जो उसे बहुत चाहते थे और उसकी पहेली को हज़ार तरीकों से सुलझाने में लगे रहते थे, सोचते थे कि टॉलस्टॉय की तरह उसे कुछ ऐसी बात मालूम है जिसके बारे में दूसरे कुछ नहीं जानते; कुछ को उसकी आँखें भेद पाना असम्भव लगता था; और अन्ततः कुछ का मानना था कि जब-तब उसकी निगाह पत्थर जैसी शान्ति, एक क्षणिक खोखलेपन और अन्त्येष्टि जैसे एक विराग से भर जाया करती थी।

ख़ुद अपने बारे में वह बमुश्किल बात करता था; शायद उसे लगता था कि जीवन के रंगमंच पर बिना बुलाए पहुँचना बड़ी अराजकता होता। उसकी आवाज़ मुलायम पतली और सुरीली थी-बाद में बीमारी के कारण उसे अस्पष्ट और भर्राई हुई हो जाना था। वह कभी भी कोई हल्की बात नहीं करता था; ऐसी हर चीज़ उसके लिए अजनबी थी जो रोज़मर्रा हो। या फिर उसके भीतरी संसार की रोशनी ऐसी चीज़ों को बदल दिया करती थी। यदि किसी विषय में उसकी दिलचस्पी होती थी तो वह आराम से गरिमापूर्ण और जीवन्त तरीके से उस पर बोलता था। कई दफ़ा उत्साहपूर्वक भी। वह अपने आप को मुक्त कर दिया करता था मानो हर बात को हर किसी से कह सकना संभव हो; वह अपने वाक्यों का निर्माण अपनी कला से संतुष्ट किसी कलाकार के आनन्द के साथ किया करता था; और उसके शब्दों का साथ उसकी लंबी और बेहद हल्की उँगलियाँ दिया करती थीं; वह अक्सर अपनी भौंहों पर बल डालता था; उसके माथे पर लकीरें पड़ जाती थीं और उसका निचला होंठ बाहर की तरफ निकल आया करता; वह अपने हाथों को जोड़कर या तो उन्हें डेस्क पर रख लेता था या एक हाथ अपने दिल के ऊपर धरे रखता था-मूक फिल्मों के किसी अतिनाटकीय अभिनेता की तरह। हँसते हुए उसका सिर पीछे की तरफ झुक जाता था। मुँह को बहुत कम खोलते हुए वह अपनी आँखों को इतना बन्द कर लेता था कि वे बेहद पतली दरारों जैसी हो जाया करती थीं। लेकिन जब जब वह अपनी आत्मा से प्रसन्न या उदास होता, देवताओं का दिया वह उपहार उसे नहीं छोड़ता था-एक महान नैसर्गिकता। तमाम लोगों के बावजूद जो सोचते थे कि वह विरोधाभासों से भरपूर एक ऐंठनभरा व्यक्ति था—बस एक स्मृतिचिन्ह, किसी बंजर खेत में पड़ा हुआ लकड़ी का टुकड़ा, बाकी टुकड़ों में से बचा हुआ एक, सिर्फ आहों और वेदनाओं से बना हुआ-इन तमाम लोगों के बावजूद उसे देखकर अहसास होता था कि उसकी सारी भंगिमाएँ एक गतिमान शान्ति को अभिव्यक्त करती थीं। लेखन में उसे पाने से पहले उसने अपने जीवन में शान्ति को प्राप्त कर लिया था। लोगों के भीतर और कोई भी चीज़ उस गहरी भावना को नहीं जगा सकती। लोग उसके पास आया करते थे-चिन्तित, अनिश्चित या सिर्फ उत्सुक, पुराने दोस्त, नामचीन्ह लेखक, विषादभरे अतिमहत्त्वाकांक्षी युवा, और इस सबसे उन्हें जो महसूस होता था वह सुख या करीब-करीब आनन्द की अनुभूति जैसा होता था। उसकी उपस्थिति में रोज़मर्रा का जीवन बदल जाया करता। हर चीज़ नई लगने लगती थी। ऐसा लगता था जैसे हर चीज़ को पहली बार देखा जा रहा हो। अक्सर यह नयापन बहुत उदास तरीके से आता था, लेकिन उसके भीतर समाधान की वह अन्तिम संभावना हमेशा मौजूद रहती थी।

जब वह अपने मित्रों के साथ कोई मुलाक़ात तय करता वह हमेशा देर से पहुँचता था। वह दौड़ता हुआ-सा पहुँचा करता था, चेहरे पर एक झेंपभरी मुस्कान और उसका हाथ दिल पर मानो वह कहना चाह रहा हो—"मैं निरपराध हूँ!" इतज़ाक लोवी नाम के एक अभिनेता ने एक बार बहुत देर तक उसके घर के बाहर उसका इन्तज़ार किया। जब काफ़्का के कमरे की बत्ती जली रही तो उसने सोचा—"वह अब भी लिख रहा है;" फिर अचानक बत्ती बुझी पर बग़ल के कमरे में जली रही। इस पर लोवी ने सोचा—"वह खाना खा रहा है;" फिर काफ़्का के कमरे की बत्ती दोबारा जली, जहाँ दरअसल वह दाँत माँज रहा था; फिर जब वह बुझी तो लोवी ने सोचा कि अब वह जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ उतर रहा है; लेकिन! बत्ती फिर से जली। शायद काफ़्का कुछ भूल गया। काफ़्का बताता था कि इन्तज़ार करना उसे बहुत प्रिय था—लम्बा इन्तज़ार। बग़ैर जल्दबाज़ी के घड़ी पर निगाह डालते हुए और लापरवाह चहलकदमी करते हुए। यह उसके लिए उतना ही आनन्ददायक था जितना अपनी खाट पर टाँगे पसारे जेबों में हाथ डाले लेटे रहना। प्रतीक्षा करने से उसके जीवन को एक उद्देश्य मिलता था जो उसे अन्यथा इस कदर अनिश्चित लगा करता था-उसके सामने एक नियत बिन्दु हुआ करता था जो उसके समय पर एक निशान लगाता जाता और उसे उसके अस्तित्व के बारे में सुनिश्चित किया करता। शायद वह यह कहना भूल गया था कि देर से पहुँचना समय को लंगड़ी मारने का उसका तरीका था; उसे हराने का, उसे थका देने का और उसकी नियमबद्ध ताल से बचे रहने का।"

उसके दोस्त हमेशा उसे दूर से देखते थे—हमेशा साफ-सुथरे कपड़े पहने, हालाँकि वे सुरुचिपूर्ण नहीं होते थे—क्लर्कों वाले सलेटी या गाढ़े नीले सूट। एक लम्बे समय तक, अपने विराग और हठभरी चेतनहीनता के सपने में लिपटे हुए उसने एक ही सूट पहना—दफ़्तर में, सड़क और लिखने की डेस्क पर गर्मियों और सर्दियों में—नवम्बर आ चुका था और लोगों ने भारी ओवरकोट पहनना शुरू कर दिया था, वह 'गर्मियों का सूट और नन्ही समरहैट पहने एक पागल' की तरह सड़क पर प्रकट होता था जैसे कि जीवन की अनेकता पर एक इकलौती पोशाक लादना चाहता हो। अपने दोस्तों को देखते ही वह खुश हो जाता था। हालाँकि वह उनके साथ 'अपनी उँगलियों के पोरों भर' की मदद से संवाद किया करता था। उसके भीतर चीनियों जैसी एक औपचारिकता थी जो उसके दिल की थकान और उसकी आत्मा के अभूतपूर्व परिष्कार से उपजी थी। वह स्वयं को एक विडम्बनापूर्ण शालीनता के साथ प्रस्तुत करता था—कैरोल के से हल्केपन के साथ किसी हसीदी सन्त या रूमानी गंधर्व का सा हल्कापन; एक सनकभरी कल्पना, घुमक्कड़ और मंडराती हुई—पूर्वी देशों की कविता का सुस्वाद, धुएँ, दिल और मृत्यु के साथ उसकी खिलंदड़ी।

जब वह अपने दोस्तों के साथ होता था उसे नकल करने की अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना पसंद था। अभी वह उस आदमी की नकल बना रहा होता जो अपनी छड़ी घुमाता चल रहा था-उसके हाथों की

Scanned with OKEN Scanner

भंगिमा उसकी उँगलियों की गति। अभी वह किसी व्यक्ति के चरित्र की जटिलताओं की नकल बनाने लगता। उसकी आन्तरिक नकल इतनी शक्तिशाली होती थी और इतनी संपूर्ण कि लगता था वह अचेत हो जाएगा। अक्सर वह अपनी प्रिय पुस्तकों का पाठ किया करता था-बहुत प्रसन्नता और उत्साह के साथ। भावना के कारण उसकी आँखें चमका करती थीं। तेज़-तेज़ उसकी आवाज़ जो कविता की गुप्त थर्राहट से लय का पुनर्निर्माण करने में सक्षम थी। शब्दों की ध्वनियाँ बेहद स्पष्ट होकर सामने आती थीं। कुछ पंक्तियों का आस्वादन करता हुआ वह उन्हें दोहराता था ताकि उनका अर्थ साफ़ हो सके जब तक कि गुइटे या फ़्लाबेयर या क्लेइस्ट, जिनका वह पाठ कर रहा होता था, उसके दोस्तों और उसकी बहनों के साथ समाकर, उस कमरे में एक व्यक्ति में तब्दील हो जाया करते थे। सत्ता का उसका स्वप्न यही था-यही इकलौता स्वप्न जिसे वह, जो सारी सत्ता का शत्रु था, साकार देखना चाहता था। एक लड़के के रूप में उसने सपना देखा था कि वह एक बड़े सभागार में भीड़ से घिरा 'सेन्टीमेन्टल एजूकेशन' का सस्वर पाठ कर रहा है—शुरू से आख़िर तक, बिना रुके, जरूरी दिनों और शामों का इस्तेमाल करता हुआ, जैसा कि बाद में उसने 'अमेरिका' और 'द कासल' को एक ही साँस में पूरा लिख लेने का सपना देखा था। और लोग मोहाविष्ट, बिना ज़रा भी थके हुए उसे सुनते रहते थे।

शाम के बीत जाने पर चिड़ियों जैसे हल्केपन के साथ काफ़्का घर लौटता। वह तेज़ चलता था, थोड़ा झुका हुआ, उसका सिर थोड़ा टेढ़ा। वह डगमगाता चलता था मानो हवा के झोंके उसे सड़क के इस कोने से उस कोने घसीट रहे हों; उसके बंधे हाथ उसके कंधों पर होते थे और उसके लम्बे कदमों और गहरी रंगत वाले उसके चेहरे के कारण उसे वर्णसंकर इंडियन समझा जा सकता था। इस तरह गुज़रता था वह; रात की गहराइयों में अपने विचारों में खोया; महलों, गिरजाघरों, स्मारकों और सिनागॉगों के सामने से उन चित्रभरी अँधेरी गलियों में मुड़ता हुआ जो प्राहा के चक्कर लगाती हैं। जीवन से मुक्ति पाने का उसका यही तरीका था और आने वाले दिनों की किसी भी अप्रसन्नता से ताक़त खींच पाने का।

हर सुबह आठ बजे वह पाबन्दी से अपने दफ़्तर, इंस्टीट्यूट फॉर वर्कमैन्स एक्सीडेन्ट इंश्योरेन्स फार द किंगडम आफ बोहेमिया पहुँच जाता था। बिखरे हुए काग़ज़ों और फ़ाइलों के ढेरों से अटी मेज़ पर बैठा वह टाइपिस्ट को डिक्टेशन दिया करता था। यदा-कदा उसका दिमाग़ काम करना बन्द कर देता-विचारों से ख़ाली। टाइपिस्ट ऊँघने लगता और वह या तो अपना पाइप जला लेता या खिड़की से बाहर देखना शुरू करता। वह मीटिंगों में भाग लिया करता, कागज़ात और जरूरी रिपोर्टें तैयार किया करता। उसे एक बेहतरीन कर्मचारी माना जाता था—"अथक मेहनती और महत्त्वाकांक्षी... एक बेहद उत्साही कर्मचारी जिसके भीतर असाधारण प्रतिभा है और जो अपना काम पूरा करने में असामान्य बारीकी और क्षमता प्रदर्शित करता है।" उसके वरिष्ठ यह नहीं जानते थे कि वह 'महत्त्वाकांक्षी' के अलावा सब

कुछ था। वहाँ काम करता था वह, उस कोलाहल में, क्लर्कों, पोर्टरों और घायल कामगारों की भीड़ के बीच-सिर्फ इसलिए कि उसे अपना सारा समय साहित्य में नहीं लगाना था। उसे भय था कि साहित्य किसी बवंडर की मानिन्द उसे अपने भीतर चूस लेगा, और तब वह उसकी असीम धरती में अपना रास्ता खो बैठेगा। वह पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हो सकता था। उसे बंधन चाहिए थे—उसने अपना समय किसी असंगत गतिविधि में लगाना था—तभी वह अपनी उस क़ैद में से कुछ बेशक़ीमती घंटे उकेर पाने में सक्षम हो सकता था—रात के वे घंटे जिनमें उसकी कलम उस अजाने संसार का पीछा करती थीं जिसे जीवन्त बनाने का उसे किसी ने आदेश दिया हुआ था। दफ़्तर के काम से उसे गुप्त किस्म का आनन्द मिला करता था जिसका वह औरों से ज्यादा मज़ा ले सकता था—वह गैरजिम्मेदार हो सकता था। वह कोई स्वतंत्र फ़ैसले नहीं लेता था न ही उसकी हस्तलिपि में लिखा कोई कागज़ वहाँ होता था। काग़ज़ों के नीचे उसका नाम नहीं होता था बस उसके नाम के प्रारंभिक अक्षर एफ के. होते थे। लेकिन इस दोहरी ज़िन्दगी के कारण क्या भयानक तनाव पैदा होता था! उसे दफ्तर के बहुत अधिक और श्रमसाध्य काम से जूझना होता था और अपनी रात के प्रेतों से भी; उसे क़तई आराम नहीं था, उसके पास क़तई समय

Scanned with OKEN Scanner

नहीं था; उसके पास सोने के लिए बस थोड़े से घंटे होते थे; और ऐसा एकाधिक बार हुआ जब उसे लगा कि यह संघर्ष उसके चीथड़े कर देगा या यह कि मुक्ति पाने का इकलौता रास्ता पागलपन में बचा था।

वह घर यानी अपने दूसरे कैदखाने में लौटता था—

जो और भी ज्यादा त्रासकारी था क्योंकि वह बाकी सारे घरों की तरह बूर्ज्वा था...

दोपहर करीब सवा दो बजे के आसपास। उसका कहना था कि वह वहाँ एक अजनबी की तरह रहता था हालाँकि अपने माता-पिता और बहनों के प्रति उसके भीतर बहुत प्यार था। वह घरेलू अनुष्ठानों, ताश के खेलों, मेल-मुलाक़ातों में हिस्सा नहीं लेता था। कभी-कभी माँ का दिया हुआ एक शर्मीला गुडनाइट चुम्बन उसे उनके पास खींच लाता था।

"यह ठीक है।"—वह बोला— "मेरी कभी हिम्मत नहीं पड़ती थी..." उसकी माँ ने जवाब में कहा— "मैं सोचती थी यह तुम्हें अच्छा नहीं लगता। लेकिन अगर तुम्हें अच्छा लगता है तो मुझे भी इस बात की खुशी है।"

फिर वह एक विस्मृत कोमलता के साथ उसे देखकर मुस्कराई जो उस क्षण अस्थाई रूप से पुनर्जीवित हुई थी। वह खाना सबके साथ खाता था। बाकी के लोग माँस खाया करते थे—उस माँस को देखकर उसे वितृष्णा और घृणा के साथ वह सारी हिंसा याद आती थी जिसे आदमी ने इस धरती पर बोया है। दाँतों के बीच फंसे रेशे उसे सड़ांध और खमीर के कीटाणुओं जैसे लगते थे-दो पत्थरों के बीच मरे चूहों जैसे। वह खाने की मेज़ पर अपने लिए प्रकृति के प्रशस्त ख़ज़ाने परोसा करता। उसे शाकाहारी रेस्त्राओं का खाना हमेशा पसन्द आता थाः भुने अण्डों के साथ हरी बंदगोभी, दानेदार गेहूँ की डबलरोटी, रसभरी के सिरप के साथ दलिया, क्रीम और लैट्स, गूज़बेरी, की वाइन, और सेनेटोरियमों का मुलायम भोजनः सेव का मुरब्बा, कुचले आलू, रसदार सेमें, फलों का रस, मीठे आमलेट-जो बहुत आसानी से गले में उतर जाया करते थे। वह इन ख़ुराकों को जम कर खाया करता था; और दही, साइमन्स ब्रेड, अखरोट, बादाम, चेस्टनट, खजूर, अंगूर, किशमिश, चीनी, केले, सेव, नाशपाती, सन्तरे और अनन्नास उसे वह पोषण दिया करते थे जिसकी मदद से वह रातों को श्रम कर पाता था।

फिर वह अपने कमरे में चला जाता जो किसी गलियारे जैसा था-लिविंगरूम और उसके माँ-बाप के बेडरूम को जोड़ता हुआ। उसमें एक बिस्तरा था। एक अल्मारी, कुछ किताबें और ढेर सारी नोटबुक्स के साथ एक पुरानी डेस्क। दीवारों पर संभवतः त्सेल्तर्नगासे के अपार्टमेन्ट वाले प्रिन्ट ही टँगे हुए थे—हान्स टोमा के 'द प्लाउमैन' का प्रिन्ट, एक प्राचीन रिलीफ़ का प्लास्टर का छोटा सांचा, एक जानवर की जांघ को चक्करदार घुमाती शराब वांटनेवाली स्त्री की शक्ल की मेज़। डेस्क हमेशा साफ-सुथरी नहीं रहती थी; दराजों से पुराने पैम्फलेट, पुराने अख़बार, कैटेलाग, पिक्चर पोस्टकार्ड, फटे और खुले पत्र झाँका करते थे और एक तरह के रैम्प की रचना करते थे। कहीं एक ब्रश पड़ा होता था जिसके बाल मुड़े हुए होते, रेजगारी का उसका बटुआ खुला रहता था। कभी भी किसी को कोई भुगतान करने के लिए, चाभियों के गुच्छे में से एक चाभी बाहर निकली रहती थी- कभी भी इस्तेमाल किए जाने के लिए तैयार, और उसकी टाई कॉलर के गिर्द थोड़ा-सा बंधी रहती थी। न्यूरोसिस के कारण उसकी संवेदनशीलता वहुत धारदार हो चुकी थी और उससे शोर बरदाश्त नहीं होता था—उसे लगता था कि वह 'समूचे अपार्टमेन्ट के शोर के हैडक्वार्टर' में रहता और लिखा करता था— 'उसकी भौंहों पर एक सतत कंपन बना रहता था।' दरवाज़े भेड़े जाया करते और उनके शोर के भीतर उसके माँ-बाप और बहनों की पदचापें डूबा करती थीं। रसोई में स्टोव भड़भड़ाया करता था। उसके पिता झटके में दरवाज़ा खोला करते थे और उसके बहुत करीब आ जाया करते थे—उनका लबादा सरसराता हुआ; कहीं किसी दूसरे कमरे में कोई स्टोव की राख़ खुरचकर साफ़ कर रहा होता; उसकी बहन वैली अचानक पूछा करती थी मानो वह पेरिस की किसी गली में खड़ी हो कि पिताजी के हैट को ब्रश किया जा चुका है या नहीं; और अधिक चिल्लाहटें और अधिक फुसफुसाहटें; घर का प्रवेशद्वार किसी ख़राशभरे गले की तरह खांसा करता; फिर वह एक स्त्री की संक्षिप्त आवाज़ के साथ खुलता और फिर एक पौरुषपूर्ण धप के साथ बन्द हो जाया करता; और फिर वहाँ होतीं दो पालतू चिड़ियों की अधिक मुलायम अधिक हताश आवाजें...

दर्दभरी थकान के साथ वह स्वयं को खाट पर फेंक देता और रोशनी को ताका करता। जब उसके कमरे के दरवाज़े पर रसोई और विश्रामकक्ष की रोशनियाँ एक साथ पड़ा करतीं, काँच के ऊपर जैसे एक हरी रंगत उतर आती। अगर उस पर सिर्फ रसोई की रोशनी पड़ती तो नज़दीक वाला काँच गहरा आसमानी हो जाता था। और दूसरा सिर्फ इतना आसमानी कि उसकी सफ़ेदी में काँच के अन्दर का डिजाइन पूरी तरह घुल जाया करता। सड़क की रोशनियाँ और उनकी परछाइयाँ बुरी तरह मिली-जुली होतीं थीं और उनको समझ पाना मुश्किल होता। गुज़रती हुई ट्राम की रोशनी छत पर प्रतिबिम्बित होती एक दूधिया नकाबदार और मिकानीकी हचकोला बनाया करती थी—शुरू में सड़क की रोशनियों के साथ मिलकर वह एक चमकीले बिन्दु की रचना करती थी जो धरती के ग्लोब की विषुवतरेखा पर रेंगा करता था-किसी भूरे सेव की रंगत के साथ। आखीर में ग्रेगोर साम्सा या जोसेफ़ के की तरह काफ़्का खिड़की पर चला जाता जहाँ से नदी और पहाड़ी को देखा जा सकता था। फिर वह बहुत श्रमसाध्य ध्यान के साथ धुंध में दिख रही हर चीज़ को देख पाने की कोशिश किया करता; कभी वह अपनी गतिहीन दृष्टि को अपनी शान्त उदासी से जोड़ देता था, अस्तित्व के परे की उसकी उड़ान और ज़िन्दा न रहने की उसकी चाहत, कभी उसकी रिक्तता और लापरवाह निगाह जो उसके दिल की अजानी जटिलताओं से उपजी होती थी, चीज़ों को पूरी तरह मिटा दिया करती। कभी वह गुज़रते लोगों के चेहरों और मकानों

Scanned with OKEN Scanner

के रंगों को ध्यान से देखता हुआ अपने और दूसरी चीजों के बीच कोई सम्बन्ध बना पाने की चेष्टा करता। कभी चीजों के बीच कोई आपसी सम्बन्ध बना पाने की ताकि वह सड़क पर 'ऐसी कोई भी बांह' खोज पाए 'जिससे वह ख़ुद को जोड़ सके।' शायद उस निगाह में, बस उसी निगाह में, उसे अपनी मुक्ति और मोक्ष मिला करते थे; वह 'अज्ञात पोषण' जिसके लिए वह इस कदर व्याकुल रहा करता था।

जब वह क़रीब बीस साल का था उसकी दोस्ती ऑस्कर पोलाक नाम के एक युवा कला समीक्षक से हुई जो पहले विश्वयुद्ध में मारा गया- ऐसी निश्छल और विशिष्ट दोस्तियाँ केवल युवावस्था की नाज़ुक आगभरी आयु में संभव होती हैं। वह सिर्फ अपने दोस्त के लिए ज़िन्दा रहता था और इस बात का तनाव इतना विकट था कि उसे हर दम यह भय लगा रहता था कि उसका दोस्त कभी भी अजनबी बन सकता और उसे छोड़कर जा सकता है। यह एक ऐसी मित्रता थी जो सादगी और मितभाषिता से भरपूर थी, सावधानी और आदर से भी; उसे उन शब्दों पर यक़ीन न था जो उन दोनों के बीच बोले जाते थे। उसे लगता था कि वे दोनों आपस में संवाद नहीं कर सकते–

जब हम आपस में बात करते हैं तो हमारे शब्द कठोर होते हैं-हम उन पर ऐसे चलते हैं मानो ऊबड़खाबड़ पथरीले रास्ते पर गुज़र रहे हों। जब हम किसी मुश्किल चीज़ पर बात करते हैं हमारे पैर सूज जाते हैं और यह हमारा कसूर नहीं है। हम अक्सर एक-दूसरे के राह की बाधा बनते हैं, मैं तुमसे भिड़ जाता हूँ और तुम...मेरी हिम्मत नहीं होती और तुम...हम डोमीनोज़ पहने रहते हैं अपने चेहरों पर नकाब लगाए और हम (हाँ और सबसे पहले मैं) अनगढ़ भंगिमाएँ बनाते हैं और अचानक हम उदास होते हैं और थक जाते हैं। क्या तुम कभी भी किसी के साथ इस क़दर थके हो जितना मेरे साथ? जब हम आपस में बात करते हैं हमें वे चीजें बाधा पहुँचाती हैं जिन्हें हम कहना चाहते हैं पर उस तरह से कभी नहीं कह पाते, मगर हम एक-दूसरे से इस तरह बात करते हैं ताकि हम एक-दूसरे को ग़लत समझें या कभी हम एक-दूसरे की बात सुनते ही नहीं या फिर एक-दूसरे की निन्दा करते रहते हैं...

लेकिन इसके बावजूद, अचानक 'सूजे हुए पांवों वाले' उन अनिश्चितता भरे, लड़खड़ाते, धोखेबाज शब्दों के वह अपना सब कुछ निछावर करता हुआ अपने दोस्त के पास जाता था, 'अपने कलेजे का एक टुकड़ा निकालकर उसे काग़ज़ों में सावधानी से लपेट कर मैं इसे तुम्हें दे रहा हूँ।' और फिर यह शर्मीला मितभाषी युवक जिसका अपने ख़ुद के ऊपर काबू न था, तमाम चीज़ों से एक अभेद्य दीवार के कारण कटा हुआ, अचानक उसका दोस्त बन जाता था; वह अपने दोस्त के साथ जीता था और उसी के दिमाग़ से सोचता था, उसी के दिल से प्यार करता था और उसी की आँखों से देखता था–क्योंकि ख़ुद अपनी निगाहों से देखना अभी उसने नहीं सीखा था। बाद के दिनों में स्वीकारोक्ति करता हुआ वह उसे बताता है–'तमाम और चीज़ों के अलावा तुम मेरे लिए वह खिड़की थे जहाँ से मैं सड़क

को देख सकता था।'

जब भी वह पोलाक के साथ बात करता था या टहलता था या उसे चिट्ठी लिखता, काफ़्का दो हिस्सों में बंट जाया करता; वह अपनी डेस्क पर बैठा होता और उसका दूसरा हिस्सा पोलाक के साथ उसके घर पर एक लड़की से मिल रहा होता था; वह अपने बिस्तर पर मजे से लेटा होता जबकि उसका दूसरा हिस्सा एक विडम्बना भरे बेपरवाह अभिनेता की तरह ख़ुद ही सड़कों पर अपनी भूमिका अदा कर रहा होता था। उसका मित्र उसी के तमाम हिस्सों में एक था; और इन सारे लोगों में वही था जिससे काफ़्का अपने दिल की अतिप्रसन्नता और उदासी से भरपूर जिज्ञासा खींचा करता था, अन्ततः वे एक-दूसरे से प्यार करते थे, नफ़रत करते थे, और हताश स्नायु उत्तेजना से एक-दूसरे पर झपटा करते थे। उन दिनों काफ़्का से अधिक प्रतिद्वंद्वी आत्मा किसी के पास नहीं थी-जो अन्यथा बेहद मुलायम इन्सान था। 1904 से 1910 के बीच लिखी गई 'डैस्क्रिप्शन ऑफ अ स्ट्रगल' नाम की जादुई किताब में, जो इन्हीं अनुभवों से उपजी थी, और जो आईनों के घुमावदार खेल की कहानी है, काफ़्का अपने आप को बार-बार नए-नए चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है, जहाँ बोले गए शब्द तक अदृश्य वक्ताओं का रूप ले लेते हैं। इन चरित्रों के दरम्यान क़तई चैन नहीं है–कभी वे नफ़रत से सराबोर एक-दूसरे पर आक्रमण करने को तुले रहते हैं; कभी वे एक-दूसरे के गले से लिपट जाते हैं एक-दूसरे के चेहरे और हाथों को थामे प्रेम के आँसुओं के साथ डबडबाई आँखों के साथ। निस्संदेह काफ़्का को अहसास था कि अपनी बनाई छवियों में ख़ुद उसके डूब जाने का ख़तरा था; सो उसने लगातार यह प्रयास जारी रखा कि वह इस दोस्ती को विशुद्ध रूप से चिट्ठियों के

स्तर पर सीमित रखे। तो क्या लिखित शब्द जिनके बारे में वह इस क़दर सशंकित रहा करता था, ही सबसे संपूर्ण चीज़ नहीं थी? जब चेहरे दूर होते हैं दिल पूरी तरह खुल जाते हैं, जब किसी की उपस्थिति हमें क़ैद नहीं करती और निगाहें स्पर्श नहीं करतीं; बस ठण्डे भावपूर्ण हाथ सफ़ेद कागज़ को चिन्हों से ढँक देते हैं। तब हम हल्के हो जाते हैं और हमारे ऊपर चंद्रमा की सुदूर दृष्टि चमकती है।

ऑस्कर पोलाक को लिखे गए पत्र काफ़्का के पहले मास्टरपीस हैं। इन चिट्ठियों में एक विचारवान समर्पण है जो चीज़ों को पूरी तरह स्वीकार करता है; बिना शिकायत की एक थकान है जो युवा काफ़्का को एक ख़ाली गुंजायमान जगह में तब्दील कर देती है जहाँ संसार आराम करने आता है, जहाँ उसका अपना व्यक्तित्व शान्त हो कर खंडित होता है-

यह समय का एक लम्बा अन्तराल है जिसे मैं यहाँ बिता रहा हूँ- तुमने ग़ौर भी किया होगा और मुझे एक ऐसे अन्तराल की ज़रूरत थी, ऐसा अन्तराल जिसमें मैं घन्टों तक एक विनयार्ड की दीवार पर लेटा हुआ बरसाती बादलों को घूरता रहता हूँ जो यहाँ से दूर जाना ही नहीं चाहते; या फिर उन विशाल खेतों में जो तब और भी विशाल बन जाते हैं जब आपकी आँखों में एक इन्द्रधनुष हो, या जब मैं यहाँ बगीचे में बच्चों के साथ बैठा होता हूँ उन्हें कहानियाँ सुनाता हुआ या रेत के महल बनाता हुआ या उनके साथ आइसपाइस खेलता हुआ या लकड़ियाँ छीलकर मेजें बनाता हुआ-ईश्वर गवाह है– मैं इसमें कभी कामयाब नहीं होता। एक बार भी नहीं, सच है ना? या जब मैं खेतों से होता घूमता हूँ जो अब उदास और भूरे हो चले हैं अपने परित्यक्त हलों के साथ, मगर कभी-कभी वे चाँदी की तरह कौंधते हैं जब सारे कुछ के बावजूद सूरज चाहे देरी से ही आता है और मेरी लम्बी परछाई को खेतों पर डालता है (हाँ, मेरी लम्बी परछाई, कौन जाने इसी के सहारे मैं स्वर्ग की सल्तनत तक पहुँच जाऊँ।) क्या तुमने अभी से ग़ौर किया है किस तरह देर गर्मियों की परछाइयाँ खोदी गई गहरे रंग की ज़मीन पर खेलती हैं और उनका नाच कितना भारी होता है?

यह एक लहरदार, लयपूर्ण, पुष्पित, रहस्यपूर्ण, दैवीय गद्य है-बिम्बों का ऐसा प्राचुर्य जो दिमाग़ के बजाय एक अतिउत्तेजित कल्पना से पैदा हुआ है जब तक कि एक भंगिमा का थकान भरा स्टाइलाइज़ेशन उसे तहस-नहस नहीं कर देता। जैसा उसने कहा था—यह एक 'शालीन गद्य' था—जिसे उसने लिखा था जो सत्य की हिंसक रोशनी को थामना नहीं चाहता था न महान कलाकृति की स्पष्टता को। वह गोधूलि और अस्पष्टता में रहता था; और अगर उसने इस आकर्षक नकाब को फाड़ डालने का साहस नहीं किया होता तो उसने हमेशा के लिए एक धाराप्रवाह भारहीन शैली को हमेशा के लिए पा लिया होता।

वास्तविकता को स्वप्न में बदल पाने की वह अक्सर अभिलाषा किया करता था, जो एक हवाई रूप में उसके सिर के ऊपर टँगा रहता।

एक बार उसने कल्पना की कि उसके एक उपन्यास का पात्र अपने बिस्तर पर 'एक बड़े तिलचट्टे' के रूप में लेटा हुआ है और एक पीला कम्बल उसके गिर्द कस कर लिपटा हुआ है जबकि वह खिड़की से आ रही ठण्डी हवा का आनन्द ले रहा होता है। इस पाशविक स्वरूप में उसकी उन्नति हुई थी न कि अवनति-उसने चट्टानों और पवित्र पशुओं की वैचारिक अधिकृतता प्राप्त कर ली थी; और अपने बिस्तर पर से वह जीवन की वास्तविकता पर शासन करता था जो उससे अस्तित्वमान बने रहने की इजाजत माँगती थी जबकि संसार में उसका प्रतिनिधित्व एक मूर्ख स्थानापन्न जीव कर रहा था। ऐसा नहीं था कि वह अक्सर अपने आप को इस तरह स्वयंरत, स्वयंभू स्वप्नों में अलग-थलग कर लिया करता था। सच यह था कि वह वह वास्तविकता को लेकर तमाम संशयों से भरा हुआ था। उसे यह जानना अच्छा लगता कि वास्तविकता है क्या। इसके पहले कि वह अपने को उसके समक्ष उद्घाटित करे, इसके पहले कि उसकी नाजुक और घुलनशील आँखें उस वास्तविकता पर टिकें; और उसे यकीन था कि बाकी लोगों के सामने वास्तविकता अपने आप को संपूर्णता में प्रस्तुत किया करती थी। उनके लिए यहाँ तक कि शराब का एक नन्हा गिलास तक मेज़ पर किसी स्मारक की तरह ठोस धरा होता था। जहाँ तक उसका सवाल था उसे तो यह भी पक्का नहीं था कि वह ठोस है। वास्तविकता का पहला चिन्ह उसका अवास्तविक होना था। हर चीज़ बेहद नाजुक, अनिश्चित, असंगत और दरारों से भरपूर थी।

आप ऐसे कैसे अभिनय कर सकते हैं कि आप वास्तविक हैं? क्या आप मुझे यह विश्वास दिलाना चाह रहे हैं कि मैं अवास्तविक हूँ, हरे फुटपाथ पर इस कदर हास्यास्पद? और कितना समय बीत चुका है जब तुम, आसमान, वास्तविक हुआ करते थे और शहर के चौक, तुम जो कभी वास्तविक नहीं थे।

और तब चीजें गतिमान होना शुरू करती थीं और उनके नाम बदलना शुरू होते थे–क्या पोपलर के पेड़ को 'बेबेल की मीनार' नहीं कहा जाना चाहिए या 'नूह जब वह नशे में धुत्त था?' अगर ऐसा था तो और अगर ब्रह्माण्ड किसी छोटे चतुर नाटकीय देवता की भ्रमपूर्ण खोज भर था तो क्या कार्डबोर्ड, प्लास्टर और धुएँ से वह किसी ब्रह्माण्ड की रचना नहीं कर सकता था? वह अपनी आँखें बन्द करता था और लीजिए वह एक पहाड़ को ऊँचा उठा रहा है, नदी के किनारों को चौड़ा कर रहा है, एक जंगल का निर्माण कर रहा है, सितारों को स्वर्ग तक उठा रहा है, बादलों को मिटा रहा है, लगातार और और छोटा होता जा रहा है, उसका सिर चींटी के अण्डे जितना है और उसके हाथ-पैर लम्बे हैं-उसके इशारे पर हवा शहर के चौक पर बहना शुरू कर देती है और पुरुष-स्त्रियाँ हवा में उड़ने लगते हैं; जबकि उसके सन्देशवाहक-सलेटी फ्राक कोट पहने हुए- ऊँचे खंभों पर चढ़कर धरती से विशाल सलेटी चादरों को फहराते हुए ऊपर फैला देते हैं क्योंकि उनकी मालकिन को एक धुँधभरी सुबह चाहिए थी।

बाकी चीज़ों की तरह वह भी अवास्तविक था–पीले टिश्यू पेपर से छांटी गई एक परछाई जो हर भंगिमा और हर कदम के साथ मुलायमियत से फड़फड़ाती है; केवल एक छाया जो कोई आवाज़ नहीं करती, जिसे कोई नहीं देखता, जो घरों के ऊपर कूदती चलती है, कभी-कभी दुकानों के शीशों पर अदृश्य होती हुई, जो ख़ुद को रोशनी के सामने नहीं ला सकती क्योंकि आसमान से आने वाली रोशनी की पहली किरण ने उसे अपने में घोल लेना था। अगर पीटर श्लेमिल ने अपनी परछाईं खो दी थी तो भी उसकी देह बची हुई थी। उसे लगता था कि वह अस्पष्ट था उसमें कोई घुमाव नहीं थे और वह वातावरण में खो गया था। अगर वह वास्तविकता को भुगत रहा था तो बने रहने के लिए उसके पास सिर्फ एक ही रास्ता था। उसे दिखावा करना होगा, ब्रह्माण्ड के महान रंगमंच पर उसे लगातार नई भूमिकाएँ निभानी होंगी-यहाँ तक कि उसे रंगमंच पर उस आदमी का रोल भी प्रस्तुत करना होगा जो ईश्वर को पूजता है क्योंकि इसी रास्ते वह मानवेतर शक्ति से संबंध स्थापित कर सकता है। लेकिन अन्ततः सारा नाटक व्यर्थ साबित होता है। उसे केवल एक इच्छा थी–भाग जाने की, उड़ कर दूर चले जाने की। जब वह नन्हा बालक था और जाड़े के दिनों में जब रात के खाने के बाद दिये जलाने का समय होता वह चिल्लाने से अपने को रोक नहीं पाता था; वह एकदम से खड़ा होकर अपने हाथों को ऊपर उठा कर उड़ने की अपनी इच्छा को अभिव्यक्ति देता था। वह अपने दोस्तों से कहता था–"हर रोज़ मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं इस धरती से दूर चला जाऊँगा।" वह कैसे उड़ेगा वह नहीं जानता था-उसे नहीं पता था कि क्या वह फ़रिश्तों जैसे विशाल पंख फैलाकर ऊपर उठेगा। वह अपने आप से पूछा करता था–

क्या उदाहरण के लिए उड़ान की प्रवृत्ति एक कमज़ोरी नहीं मानी जानी चाहिए, क्योंकि यह अनिर्णय और अनिश्चितता में हाथ-पैर मारने का मामला है?

जल्द ही उसने एक अधिक गम्भीर चीज़ के प्रति जागरूक होना शुरू किया। वह न सिर्फ एक अवास्तविक प्रेत था–वह टुकड़े हो चुका एक खंडित प्रेत था–नन्हीं हड्डियों और नसों का एक ऐसा ढेर जिसे कोई समेट भी नहीं सकता था। "अगर मेरे पास" उसने लिखा–

मिसाल के लिए ऊपर वाला होंठ न होता या एक कान या एक पसली या एक उँगली, अगर मेरे सिर पर बिना बालों के टुकड़े होते या मेरे चेहरे पर चेचक के निशान होते तो भी वह मेरे भीतर की अपूर्णता की बराबरी नहीं कर सकते थे।

लेकिन यही सब कुछ नहीं था, उसने सारा कुछ कहना था। वह और भी कम था–एक अनुपस्थिति, एक दोष, एक गड्ढा जिसे किसी ने खोदा हुआ था; एक भीषणतम ऋणात्मक चीज़ जिसके बारे में कोई अस्पष्ट ईश्वर कल्पना भी नहीं कर सकता था; वह एक ऐसी रिक्त और बेचैन आकृति था जो अजनबियों के चेहरों पर निगाह डाल पाने में अक्षम था; वह नहीं जानता था सवालों के जवाब कैसे दिए जाएँ: न औरों की तरह सोचना, बोलना, खाना, प्रेम करना, सोना वगैरह

Scanned with OKEN Scanner

जानता था। न उसकी कोई बुनियाद थी, न जड़ें-उसके पास आराम करने के लिए कोई ज़मीन न थी, ज़मीन का उतना सा टुकड़ा भी नहीं जिस पर बाक़ी लोगों के कदम पड़ते थे और जहाँ वे दफ़नाए जाते थे; न उसका कोई देश था, न परिवार; न उसके पास दिल था, न भावनाएँ और अगर वह सोचने की कोशिश करता विचार उस तक अपनी जड़ों से नहीं बल्कि बीच के किसी मुकाम से आते थे। "सो कोशिश करो उन्हें थाम पाने की" वह चिल्लाता था–"कोशिश करो घास के एक तिनके को थामने की जो सिर्फ बीच तक उगता है।" उसका जीवन उन जापानी नटों के जैसा था जो एक सीढ़ी पर चढ़े होते हैं जिसका तला ज़मीन पर नहीं बल्कि पीठ के बल लेटे एक-दूसरे आदमी के तलुवों पर होता है और वह सीढ़ी किसी दीवार से टिकी होने के बजाय आसमान में उठी होती है। तो वह क्या कर सकता था सिवा ख़ालीपन में कार्यरत उन ट्रैपीज़ कलाकारों की नकल करने के, जो उसकी कला के सबसे वफादार बिम्ब थे? क्या उसे भी उस बिना तले की सीढ़ी पर नहीं चढ़ना चाहिए था? इस प्रकार धीरे-धीरे उसने अपने पाठ सीखने शुरू किए। वह उस बल्ली पर चलता था जो उसे पानी की खोह के ऊपर से ले जाती थी जबकि उसके पैरों तले कोई बल्ली नहीं होती थी। वह पानी में प्रतिबिम्बित होती अपनी आकृति भर देख पाता था, और वह प्रतिबिम्ब उसकी ज़मीन थी जिस पर उसे चलना था; उसका अवास्तविक ईगो कभी-कभी इतना शक्तिशाली हो जाता था जितना पाँच ज्ञात महाद्वीपों का आकार होता है और उसकी मदद से वह संसार को अपने पैरों तले एक बनाए रखता था। वह अपनी बांहें फैलाए लगातार चलता जाता था जो उसके लिए रस्सी पर चलनेवालों के लम्बे डंडे का काम किया करती थीं।

इस तरह उसका नाज़ुक और अंत्येष्टिभरा जोकरपना शुरू हुआ जिसे वह मरने के ठीक पहले शुरू करता है मानो अपने कैशार्य का आख़िरी बार अभिवादन कर रहा हो। कभी वह बादलेयर का मसख़रा होता था–अमूर्त, अमानवीय, लेशमात्र संवेदना से रहित; कभी वह जूल्स लाफोर्ज के मसखरे के डबडबाते आँसुओं की मूर्खतापूर्ण संवेदनशीलता को अभिव्यक्ति देता था; कभी वह एक गतिमान डोलते हुए बांस जैसा दिखाई देता था जिसके ऊपर अटपटे ढँग से पीली त्वचा और काले बालों वाली एक खोपड़ी टँगी होती थी; कभी वह वाडूविल नाटकों में भूमिका निभाता दिखता था, खीझ के साथ हवा में लात मारता हुआ जिसके कारण उसके जोड़ों के कड़कने की आवाज़ आती थी; कभी वह एक हसीदी मूर्ख बन जाता था जिसके लिए उसके पैरों तले चार बोर्ड और कुछ रंगीन चिथड़े पर्याप्त होते थे कि वह सूखे रोने के साथ बिना परेशान हुए उस कामचोर आदमी की कहानी सुना सके जो दबाव के कारण ज़मीन पर सपाट पड़ा रहता था और दबाव के कम होते ही पंख की तरह हवा में उठ जाता था; कभी वह मसखरे ओद्राडेक की तरह धागे की एक सपाट लच्छी बन जाता था, वस्तु भी और अवस्तु भी, अविश्वसनीय रूप से गतिशील, नवजात सरीखा, जो दुछत्तियों सीढ़ियों और गलियारों में रहता था, और जो मरी पत्तियों की फड़फड़ाहट की तरह हँसा करता था ये सारे मसखरे समय की एकरसता और बोझिलता से बचने के लिए नाटक किया करते थे–वे शून्य और उदासी के साथ अपनी भूमिकाएँ निभाते थे जहाँ बहुत सारे कोई नहीं होते थे। वे सैमुएल बैकेट के मसख़रों के पूर्वज थे। इन खेलों का पहला परिणाम 'डेस्क्रिप्शन ऑफ अ स्ट्रगल' के रूप में सामने आया जो एक बेहद धुंधले नशे की किताब है और एक निरन्तर आनन्दातिरेक की। कथ्य की छलांगों और शैली के नशीले परिवर्तनों की बुनियाद पर लिखी गई यह किताब एक साथ कोमल, विडम्बनापूर्ण, सनकभरी, परिवर्तनशील और अलहदा है। एक लेखक के तौर पर काफ़्का बिना पाप और अध्यात्म के इसी किताब के साथ रुक गया होता अगर 1912 की एक रात उसके अवचेतन के ज्वार ने उसे झिंझोड़ न दिया होता; उसके बाद उसकी युवावस्था के सारे सारहीन खेलों ने ख़त्म हो जाना था।

अपनी व्याख्या करने वाली अनुभूतियाँ उसके लिए पर्याप्त नहीं थीं-उसे भान हुआ कि वे एक अंधे गलियारे में ले जाती थीं। झकझोर देने वाली कल्पना और एक अतिप्रचुर फन्तासी की मदद से जिन्हें उसका ईगो लगातार उसके भीतर दमकाता रहता था उसने अपने लिए लगातार नए चरित्रों की रचना की जो एक ही साथ ठोस पात्र भी थे और बड़े विम्ब भी। वह जानता था कि चीज़ों को उनके स्थान से हटाकर ही सत्य की सुनिश्चितता की जा सकती है। कुछ सालों बाद 'डायरीज़' और 'मैडिटेशन' के कुछ श्लाघनीय पृष्ठों में उसने खुद को एक अविवाहित की छवि के रूप में प्रस्तुत किया–

> *वह अपनी जैकेट के बटन लगाए चलता है, उसके हाथ जैकेट की जेबों में, बाहर को निकली कोहनियाँ, उसका हैट उसके माथे तक नीचे किया हुआ, जबकि अब तक निर्जीव हो चुकी मुस्कान ने उसके होंठों की उसी तरह हिफाज़त करनी चाहिए जैसे चश्मा उसकी आँखों की करता है, और उसकी दुबली टांगों पर उसकी पतलून इतना कसी हुई है कि वह जंचती नहीं।*

कैसी सच्ची यातना के साथ वह उस बूढ़े अविवाहित व्यक्ति की शामों का वर्णन करता है जो दोस्तों और अजनबियों से शाम बिताने के लिए साथ की गुहार करता है; उसका अकेले घर लौटना, दरवाज़े पर की 'शुभरात्रियाँ', पत्नी के साथ सीढ़ियों पर जल्दी-जल्दी न चढ़ पाने की मजबूरी, अकेले बिस्तर पर उसकी लम्बी बीमारी, अनन्त हफ़्तों तक कमरे के बारे सोचते हुए और खिड़की के बारे में जिसके पीछे अस्पष्ट आकृतियाँ गतिशील रहती हैं, और उसके कमरे के दरवाज़े जो अजनबियों के कमरों की तरफ़ जाते हैं।

फ्लाबेयर की तरह वह भी कहा करता था कि वे सारे लोग जिनके बच्चे होते हैं, वे सत्य के साथ रह रहे होते हैं। उसने केवल एक मेज़ को देखना होता था जिसके गिर्द एक छोटी और दो बड़ी कुर्सियाँ हों और वह जान जाता था कि अपने पत्नी-बच्चे के साथ वह कभी उस मेज़ पर नहीं बैठ पाएगा। उसे उस आनन्द को महसूस करने की हताशाभरी इच्छा होती थी। "अपने बच्चे के पालने के बगल में उसकी माँ की उपस्थिति में खड़े होने की असीम उष्माभरी प्रसन्नता" के बारे

Scanned with OKEN Scanner

में वह बहुत कुछ कह सकता था। वह सोचता था कि बच्चे पैदा करने से हम अपने ईगो को भूल सकते हैं और अपने स्नायुओं के तनाव से राहत पा सकते हैं। पीढ़ी की निरन्तरता की सुनिश्चितता से मिलने वाली शान्ति में हम अपने तनावों से मुक्ति पाते हैं। यदा-कदा औरों के साथ काम करने में उसे वही आनन्द मिला करता था। वह आशा करता था कि उसके कन्धे का बोझ गुप्त रूप से औरों के साथ बाँटा जा सकता है और यह कि बाक़ी के लोग उसकी मदद को दौड़े चले आएँगे। "ऐसे बहुत कम क्षण होते हैं जब लोगों से मुझे खुशी मिलती है..."—वह फ़ेलीस को लिखा करता था—

> *मैं इस खुशी को सीमित नहीं करना चाहता। मैं उन्हें पर्याप्त स्पर्श नहीं कर पाता। हालाँकि यह बेहद शालीन लगेगा पर मैं उनकी बाँहों में बाँहें डाले चलना चाहूँगा। मैं अपनी बाँह को मुक्त करता हूँ पर तुरन्त उसे वापस खींच लेता हूँ, मुझे वैसा ही करने की इच्छा होती है; मैं हमेशा उनसे बोलने का अनुरोध करना चाहूँगा, मैं वह नहीं सुनना चाहूँगा जो वे मुझे बताना चाहते हैं बल्कि वह जो मैं सुनना चाहता हूँ।*

वह अविवाहित पुरुष 'द बैचलर' इस अजनबी व्यक्ति का आख़िरी अवतार था-पश्चिमी संस्कृति में रास्कोल्निकोव द्वारा अख़्तियार की गई अंतिम आकृति; यह शख़्स, जो अल्मारियों में रहता है, लोगों से, अपने जीवन से, हर किसी चीज़ से एक यातनापूर्ण अलगाव महसूस करता है, जो ब्रह्माण्ड में रची गई चीज़ों को देख पाने में अक्षम है, वह अपने किसी भी कार्य में स्वयं हिस्सा नहीं लेता और अगर वह कभी बोलता है या कोई काम करता है तो "ऐसा लगता है वह किसी रटे गए पाठ को दोहरा रहा है" वह अविवाहित पुरुष काफ़्का की ही तरह दुनिया से लतियाया गया है। वह कहीं भी शामिल नहीं किया जाता था। उसका न कोई केन्द्र था, न सुरक्षा, न परिवार, न आय, न प्रेम-ऐसी कोई चीज़ नहीं जिस पर वह निर्भर हो सकता था; वह सिर्फ अपने आप से रह रहा था, अपनी खुराक पर ज़िन्दा, ख़ुद में अपने दाँत गड़ाता हुआ मानो वह और किसी माँस को जानता ही न हो। उसके कोई मानवीय सम्पर्क नहीं थे। वह अपने आसपास के लोगों के साथ रहना नहीं जानता था—क्योंकि हर व्यक्ति चाहे वह कितना ही प्रिय क्यों न हो, उसे भीषण रूप से नापसन्द था। अगर वह अपने दोस्तों के साथ बात करता हुआ किसी कमरे में होता था जहाँ मौजूद लोग उसे प्यार करते थे, वह अपनी जुबान खोल पाने में खुद को असमर्थ पाता था-पूरा कमरा उसे कंपा देता था, और उसे लगता था कि वह मेज पर बंधा हुआ है। उसकी सलेटी आँखें औरों को एक बर्फीली अजनबी निगाह से देखती थीं मानो वे किसी दूसरे ग्रह से या अस्तित्व के अँधेरे तहखानों से उठ कर आई हों।

कुछ लोगों के लिए अकेलापन आनन्द हो सकता है—शान्ति और आराम का पर्याय; लेकिन उस अविवाहित और काफ़्का के लिए वह एक ऐसे बेआवाज़ अभिशप्त जानवर की खोह था जहाँ से वह बाहर आना ही नहीं चाहता; वह घर की दुछत्ती में पड़ी किसी चीज़ का

अकेलापन था जिसे वापस नीचे लाने का कोई भी कभी भी प्रयास नहीं करेगा। उस निपट एकान्त में कैसे स्वप्नों से उसका मन भरा रहता था? और अगर कहीं किसी कारण या ग़लती से वह लोगों की धरती पर कदम रखता था तो वह तुरन्त वापस एकान्त और समाज की सीमा पर वापस लौट जाया करता, जो 'द कासल' का बर्फ से ढँका इलाका है जहाँ वह किसी सन्देश का इन्तज़ार करता लगता था। सिवा गलियों और गटर के उसका कोई घर न था। या शायद होटलों के कमरों में उसका सच्चा घर था-किसी अजनबी का घर जहाँ की चीज़ें आपके भीतर कोई अपनापन पैदा नहीं करतीं-न जाने-पहचाने पुराने सोफे, न काग़ज़ों से अटी डेस्क, न कपड़ों से भरी अल्मारी, न वे आरामकुर्सियाँ जो बाँहें फैलाए आप का स्वागत करती हैं। होटल का कमरा एक तरह से बन्द जेल था और वह किसी क़ब्र जैसा लगता था—उसकी क़ब्र जैसा जिसे वह और तमाम चीज़ों पर तरजीह देता था।

> *होटल के कमरे में मैं पूरी तरह आराम में होता हूँ...मेरे पास अपने लिए होटल की चार दीवारें होती हैं और यह जानते हुए कि उसे बन्द किया जा सकता है और यह कि चीजें सुनिश्चित जगहों पर रखी हुई हैं मुझे एक सुकून मिलता है कि मैं एक ऐसे अस्तित्व में ताज़ी साँस ले सकता हूँ जिसे अभी पूरी तरह ख़त्म होना बाक़ी है और जो संभवतः बेहतरी की संभावना लिए हुए है और जिसे शायद होटल के इस ठण्डे क़ब्रनुमा कमरे में ही उचित जगह मिलती है।*

काफ़्का के भीतर जो अविवाहित और अजनबी इन्सान था वह जीवन से भीषण ऊबा हुआ था। वास्तव में नित्यप्रति का जीवन जो इस कदर

Scanned with OKEN Scanner

असुरक्षित और स्पर्शभरा लगता है, उसके भीतर अपार नफ़रत पैदा करता था। वह अव्यवस्था और अराजकता में नहीं रह सकता था। उससे अपने परिवार का गर्मियों वाला घर बरदाश्त नहीं होता था जहाँ खाने की तश्तरी के पास दवाई लगी रुई रखी होती थी जहाँ अधबने बिस्तरों पर कपड़ों के ढेर पड़े होते थे, जहाँ उसका बहनोई अपनी पत्नी को 'माई डार्लिंग' और 'मेरी सब कुछ' कह कर बुलाता था, जहाँ बच्चा फर्श पर टट्टी कर देता था, जहाँ उसके पिता अपने नाती को खुश करने के लिए गाते थे चिल्लाते थे और तालियाँ बजाते थे। "मैं बातचीत करने से ऊब चुका था" काफ़्का कहता था–

> *मैं लोगों से मिलने से ऊब चुका था, मुझे अपने रिश्तेदारों की अन्तहीन बातों को सुनकर उबकाई आने लगती थी। वार्तालाप उन सारी चीज़ों को तबाह कर देता था जो मेरे लिए महत्त्वपूर्ण गम्भीर और सच्ची होती थीं।*

लेकिन इस सब के ऊपर उस अजनबी को जीवन के शोर से नफ़रत थी। उसे फुसफुसाहटों से, खाँसी की आवाज़ से और चिड़ियों के बोझिल गायन से घृणा होती थी क्योंकि आवाज़ जीवन का स्पष्ट लक्षण होता था जो उसे ख़ामोश मृत्यु से अलग करता था; और आवाज़ के माध्यम से कोई भी उस स्वर्ग की शान्ति के भीतर पाप को प्रविष्ट कर देता था। हिस्टीरिया के तनाव के साथ काफ़्का ने 'रीज़' और अपने पत्रों में करीब-करीब पागलपन की हद तक इन आवाज़ों को दर्ज किया है मानो वह अपने ब्रह्माण्ड का संगीत लिख रहा हो। घर पर उसकी बहन और चचेरी बहन की बातें थीं, उसके पिता और बहनोई के ताश के खेल थे, हँसी, चीखें और पालतू चिड़िया की आवाज़ें थीं, शोर था जो दीवार के उस पार के पेड़ के तने जैसा लगता था; ख़ाली दुछत्तियों में लिफ़्ट का शोर था और ऊपर के कमरों में नौकरानियों की चप्पलों की खटरपटर थी और नीचे के अपार्टमेन्ट में बच्चों और नर्सों की अनवरत आवाज़ें। ओरोपैक्स में लिपटे हुए रुई के फाहे कानों के किसी काम नहीं आते थे। उल्टे वे तमाम आवाज़ों को एक भिनभिनाहट में बदल देते थे।

लेकिन अगर वह ख़ामोशी की तलाश में घर से कहीं और चला जाता तो भी किराए के कमरे में एक अजीब हताशा थी। मकान मालकिन इस कदर भाप में बदलती हुई एक परछाई बन जाया करती थी, अगले कमरे में रहने वाला नौजवान शाम को थका काम से वापस आता और तुरन्त सो जाया करता था, ख़ुद उसने अपने कमरे की घड़ी का पेन्डुलम बन्द किया हुआ था पर उससे क्या होना था? दरवाज़े पर हमेशा शोर होता था। मकान मालकिन दूसरे किराएदारों के साथ फुसफुसाती रहती थी, बग़ल के कमरे से घड़ी की आवाज़ आती रहती थी, कभी घंटी की आवाज़, कभी खाँसी के दो या तीन दौरे, रसोई में अचानक होने वाला कोलाहल, ऊपर और नीचे की मंज़िलों में होनेवाले शोरभरे वार्तालाप, ऊपर दुछत्ती में अचानक किसी गेंद के लुढ़काए जाने की आवाज़, मानो बोलिंग का खेल चल रहा हो।

> *उस शोर से मैं थोड़ी देर संघर्ष करता था, फिर दस बजे की ख़ामोशी में ख़ुद को बिंधी हुई नसों के साथ बिस्तर पर फेंक देता था लेकिन तब मुझसे काम नहीं हो सकता था।*

काफ़्का को उस अजनबी की पूरी पहचान थी जिसे वह अपने अंदर लिए चलता था–वह जानता था कि उसे शान्ति चाहिए क्योंकि वह मृत्यु का अभिलाषी था।

> *आप जितना गहरा अपनी क़ब्र को खोदोगे उतनी ही शान्ति आप को हासिल होगी।*

तब भी वह उस शुद्ध और स्पष्ट शान्ति की तलाश करता रहा- वह शान्ति जिसे बाक़ी लोग अपनी आवाज़ों से बरबाद करते हैं क्योंकि वे मृत्यु को स्वीकार नहीं करते।

> *मैं फिर से ओतला (उसकी बहन) के साथ जा रहा हूँ, हम दो शानदार जगहों पर गए जिन्हें मैंने हाल ही में खोजा है।*

प्राहा की सीमा पर टहलने के बाद उसने फेलीस को लिखा था–

> *इनमें से पहली जगह अब भी ऊँची घास से ढँकी हुई है, वहाँ एक-दूसरे से दूर और पास बहूत सारे छोटे ढाल हैं जिन पर सूरज अपनी ख़ूबसूरती के साथ भरपूर चमकता है। दूसरी एक गहरी घाटी है... बेहद संकरी और विविधताभरी। ये दो जगहें धरती पर उस स्वर्ग जैसी हैं जो यहाँ से आदमी को निष्कासित करने के बाद बनेगा। ख़ामोशी को तोड़ने के लिए मैं ओतला को प्लेटो पढ़कर सुनाता हूँ जबकि वह मुझे गाना सिखाती है।*

इस तरह धीरे-धीरे उसने अपने क़ैदखाने का निर्माण करना जारी रखा। उसे इससे यातना होती थी। उसे महसूस होता था कि वह पूरी तरह अपने भीतर क़ैद है। वह दूर से आती परिचित लोगों दोस्तों और प्रिय स्त्रियों की आवाजें सुनता था और हताशा में अपनी बाँहें उन तक फैलाता था कि वे उसे मुक्त कर दें। उसे जीवन बेहद ऊब भरा लगता था–वह उसे ऐसा लगता था जैसे किसी शरारत की सज़ा के तौर पर बच्चों को एक ही वाक्य दस, सौ या हज़ार बार लिखने को कहा जाता है। उसे 'उस कसाव' से घुटन महसूस होती थी–उसका अपना चरित्र, उसका घर, प्राहा, दफ़्तर, साहित्य (जो सीमाओं की बाधा था), और समूचा ब्रह्माण्ड उसे चारों तरफ से इस क़दर दबाते थे कि वह घुट जाता था; और उसे लगता था कि जिस अमरता को वह अपने भीतर लिए चलता था वह भी उसे घुटन से भर दिया करती थी ठीक उस कालिखभरे मकड़ी के जालों वाले गुसलखाने की तरह जिसे वह 'क्राइम एण्ड पनिशमेन्ट' के स्विद्रिगेलोव की अमरता के साथ जोड़ कर देखा करता था। वह क़ैद के बारे में खुलकर बात करता था; जैसे-जैसे साल बीतते गए क़ैदखाने की दीवारें भी ऊँची उठती गईं। एक बार मिलेना को चिट्ठी में वह पियोम्बी में कासानोवा के क़ैदखाने के बारे में लिखता है; उस तहख़ाने के बारे में जहाँ के सीलनभरे अँधेरे पानी में चूहे तमाम रात चीख़ा करते थे। एक दफ़ा उसने लिखा–

Scanned with OKEN Scanner

सब कुछ एक फैन्टैसी है—परिवार, दफ़्तर, दोस्त, सड़कें, सब कुछ एक फैन्टेसी है, चाहे वह दूर हो या नज़दीक, चाहे कोई भी स्त्री; लेकिन सबसे नज़दीकी सच ये है कि आप बिना खिड़की दरवाज़ों वाली एक कोठरी की दीवारों पर अपना सिर पटकते रहते हैं।

उसने इस क़ैद से भाग निकलने की कोशिश भी की; संभवतः साहित्य उसके लिए अनन्त की एक विराट उड़ान था; लेकिन क्या विवाह के लिए उसकी इच्छा-चाहे वह जूली के साथ हो या फ़ेलीस के साथ-एक और दूसरी कैद के लिए उसकी चाह की तरफ़ इशारा नहीं करती? इस तरह अन्त आते-आते वह लिखता है—"जेल की मेरी कोठरी—मेरा किला।" और एक बार मुहावरेदार भाषा में वह कहता है कि असल में जिस कैदखाने में वह रहता है वह नकली है। वह एक पिंजरा था—उसकी सलाखें एक-दूसरे से मीटर भर की दूरी पर थीं जिनके बीच से दुनिया के लापरवाह और अधिकारपूर्ण रंग और उसकी आवाज़ें भीतर आया करते थे मानो वह उनका घर हो; वैसे कहा जाए तो वह मुक्त था, वह हर चीज़ में हिस्सा ले सकता था, बाहरी संसार में घटने वाली कोई भी बात उससे बच नहीं पाती थी, यहाँ तक कि वह अपने पिंजरे को छोड़ भी सकता था। आज़ादी और कैद के दरम्यान की उसकी स्थिति के लिए बेहोशी से भरा उसका क्लास्ट्रोफोबिया किसी काम का नहीं था। वह पूरी तरह सांकलों में बन्द कर दिया जाना चाहता था, दुनिया से कटा हुआ, दुनिया से ठुकराया हुआ; वह चाहता था उसके चारों तरफ अभेद्य ऊँची दीवारें हों ठीक ग्रेगोर साम्सा के कमरे की तरह या उस कोठरी की तरह जिसमें वह लिख पाने का स्वप्न देखता था।

अगर वह कभी अपने बारे में सोचता शुरू करता तो वह जानता था कि एक मसखरे की तरह वह प्रारंभिक पराजय का एक शिशु था और इस तथ्य को समझाने के लिए उसके पास पाप और पतन जैसे अध्यात्मिक स्पष्टीकरण के अलावा कोई शब्द न थे। ट्रैपीज़ कलाकार की तरह उसे मालूम था कि उसके पैरों तले कोई ज़मीन नहीं है- लेकिन उन दोनों में इतना फर्क था कि ट्रैपीज़ कलाकार की सुरक्षा के लिए नीचे एक जाल हुआ करता है। जहाँ सारे मनुष्यों के पास जगह थी चाहें वे बिस्तर पर बीमार ही क्यों न पड़े रहते हों- क्योंकि ख़ुद की जगह के अलावा वे अपने परिवारों की जगहों पर भी रहते हैं-उसके पास भी जगह थी जो वर्षों के बीतने के साथ छोटी होती चली गई और जब उसकी मृत्यु हुई उसका ताबूत ही उसके लिए सही नाप का था। जहाँ दूसरे लोगों को मृत्यु ने मार गिराना होता है क्योंकि उनके स्वस्थ सम्बन्धी उन्हें ताक़त देते हैं वह लगातार सिकुड़ता हुआ कमज़ोर पड़ता गया और उसने ख़ुद को मृत्यु को सौंप दिया और वह एक तरह से अपनी इच्छा से मरा जैसा ग्रेगोर साम्सा गतिहीनता और बलिदान के कारण मरता है। उसके पास समय भी नहीं था। बाक़ी के लोग बेहद अमीर थे क्योंकि वे अपने भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी थे। चूँकि उसके पास अपने सामने कुछ नहीं था सो उसके पीछे भी कुछ नहीं था। उसके पास कोई सपने नहीं थे, न कोई भविष्य इसलिए उसका कोई भूत भी नहीं था क्योंकि स्मृतियों को क्रमबद्ध

Scanned with OKEN Scanner

करने को भविष्य की यही छवि हमारे पास होती है। भूत, भविष्य और वर्तमान के इस विराट विस्तार में उस के पास फ़क़त एक क्षण था-एक अस्थाई क्षण भर। उसे लगता था कि इस सूक्ष्म ख़ज़ाने के अलावा उस के पास कुछ नहीं है और बस समय के बीतने के साथ वह इस क़ाबिल हो सका कि अपने क्षणों को समय में तब्दील कर सके और अपने शरणार्थी विचारों और हिस्सों को एक कहानी की सहानुभूतिपूर्ण निरन्तरता में बदल सके। जब वह और अधिक सोचता था तो उसे लगता था कि उसके पास कोई देह भी नहीं है-ठीक उसके चाचा की तरह जो इस क़दर भारहीन, पतले, सनकी और हवादार थे कि वे उन चिड़ियों जैसे लगते थे जो प्रकृति की शान्ति में बमुश्किल कोई ख़लल डालती हैं। एक जगह मैक्स ब्रॉड को लिखता है–

मेरा रक्त मुझे पुकारता है कि मैं अपने चाचा का अवतार बनूँ जो एक गाँव में चिकित्सक थे और जिनको मैं (बेहद आत्मीयता के साथ) 'चहकनेवाला' कहा करता था क्योंकि उनके पतले गले से चिड़ियों जैसी महीन आवाज़ निकलती थी और उनके पास उन्हीं की जैसी 'विट' भी थी जो ताज़िन्दगी उनके साथ रही। सो वह गाँव में रहता है और उसे वहाँ से उखाड़ा नहीं जा सकता और वह अपने दवे पागलपन के साथ यथासंभव संतुष्ट रहता है। यह उसे जीवन के संगीत जैसा लगता है।

जब उसकी आत्मा के ऊपर हताशा की हिंसक हवाएँ चिंघाड़ा करती थीं उसकी कोमल, चिन्तित, आणविक और त्रासद संवेदनशीलता अचानक उसे पत्थर की तरह ठण्डा और गतिहीन बना देती थी। फिर उसे कुछ भी महसूस नहीं होता था। उसके हाथ-पैर ठण्डे पड़ जाते थे; उसकी नसों में खून जम जाता था; वह पत्थर में तब्दील हो जाता था और उसे अपने भीतर से एक बर्फीली हवा बहती महसूस होती थी जी अपने साथ मृत्यु का स्वाद ले कर आती थी। उसे महसूस होता था कि वह एक मृत व्यक्ति है जो अपने साथ मौत ले कर आता है ठीक उस डूबे हुए आदमी की सतह पर तैरती मृत देह की तरह जो जीवन के लिए संघर्षरत किसी टूटे जहाज के नाविकों को अपने साथ पाताल की गहराइयों में खींच ले जाती है। उस समय उसे लगता था वह किसी चीज़ में बदल रहा है। फ़्लावेयर की तरह उसके भीतर अपने आप को एक असीम आनन्द के साथ चीज़ों में खो जाने की इच्छा नहीं होती थी-न वह पानी की किसी बूँद या पत्थर या सीपी या वाल को तब तक नहीं देखता था जब तक कि वह उनके भीतर प्रवेश नहीं कर लेता था और उनके द्वारा सोख नहीं लिया जाता था। वह पानी की तरह बहता हुआ रोशनी की तरह दिपदिपाता हुआ पदार्थ के भीतर गहरे उतर जाता था। उसे पदार्थ बनने की ज़रूरत नहीं थी वह भीषण बोझिल और निर्विवाद तरीके से चीज़ों की नग्न, खून जमा देने वाली उपस्थिति को अपने भीतर देखता था, चीज़ों की ख़ामोश अनन्तता को और वह इस निश्चित दूसरेपन के अलावा कुछ नहीं था। वह पत्थर को अपने भीतर महसूस करता था–

मैं वही हूँ जो मेरी क़ब्र का पत्थर है...सिर्फ एक धुँधली-सी उम्मीद बची रहती है जो क़ब्र के पत्थर पर खुदे शब्दों से अधिक कुछ नहीं है।

या फिर वह लकड़ी का टुकड़ा भर होता था, तने से अलग की गई एक डंडी जो अब तक सिकुड़ चुकी थी, या फिर कमरे के बीच में कोट टांगने का रैक या फिर एक लोहे का गेट या धागे की लच्छी या लोहे का एक बक्सा जिसमें किसी ने गोली मार कर छेद कर दिया हो। और भी हैबतनाक वह क्षण रहा होगा जब उसने अपने भीतर ओड्राडेक की उपस्थिति को महसूस किया होगा-सितारे की शक्ल की गांठदार धागे की वह लच्छी। वह बेकार चीज़ जिसका कोई उद्देश्य न था और जो पत्तियाँ जैसा हँसती थी-कभी मशीनी, कभी मानवीय और जो तमामतर पीढ़ियों तक बची रही थी–असल में वह और कुछ नहीं खुद काफ़्का थी।

कौन सी बात यह सुनिश्चित कर सकती है कि वह अविवाहित शख़्स कमज़ोर था और उसके भीतर बौद्धिक ज्ञान नहीं था? उसके भीतर अपार ऊर्जा थी। आर्किमिडीज़ की तरह उसने वह लीवर खोज लिया था जिसकी मदद से दुनिया को उठाया जा सकता था। लेकिन तब तक दुनिया ही नहीं बची थी–वहाँ सिर्फ वही था, समूची दुनिया में रहता हुआ; आर्किमिडीज का लीवर ही अब उसके खिलाफ इस्तेमाल किया गया ताकि उसे उसके कब्ज़ों से उखाड़कर ऊपर उठाया जा सके। जहाँ आर्किमिडीज़ का काम एक गणितीय मस्तिष्क की विजय था जो चीज़ों पर शासन करता है; इस अविवाहित शख़्स का काम

सिर्फ़ अपने स्वाभिमान के कब्जे उखाड़ कर उसे तहस-नहस करता। वह भी जिया और बाक़ी लोगों की तरह उसने भी एक रास्ते पर चलना चाहा, लेकिन उसे लगता था कि जिए जाने का साधारण तथ्य उस रास्ते में बाधा खड़ी करता है जिस पर उसे चलना चाहिए। वह अपने लिए खोली गई उस सड़क पर अकेला था जैसे किसी गिरे हुए पेड़ का तना या एक बड़ा पत्थर। जीवन का प्रमाण उसे उस मनुष्य के रूप में नहीं दिया गया था जो साँस लेता है, चलता फिरता है, जिसके पास एक देह होती है और जो स्वतंत्र होता है; उसे यह प्रमाण ख़ुद अपने रास्ते की बाधा बनाकर दिया गया था–

वह अपने माथे को अपने ही माथे से टकराता है जब तक कि ख़ून न निकलने लगे।

वह स्वयं कुछ नहीं था–वह एक युद्ध का मैदान था जहाँ असंख्य दुश्मन एक-दूसरे से लड़ते रहते थे-वे सारे उसी के भीतर से निकले थे और एक-दूसरे को औरों के ऊपर फेंका करते थे। शुरुआत से ही एक उसका पीछा करता था, शायद यही उसका भाग्य था वह परिस्थिति जिसमें उसे जबरन ठेल दिया गया था। दूसरा आगे से उसका रास्ता रोकता था–संभवतः यह ख़ुद काफ़्का था जिस तरह वह जीता था। इसके अलावा एक वह ख़ुद था जो ख़ास मौकों पर इन दोनों से बना होता था। उसके अस्तित्व के प्रतिबन्धित मैदान में ये दोनों दुश्मन आपस में नहीं लड़ रहे होते थे बल्कि वे एक साथ उससे लड़ते थे–एक सामने से, एक पीछे से। फिर तीसरा दुश्मन था जो सबसे ख़तरनाक था–ख़ुद वह क्योंकि बाक़ी दो दुश्मनों की नीयत के बारे में जानना आसान था। लेकिन ख़ुद अपनी प्रवृत्तियों को वह कैसे जान सकता था? समय और परिस्थितियों के हिसाब से इन शत्रुओं की रणनीतियाँ बदलती रहती थीं। अजनबी जानता था कि आत्मा के लिए इस सतत संघर्ष में इन में से किसी एक की विजय के साथ मुक्ति की आशा नहीं की जा सकती क्योंकि असल में वह हार रहे दुश्मन की मदद करने पहुँच जाता था जो ख़ून से लथपथ गिरा हुआ होता था। उसका सिर्फ़ एक स्वप्न था–एक ऐसी अँधेरी रात हो जैसी कभी न हुई हो; उस रात वह उम्मीद करता था कि वह युद्ध का मैदान छोड़ देगा और अपने अनुभव के कारण उसे अपने दुश्मनों के युद्ध का रैफरी बनाया जाएगा। इस तरह उसकी मुक्ति युद्ध के समाधान में निहित नहीं थी-संभवतः उस युद्ध का कोई समाधान नहीं था जिसने काफ़्का नाम अख़्तियार किया था। इकलौती उम्मीद यही थी कि वह युद्ध का मैदान किसी और का बन जाए ताकि वह उसे किसी तमाशे की तरह देख सके। क्या इस इच्छा का कोई आधार था? उस के जीते जी नहीं-क़रीब क़रीब अन्त तक काफ़्का लगातार उस संघर्ष से प्रताड़ित रहा जिसमें किसी भी शत्रु की मौत नहीं हुई। उसे केवल साहित्य ही सहारा देता था-लेखन का वह गतिमान काम जिसमें उसकी संवेदनाएँ चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होती थीं जहाँ कथावाचन का संपूर्ण शिल्प-बन्द और अस्पष्ट-उत्पन्न होता था और वह ख़ुद बाहर रहता था; वह किताब की संपूर्णता जैसा होता था और ग़ौर से देखता हुआ संभवतः रेफ़री का काम भी करता चलता था।

उसका मानवेतर प्रवाह उसके घावों को और गहरा कर दिया करता था–बजाय उन्हें सहलाने के। चीज़ों की नकल कर पाने की उसकी प्रतिभा उसे यह मौका देती थी कि वह हर पल अपने आप को ख़ुद से अलग कर सके और सबसे ठण्डे न्यायाधीश की तरह अपने आप को बाहर से देख और परख सके। वे सारे हथियार और सारे आरोप जिन्हें वह 'डायरीज़' और 'लैटर्स टु हिज फादर' में उछालता है वापस उसी को चोट पहुँचाते थे। वह अपने आप पर आरोप लगाता था अपने को यातना देता था और अपने ही को घायल करता था।

जिस तरह दूरबीन हमेशा ग्रहों की तरफ लगी रहती है मैं चाहता हूँ हर रोज़ कम-से-कम एक पंक्ति मेरी तरफ आरोप की तरह उठी रहे।

चाहे वह जो भी करता वह अपने आप को अपराधी समझता था-एक महान पापी। यहाँ तक कि जब बर्लिन में फ़ेलीस को दाँत दर्द होता था या जुकाम। उस विराट त्रासदी के लिए 'पौरुषातिरेक' एक कमज़ोर शब्द लगता है जो उसके कमरे की चार दीवारों और ख़ाली पन्नों के दरम्यान लगातार घटा करती थी।

अपनी आत्मा की गहराइयों में उसे और बहुत ज्यादा चाहिए था। वह यातना सहना चाहता था, वह ख़ुद को बलिदान कर देना चाहता था, भस्म कर दिया जाना चाहता था वह–भूसे के ढेर की तरह जिसकी नियति गर्मियों में आग में जल जाना होती है-ईसामसीह की तरह या फिर अपनी युवावस्था के दो नायकों गियोर्ग बेन्डेमेन और ग्रेगोर साम्सा की तरह जो आत्मदाह कर के प्रकृति के बिगाड़ दिए गए साम्य को पुनर्स्थापित करते हैं। जैसा कि उसने मैक्स ब्रॉड को बताया था वह इस बारे में निश्चित था कि मृत्युशैया पर वह 'बेहद संतुष्ट' होगा बशर्ते दर्द बहुत ज्यादा न हो। उसके नायकों की मृत्यु अन्यायपूर्ण होती है–ईडिपल प्रेम की घुटन के कारण, नदी में डूबने से, खाने की कमी से या दिल में चाकू घुसने से। लेकिन जब वे मर रहे होते थे, वह अजनबी उनके साथ उनके भीतर एक विचित्र खेल जारी रखता था। वह मृत्यु से खुश होता था और अपनी अतिमानवीय कराहों में वह अपनी गुप्त प्रसन्नता, स्पष्ट दिमाग़, धीमी आवाज़, चालाकी भरे दिखावे, नाजुक जोकरपने और अध्यात्मिक अभिलाषा को प्रस्तुत किया करता था–उस सब को जो उसके भीतर बेहद शान्त रहा करता था–हिन्दुस्तान में रहने वाले फीनिक्स पक्षी की तरह जो बिना स्त्री-बच्चों के जब अकेला खजूर के पत्तों में लिपटा मरने वाला होता है उसकी चोंच के सौ छिद्रों से बेहद मुलायम, शुद्ध, टूटे दिल वाली और बिंधी हुई आवाज़ें निकलने लगती हैं।

(काफ़्का-पीएत्रो चिताती-अनुवादः अशोक पाण्डे, संभावना प्रकाशन से साभार)

Scanned with OKEN Scanner

'के' से काफ़्का पढ़िए!

सुधांशु गुप्त

सुधांशु गुप्त

13 नवंबर 1962 को सहारनपुर में जन्म। दिल्ली में शिक्षा-दीक्षा। अनेक प्रकाशन संस्थानों के अलावा दिनमान, दैनिक हिन्दुस्तान में पत्रकारिता। सभी साहित्यिक पत्रिकाओं में कहानियाँ प्रकाशित। अनेक कहानियाँ रेडियो से प्रसारित। रेडियो के लिए विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक पुस्तकों का रेडियो रूपांतरण किया। दूरदर्शन और अन्य सरकारी चैनलों के लिए धारावाहिकों का लेखन। पिछले पाँच साल से अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए नियमित लेखन। चार कहानी संग्रह- खाली कॉफ़ी हाउस, उसके साथ चाय का आख़िरी कप, स्माइल प्लीज़ और तेरहवाँ महीना प्रकाशित। योगेश गुप्त समग्र का कथाकार महेश दर्पण के साथ सम्पादन। कुछ किताबें कुछ बातें-नेपथ्य में विमर्श, आलोचनात्मक पुस्तक प्रकाशित।

मो. 9810936423

फ्रान्ज़ काफ़्का के निधन को 100 साल बीत गए हैं। आज कहीं भी 'k' लिखा दिखाई देता है तो पता नहीं क्यों काफ़्का पढ़ा जाता है। हर बार काफ़्का... काफ़्का... काफ़्का...। शायद इसकी वजह यह हो कि काफ़्का के उपन्यास 'द ट्रायल' और 'द कैसल' का नायक 'के' ही है। उनकी कहानियों में भी 'के' किरदार की तरह बहुत बार आता है। के फॉर काफ़्का पढ़ना मेरी ही दिक्कत नहीं है। मुझे लगता है पूरे विश्व साहित्य में आज k फॉर काइट नहीं पढ़ा जाता बल्कि k फॉर काफ़्का पढ़ा जाता है। पता नहीं किस उम्र में काफ़्का को पढ़ना शुरू किया था, लेकिन जब-जब पढ़ा लगा कि यही वह लेखक है जो आपके मन की बात समझ लेता है... नितांत मौलिक और कृत्रिमता से दूर। काफ़्का के बारे में यह भी पढ़ा कि वह बहुत निराशावादी और अवसाद में रहने वाले लेखक थे। सोचा, क्या लेखक को निराशावादी नहीं होना चाहिए, क्या काफ़्का की निराशाएँ उनकी निजी निराशाएँ थीं?

1883 में एक धनी यहूदी परिवार में काफ़्का का जन्म हुआ और 1924 में उनकी मृत्यु हो गई। वह स्वयं चेक थे लेकिन उन्होंने अपनी सभी पुस्तकें जर्मनी में लिखीं। इस अल्पकाल में ही उन्होंने अपनी ख़ास शैली विकसित की जिसे आज 'काफ्काई शैली' कहा जाता है। काफ़्का के व्यक्तित्व का तिलिस्म लगातार उनकी तरफ़ ले जाता है। मन में सवाल उठते हैं कि काफ़्का की दुनिया कैसी रही होगी, उनका व्यक्तित्व, उनका रचना संसार, उनके बिंब, उनकी सोच, राजनीतिक समझ, कहानी और कला के बारे में उनका नज़रिया, वह किन लेखकों को पढ़ते-पसंद करते थे, जीवन मृत्यु और सत्य के बारे में उनका दृष्टिकोण, बाहरी दुनिया से काफ्का के संबंध किस तरह के थे और सबसे अहम बात क्या काफ्का भविष्य की दुनिया की कल्पना कर पाने में सक्षम थे। इन सारे सवालों की खोज ने गुस्ताव जैनुक की 'काफ्का के संस्मरण' (वल्लभ सिद्धार्थ ने इसका अनुवाद किया और संवाद प्रकाशन ने छापा) को पढ़ने का संयोग बना दिया।

गुस्ताव जैनुक की काफ़्का से मुलाकात 1920 के अंतिम दिनों में हुई थी। और एक जून 1924 को दुनिया के इस महान लेखक को प्राग की यहूदी सिमिट्री में दफ़्ना दिया गया था। और चार साल के इस छोटे-से समय में गुस्ताव ने काफ़्का की दुनिया को जिस तरह से पकड़ा, पहचाना और डिकोड किया, वह सचमुच चकित कर देने वाला है। काफ़्का इस किताब में बदलते यथार्थ के साथ दिखाई पड़ते हैं। काफ़्का की कहानियों में किरदार कहां से आते हैं, वह भाषा की बजाय बिंबों का अधिक प्रयोग क्यों करते हैं, अपनी कहानियों और लेखन के प्रति क्यों इतने सख्त हैं और दुनिया को लेकर उनकी क्या सोच है, युवा लेखकों को वे किसी तरह देखते हैं, इन सब सवालों के जवाब 'काफ्का के संस्मरण' में मिलते हैं। काफ़्का का जीवन दर्शन किसी समाज किसी परिवेश और किसी समय सीमा में नहीं बंधा है। वह हर समय और हर तरह के समाज पर लागू होता है। एक जगह काफ़्का युवा कवि के बारे में कहते हैं, तुम्हारी कविताओं में शोर बहुत है। यह यौवन का बाई प्रोडक्ट है, जो जीवंतता के अतिरेक की ओर संकेत करता है, इसलिए ख़ूबसूरत लगता है, हालांकि कला से इसका कुछ लेना देना नहीं, इसके विपरीत शोर अभिव्यक्ति का मारक होता है। क्या ये

Scanned with OKEN Scanner

बात आज के कवियों को नहीं समझनी चाहिए?

'काफ़्का के संस्मरण' में एक जगह गुस्ताव लिखते हैं– जहाँ कहीं शब्दों के बजाय मुद्रा से काम चल सकता है, काफ़्का चलाते हैं। एक मुस्कान, भौंहों को सिकोड़ना माथे पर सलवटें, होंठों का खुलना या बंद होना, ये सब काफ़्का के लिए शब्दों के विकल्प हैं। काफ़्का को मुद्राओं से प्रेम है, इसलिए वे इस मामले में मितव्ययी हैं।

नीली-भूरी आँखों वाले काफ़्का जीवन भर बीमा संस्थान में नौकरी करते रहे। अपने संस्थान को वह यातना शिविर की तरह देखते थे। इसके बावजूद उन्होंने अपने काम में कोई कोताही नहीं की। भय, पीड़ा, संत्रास और यथार्थ की दुनिया उन्होंने यहीं रची। एक जगह काफ़्का कहते हैं, जो लोग नौकरी को लेकर बहुत फिक्रमंद होते हैं, वे बहुत गंदी हरकतें कर सकते हैं। काफ़्का नौकरशाहों को जल्लाद के रूप में देखते थे। वे कहते थे, वे जीवितों को मृत-कोड नंबरों में तब्दील कर देते हैं, जिनमें कभी कोई बदलाव नहीं आता। क्या आज हम अपने आसपास ऐसे ही लोगों को नहीं देख रहे हैं? युवावस्था और सौंदर्य के प्रति काफ़्का में गजब का आकर्षण था। उनकी एक कहानी

Scanned with OKEN Scanner

"खलासी" में यह आकर्षण दिखाई पड़ता है। काफ़्का कहते हैं, यौवन प्राकृतिक तौर पर धूप और प्रेम से भरा रहता है, क्योंकि वह सौंदर्य देख सकता है। जब सौंदर्य देख पाने की क्षमता खत्म हो जाती है तो अभिशप्त क्षरण, दुख और बुढ़ापे की शुरुआत हो जाती है।

काफ़्का गुस्ताव की रचनाएँ पढ़ने के लिए व्याकुल थे। गुस्ताव ने एक संग्रह बनाया और उसे शीर्षक दिया-अतल के क्षण। इस पर काफ़्का की टिप्पणी थी-तुम्हारा लेखन अभी कला नहीं बना। भावनाओं और प्रतिक्रियाओं का वर्णन अपने आप में एक अंधी तलाश है। तुम्हारी आँखें अभी स्वप्न भरी हैं। जो कि समयांतर में खुल जाएंगी, तब शायद तुम्हारा तलाश के लिए बढ़ा हुआ हाथ इस तरह छिटक जाएगा, जैसे आग छू ली हो। तब शायद तुम चीखोगे, लड़खड़ाओगे...और आँखें फाड़कर देखोगे...लेकिन ये शब्द हैं। कला हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मामला होती है। यही कारण है कि बुनियादी तौर पर कला शोकात्मक होती है।

ऐसा नहीं है कि काफ़्का साहित्य और कला की दुनिया की ही समझ रखते थे। काफ़्का की भारतीय धार्मिक पुस्तकों के विषय में भी अपनी राय थी। उनका कहना थाः भारतीय धार्मिक पुस्तकें मुझे एक साथ आकर्षित और विकर्षित करती हैं। उनमें जैसे नशा और भय दोनों है। उनके सारे योगी और जादूगर प्रकृति पर अपने स्वतंत्रता-प्रेम के कारण आधिपत्य नहीं करना चाहते, तो जीवन के प्रति छिपी हुई विरक्ति के कारण। निस्सीम निराशावाद भारतीय धर्म का स्रोत है।

काफ़्का मैक्सिम गोर्की, तोलस्तॉय और दोस्तोव्स्की को पढ़ते थे। एक बार गुस्ताव ने उन्हें मैक्सिम गोर्की की 'तोलल्तॉय के संस्मरण' का चेक अनुवाद दिया तो उन्होंने कहा, गोर्की का कमाल इसमें है कि वे बिना कोई निर्णय दिए चरित्र-चित्रण करते हैं। मैं कभी देखना चाहूंगा कि वे लेनिन पर किस तरह लिखते हैं। लेनिन गोर्की के मित्र हैं, लेकिन गोर्की हर चीज़ क़लम के माध्यम से देखते और महसूस करते हैं। तोलस्तॉय पर उनकी टिप्पणियों से यही प्रकट होता है।

पूरी दुनिया को एक क़ैद समझने वाले काफ़्का की "कायांतरण" कहानी का नायक एक कीड़े में बदल जाता है। यह कहानी भयानक दुःस्वप्न की तरह है, एक भयानक अवधारणा.... काफ़्का कहते हैं, सपने सच को प्रकट करते हैं जबकि अवधारणा उसकी छाया होती है, यही जीवन की भीषणता और कला का त्रास है। जीवन से इतने विरक्त रहने के बावजूद काफ़्का की जीवन में गहरी आस्था थी। एक जगह वह कहते हैं, एक जीवन से मनुष्य कई किताबें निकाल सकता है, लेकिन कई किताबों से बहुत कम जीवन। स्वतंत्रता के बड़े पक्षधर काफ़्का का मानना था-बाहरी उपकरणों से प्राप्त की गयी स्वंत्रता एक भ्रम है। अपने समय को देखते हुए काफ़्का ने कहा, हमारे समय में न कुछ पाप है न कोई ईश्वर प्राप्ति की इच्छा, हर व्यक्ति दुनियावी और उपयोगितावादी हो गया है। ईश्वर हमारे अस्तित्व की परिधि के बाहर है। इसलिए हम एक विश्वव्यापी आत्मिक पक्षाघात से ग्रस्त हैं।

काफ़्का की दुनिया में होने वाली हर घटना पर नज़र रहती थी। उन्होंने कहा था., युद्ध, रूसी क्रांति और संसार का दुख दारिद्रय मुझे बुराई की बाढ़ की तरह लगते हैं। युद्ध ने (प्रथम विश्वयुद्ध 1914-

18) अराजकता के फ्लड गेट खोल दिये हैं। मनुष्यता के स्तंभ गिर रहे हैं। इतिहास अब व्यक्तियों से नहीं भीड़ से नियंत्रित होता है, हमें घसीटा, दौड़ाया और बहाया जा रहा है...। क्या आज हम भीड़ से ही संचालित होने के लिए अभिशप्त नहीं हैं?

काफ़्का अख़बार पढ़ने को आधुनिक सभ्यता की आवश्यक बुराई मानते थे। उन्होंने कहा था -अख़बार हमें दुनिया भर की घटनाओं के कंकड़-पत्थरों, गंद और धूल मिट्टी से तोप देते हैं। इतिहास को घटनाओं के संचयन के रूप में देखना बेमानी है। ख़ास बात ये है कि घटनाओं का महत्व क्या है, यह हमें अखबारों से नहीं मिलता। यह हमें सिर्फ आस्था और तटस्थ दृष्टि से मिल सकता है।

राष्ट्रवाद को लेकर उस दौर में भी चिंताएं और विमर्श था। लेकिन काफ़्का इस पर कहते हैं, मनुष्य वही पाने की कोशिश करता है, जो उसके पास नहीं होता। टैक्नोलॉजी की तरक्की, जो कि सभी राष्ट्रों के पास है, एक एक कर उनके राष्ट्रीय चरित्र को नष्ट कर रही है। इसलिए अब वे राष्ट्रवादी हो रहे हैं। आज का राष्ट्रवाद, सभ्यता के नये हमले के खिलाफ़ एक सुरक्षात्मक आंदोलन है, जो यहूदियों के मामले में सबसे मुखर है।

सचमुच 'काफ्का के संस्मरण' पढ़ना उस दौर के बरक्स आज के दौर को देखना है। और इस देखने में काफ्का की दुनिया भी शामिल है।

Scanned with OKEN Scanner

काफ़्का: प्रभाव और प्रासंगिकता

केशव चतुर्वेदी

केशव चतुर्वेदी

केशव चतुर्वेदी पत्रकार, अनुवादक और कम्युनिकेशन कंसलटेंट हैं और पर्यावरण संबंधी विषयों में रुचि रखते हैं। उन्होंने नेशनल ज्योग्राफिक चैनल के लिए पाँच सौ से ज्यादा डॉक्युमेंट्रियों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद किया है। वे जलवायु परिवर्तन की राजनीति पर अंग्रेज़ी में एक पुस्तक लिख चुके हैं। हाल ही में उनका हिंदी उपन्यास 'अजायबघर' प्रकाशित हुआ है।

साहित्य में एक सवाल अक्सर पूछा जाता है कि कोई लेखक कैसे कालजयी और प्रासंगिक बना रहता है। इसके कई कारण हैं और तमाम बहसों के बावजूद कोई निश्चित मत भी नहीं उभर पाया है। फिर बात अगर फ्रांज़ काफ़्का की हो तो बहस और दुरूह हो जाती है। लेकिन अगर हम काफ़्का के साहित्य को ध्यान और खुले मन से पढ़ें तो हमें कई पहलू मिलेंगे जो उनके साहित्य में एक अदृश्य धागे की तरह मौजूद हैं। कहा जाता है कि एक व्यक्ति समय और काल से बंधा होता है और उसी की उपज होता है। काफ़्का भी अपने ही देश काल की उपज थे। वे जर्मन मूल के यहूदी थे जिनका जन्म सन 1871 के जर्मन एकीकरण के 12 वर्ष बाद वर्तमान चेक गणराज्य की राजधानी प्राग के एक यहूदी मोहल्ले में हुआ था। यह वही दौर है, जब आधुनिक राष्ट्र की परिकल्पना पूरे यूरोप में काबिज़ हुए मुश्किल से एक शताब्दी हुई थी और इंग्लैंड के बाद अब यूरोप में भी औद्योगिक क्रांति फलफूल रही थी। इसके साथ ही शहरीकरण भी तेज़ी से बढ़ रहा था। लेकिन पुरातन व्यवस्था पूरी तरह ख़त्म नहीं हुई थी। जिस ऑस्ट्रियाई शहर प्राग में वे रह रहे थे, वो मध्य यूरोप के हैब्सबर्ग साम्राज्य का अभिन्न हिस्सा था और पूर्व में तुर्की में ऑटोमन साम्राज्य जीवित था। पारिवारिक सम्बन्ध और समाज में साख अभी भी यूरोपीय व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण थी। लेकिन शहरी जीवन की लगातार बढ़ती पेचीदगियों के कारण जीवन जटिल होता जा रहा था।

ऐसे परिवेश में काफ़्का ने जन्म लिया। चूँकि यूरोप में यहूदी हमेशा से ही हाशिये पर रखे गए, इसलिए प्राग में भी उनका दूसरे समाजों से मेलजोल कम ही रहा। साथ ही उनके पिता के सख्त व्यक्तित्व ने जीवन को कठिन बना दिया। काफ़्का दस बारह वर्ष के थे, जब एक बर्फीली रात उनके पिता ने उन्हें किसी बात पर रात भर घर के बाहर बालकनी में रखा। ठण्ड में ठिठुरते बाल काफ़्का को जीवन भर समझ नहीं आया कि उनसे ऐसी कौन सी ग़लती हुई कि उन्हें इतनी अमानवीय यातना वाली सजा दी गई। बस वहीं से सत्ता, प्रभुत्व और व्यवस्था के प्रति उनके मन में खिन्नता भरी उपेक्षा पैदा हुई, जिसके हर पहलू को उन्होंने अपनी हर रचना में ज़ाहिर करने की कोशिश की।

उस रात के अनुभव और उनसे जन्में सवाल उनकी प्रसिद्ध रचना 'द ट्रायल' (मुकदमा) में उजागर होते हैं। वे पहली पंक्ति में यह कहते हैं कि, ꠸किसी ने ज़रूर 'के' पर लांछन लगाया होगा तभी एक दिन बिना किसी कारण कोई ग़लती न करने पर भी 'के' को गिरफ्तार कर लिया गया'। पहले ही वाक्य से काफ़्का ने एक हास्यास्पद और बेतुकी स्थिति खड़ी कर दी। और-जैसे जैसे उपन्यास आगे बढ़ता गया यह स्थिति और भी दारुण और हास्यास्पद के साथ साथ हृदयविदारक होती चली गई। न पुलिस को पता है कि उसे क्यों गिरफ्तार किया गया꠸। न तो पुलिस को उसके अपराध का पता था और न न्यायधीश को। उसे बचाने वाले वकील को भी पता नहीं कि मुद्दा है क्या? अंत तक नायक व्यवस्था से जूझता रहता है और अंत में थक हार कर अपनी सजा स्वीकार कर लेता है जिसकी परिणीति उसकी मौत के रूप में होती है। लेकिन उसे अपने गुनाह का अंत तक पता नहीं चलता और न ही वह यह जान पाता है कि उस पर क्या आरोप लगे हैं।

Scanned with OKEN Scanner

व्यवस्था या सत्ता और एक आम नागरिक के बीच बढ़ती दूरियाँ उनीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के शुरू में भी इतनी ज़्यादा हो गई थीं कि यह साफ़ हो गया कि दोनों के बीच फासले अब पट नहीं सकते। इसी परिस्थिति को काफ़्का अपनी एक कम प्रसिद्ध कृति 'चीन की दीवार' में प्रस्तुत करते हैं। असल में मूल जर्मन भाषा में लिखी इस कहानी का शीर्षक था 'चीन की दीवार का निर्माण'। निर्माण की प्रक्रिया ही असली कहानी है जो व्यवस्था की जटिलता, सत्ता और व्यक्ति के बीच की असीमित दूरी, व्यक्ति की व्यवस्था में अप्रासंगिकता, जीवन और दूसरों के बनाए लक्ष्यों की पूरी तस्वीर का साफ़ न होना, और बेवजह दिन भर काम में जुटे रहना, जिसका आजीविका कमाने लायक कुछ धन मिलने के अलावा कोई और महत्व नहीं है जैसे काफ़्का के चिरपरिचित विचारों को प्रस्तुत करती है।

काफ़्का की पीढ़ी असल में उस संक्रमण काल में थी, जहाँ अनियंत्रित पूँजीवाद का दंश समाज का मध्यम वर्ग महसूस कर रहा था और कार्ल मार्क्स का साहित्य धीरे-धीरे जनजागरण की ज्योति जला रहा था। रुसी लेखक जैसे फ्योदोर दोस्तोवस्की, निकोलाई गोगोल, फ्रांसिसी लेखक गुस्ताव फ्लॉबेर ऑस्ट्रियाई नाट्य लेखक फ्रांज़ ग्रिल्प्राजेर और जर्मन नाट्य लेखक हेनरिक वॉन क्लिस्ट ने व्यक्ति के सिकुड़ते अस्तित्व और उस पर हावी होती व्यवस्था और उसके नियम-कानूनों पर काफी कुछ लिखा। काफ़्का पर इन लेखकों का गहरा प्रभाव पड़ा। बीसवीं शताब्दी में, पहले विश्व युद्ध के शुरू होने और बोल्शेविक क्रांति से पहले तक भी यूरोपीय जीवन में शहरीकरण पर्याप्त रूप से जटिल हो गया था। इसमें काफ़्का ने अपने अनुभवों को जोड़ा और अपनी कृतियाँ लिखनी शुरू कीं। इसका श्रेष्ठम उदहारण है 'मेटामॉरफोसिस'। अंग्रेजी के इस शब्द का मतलब है रूपांतरण या कायापलट। इस कहानी में एक व्यक्ति है, जो अपने परिवार पर चढ़े क़र्ज़ को चुकाने या परिवार की आजीविक चलाने के लिए बेमन से एक नौकरी करता है। बाद में उसकी नौकरी छूट जाती है क्योंकि वो एक रात व्यक्ति से कीड़े या कॉकरोच में बदल जाता है। इसके बाद वो धीरे-धीरे अपने ही घर में अप्रासंगिक हो जाता है। शुरू में उसकी बहन उसका ख़्याल रखती है लेकिन धीरे-धीरे वो भी उदासीन हो जाती है। उसके पिता कहीं काम शुरू करते हैं और उसकी माँ भी। एक दृश्य में उसके पिता उस पर सेब फेंकते हैं जिससे वो घायल हो जाता है। फिर वही बहन जो कभी उसका ख्याल रखती थी वो अब जवान और सुन्दर स्त्री के रूप में उभरती है और उसे सामने एक उज्ज्वल भविष्य दिखाई देता है। अब उसे अपना भाई उस भविष्य की राह में रोड़ा लगता है और वो जिसने परिवार के विरुद्ध जाकर अपने भाई की मदद की थी, अब अपने परिवार को अपने भाई से निजात पाने की राय देती है। यह देख कर कॉकरोच बना नायक ग्रेगोर सेम्सा दुःख से मर जाता है।

कहानी कई स्तर पर काम करती है। पहला स्तर है, व्यक्ति का एक ऐसे समाज में रहना जहाँ जीवन इस तरह से व्यवस्थित किया गया है कि क़र्ज़ लेना कई बार अनिवार्य हो जाता है। इसके बाद व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छाएं पार्श्व में चली जाती हैं और फिर समाज के नियम कायदे और पारिवारिक ज़रूरतें उसका जीवन तय करती हैं। और जब समाज के बनाए मानकों और छवियों पर आप खरे नहीं उतरते तो अपना परिवार ही आपको दुत्कारता है। उनके दुत्कारने में

Scanned with OKEN Scanner

जो वितृष्णा छिपी है, उसका प्रतीक वो कॉकरोच है जिससे सहज ही लोगों को घिन आती है। आलोचक व्लादिमीर नाबोकोव के मुताबिक काफ़्का ने नायक कायाकल्प के लिए कॉकरोच (या कीड़े) को ही रूपक की तरह इसलिए चुना क्योंकि वे समाज में उसके प्रति व्याप्त जुगुप्सा के ज़रिये कहानी के नायक की घृणित स्थिति को दर्ज़ कराना चाहते थे। पिता का सेब फेंकना भी प्रतीकात्मक है कि उसके द्वारा दी गई मदद में इतनी वितृष्णा भरी है कि वो सेवा नहीं बल्कि चोट की तरह लग रही है।

कायाकल्प असल में व्यक्ति पर तीन स्तर पर पड़ रहे प्रभावों को दिखाती है। पहला, सामाजिक प्रभाव जो व्यक्ति को उसके गुण नहीं बल्कि उसकी अर्थोपार्जन की क्षमता के लिए ही सम्मान देता है। दूसरा है, मनोवैज्ञानिक प्रभाव जो व्यक्ति के ऊपर पड़ता है,जब उसे अपनी अप्रासंगिकता का एहसास होता है। और कहानी का तीसरा आयाम दार्शनिक है, जहाँ इस बहस को छेड़ा गया है कि क्या व्यक्ति अपनी उत्पादकता से जाना जाना चाहिए या अपने व्यक्तित्व और उसकी ख़ूबियों से? क्या जीवन का मतलब अपने विचारों, अपने सपनों को नष्ट करके उस राह पर बढ़ना है जिस पर समाज चाहता है कि आप बढ़ते रहें। और उससे गहरा सवाल यह उठता है कि क्या आधुनिक शहरी जीवन में एक व्यक्ति को अब यह पता भी है कि वो असल में क्या चाहता है और उसका मूल स्वरुप क्या है?

'कायाकल्प' में नायक अपनी ज़िम्मेदारी को बहुत गंभीरता से लेता है इसलिए नौकरी का छूटना उसे मृत्यु तुल्य कष्ट देता है। लेकिन कहानी यह भी दिखाती है कि एक शहरी समाज में व्यक्ति की इच्छा का कोई महत्व नहीं है और जीवन इतना जटिल है कि उसे एक निश्चित खाँचे में ही रहना होगा। उस खाँचे में रहने की शर्त है, समाज के बनाए नियमों और अपने सपनों के बीच सामाजिक नियमों को प्राथमिकता देना, सत्ता के प्रति भय और खीज और फिर यह यक्ष प्रश्न कि हम क्यों जी रहे हैं? स्वतंत्रता और आत्मसम्मान का जीवन में कोई मूल्य है कि नहीं?

काफ़्का को कई खांचों में बांधने की कोशिश की गई, लेकिन वे किसी एक खांचे में बंध नहीं पाते। कुछ उन्हें 'फ़न्तासीवादी' कहते हैं तो कुछ अस्तित्ववादी। कोलम्बियन मूल के लेखक हर्नान डी कारो का कहना है कि काफ़्का ने लेखकों को यह हौसला दिया के वे बेतुकी से बेतुकी लगने वाली बात पर भी ऐसे लिखें जैसे वो अति सामान्य हो। साथ ही उनका कहना है कि काफ़्का के लेखन को फंतासी, अस्तित्ववादी, आदि कुछ भी कहा जा सकता है क्योंकि वे इन सब खाचों में रहने के बावजूद इससे परे हैं।

बात सही भी है काफ़्का यूरोप में जिस जीवन को जी रहे थे और जिसमें उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध की विभीषिका को झेला और हैब्सबर्ग और ओटोमन जैसे सदियों से चले आ रहे दो साम्राज्यों को अपनी आंख के सामने विलुप्त होते देखा, साथ ही जिस व्यवस्था में उन्होंने जन्म लिया था, उस व्यवस्था में आए आमूल-चूल परिवर्तन ने उनके व्यक्तिगत और उनके आसपास के सामाजिक जीवन में जो भूचाल पैदा किया,उन परिस्थितियों को एशिया,अफ्रीका, लातिनी अमेरिका के समाजों ने द्वितीय विश्व युद्ध और अपने उपनिवेशवाद से स्वतंत्र होने के बाद महसूस करना शुरू किया। यही कारण है कि हर्नान कहते हैं, 'मेक्सिको, अर्जेंटीना, पेरू, चिली और कोलंबिया के बहुत से लेखक काफ़्का से प्रभावित हैं। दक्षिण अमेरिका के जादुई यथार्थवाद पर काफ़्का का बहुत प्रभाव है।'

इसका कारण यह है कि 1960 और 1970 के दशक में दक्षिण अमेरिका में आर्थिक के साथ राजनैतिक उथल-पुथल भी हो रही थी। सैनिक तख़्तापलट हो रहे थे। सशत्र क्रांतियां हो रही थीं। एक तरफ़ समाज आधुनिक हो रहा था, दूसरी तरफ़ आर्थिक उदारीकरण के बनाए मायाजाल में फंसता जा रहा था। पुरानी व्यवस्थाएं चरमरा रही थीं और नई व्यवस्था हिंसक दमन में जुटी थी। ऐसे में काफ़्का की 'मुक़दमा' और 'कायाकल्प' के साथ-साथ 'बंधक बस्ती' लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हुई। ऐसे में ही नोबेल पुरूस्कार विजेता गेब्रियल गार्सिया मार्केज़ को किसी ने कायाकल्प पढ़ने को दी और बकौल उनके, 'कायाकल्प ने मुझे अपनी पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया।' हर्नान की बात माने तो मार्केज़ को काफ़्का पढ़ कर यह आत्मविश्वास मिला कि वे जादुई यथार्थ लिख सकते हैं।

इसलिए बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर आजतक के लेखक काफ़्का के किसी एक पहलू से प्रभावित हो कर उसके दम पर अपना कथानक आगे बढ़ाते हैं। यही कारण है कि लोगों को अल्बर्ट कामू की 'द स्ट्रेंजर' में काफ़्का की व्यक्ति के समाज से अलगाव की झलक दिखती हैं। या जापानी लेखक हारुकी मुराकामी के उपन्यास ' काफ़्का ऑन द शोर' (तट पर खड़े काफ़्का) में वे काफ़्का की दार्शनिक सोच को आगे बढ़ाते दिखते हैं, जहाँ एक पंद्रह वर्ष का बच्चा अपने पिता की छत्रछाया से भाग कर अपनी माँ और बहन को ढूंढने निकलता है। और सन 1997 में दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद खत्म होने के दो वर्ष बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिलने पर अकमत दन्गोर द्वारा लिखे गए उपन्यास काफ़्का'स कर्स (काफ़्का का शाप) में लेखक अपने नायक को एक दिन पेड़ में बदल कर उन्हीं विषयों पर चर्चा करते हैं जिनपर काफ़्का आंदोलित होते थे।

स्विस लेखक और नोबेल पुरूस्कार विजेता एलिअस कनेटी के मुताबिक, 'काफ़्का कायाकल्प से बेहतर कुछ नहीं लिख सकते थे क्योंकि कायाकल्प से बेहतर लिखने लायक कुछ है ही नहीं'। शायद एलिअस कनेटी ठीक कह रहे थे। औद्योगिक जीवन पद्धति और शहरीकरण के कारण व्यक्ति जिस एकांगी जीवन जीने और व्यवस्था के आगे पंगु हो जाने से ख़ुद को असहाय महसूस करने को अभिशप्त हो रहा था, उसका सटीक और बेबाक चित्रण करने के लिए काफ़्का अपनी व्यक्तिगत यात्रा से उपजी संवेदनशीलता के साथ सही समय पर खड़े थे। और जब द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरी दुनिया में उसी अमानवीय औद्योगिक संस्कृति का प्रसार हुआ तो लोगों ने पाया कि उन परिस्थितियों के बारे में काफ़्का ने जो कुछ भी लिखा है उसके बाद कुछ नया कहने की गुंजाईश बचती नहीं है।

मो. 9899105022

Scanned with OKEN Scanner

(लेखक के अप्रैल 2018 में प्राग कासल प्रांगण में फ्रांज़ काफ़्का का कमरा देखने के संस्मरण)

कमरा नंबर बाईसः काफ़्का की खिड़की!

स्वाति शर्मा
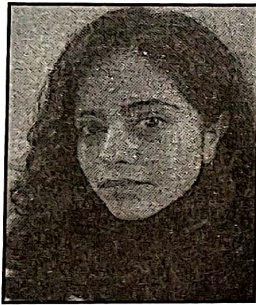
स्वाति शर्मा

राजधानी दिल्ली में जन्मी अंग्रेजी, जर्मन, फ़ारसी तथा हिंदी-उर्दू में लिखने-पढ़ने वाली स्वाति मूलतः हिंदी की कवयित्री हैं। इन सभी भाषाओं से हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद करने वाली स्वाति की कविताएँ, निबंध, समीक्षा, और साक्षात्कार समकालीन भारतीय साहित्य, नया ज्ञानोदय, इंडियन लिटरेचर, वनमाली कथा, कृति बहुमत, अन्विति, संडे नवजीवन, दैनिक जनवाणी, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। स्वाति का पहला कविता संग्रह 'सोलो ट्रिप पर जाती सखी' है। 'युवा सृजन शिखर पुरस्कार' से सम्मानित। साउथ एशिया बीट पर पत्रकारिता की और नासा सम्बंधित कंपनियों में प्रबंधन कार्य किया। सम्प्रतिः दिल्ली में कम्युनिकेशन्स मैनेजर।

नीली दीवारें, हरी दहलीज़, और हरी खिड़की... प्राचीन सरीसृप की भांति रेंगती हुई घुमावदार गली में नीचे की ओर लुढ़कते पैर अचानक इस खिड़की के सामने आ कर ठिठक जाते हैं। खिड़की में डिस्प्ले पर रखी हुई कई किताबें हैं और हर किताब पर एक ही आँखों का जोड़ा... गहरी, अशांत और चमकदार आँखों का जोड़ा, जो सभी आने जाने वालों को गौर से देख रहा है और शायद मुझे भी। चहरे और किताब से भी पहले मैंने आँखों को पहचान लिया है। जब पहली दफ़ा इस तस्वीर में इन आँखों को देखा था तब भी यही महसूस हुआ था कि ये आँखें किसी ऐसे सत्य से वाक़िफ़ हैं, जिसके होने या न होने के आभास से भी मैं अनभिज्ञ हूँ। जैसे ये आँखें मुझे कोई चेतावनी दे रही हैं, जिसे समझने में मुझे ये पूरा जन्म खटाना होगा या शायद और कई जन्म भी।

आज से सालों पहले जब पहली बार किताब के कवर पर फ्रांज़ काफ़्का के चहरे को देखा था, तब बिना किसी संशय या विचार के इंटरनेट पर 'फ्रांज़ काफ़्का की आँखें' सर्च किया था, ये सोच कर कि हो न हो इस पर ज़रूर किसी ने कुछ तो कहा या लिखा होगा, इन आँखों की फितरत से प्रभावित होने वाली मैं अकेली तो नहीं हो सकती। कहते हैं, काफ़्का की आँखों का रंग कभी भी कोई भी ठीक से नहीं बता पाया था, उनके नज़दीकी मित्र भी नहीं। तब ही से मेरे लिए ये आंखें निरंतर बदलती फंतासी प्रक्रिया का विलक्षण प्रतीक हो गयी थीं।

उस दिन प्राग कासल देखने के बाद किले से नीचे उतरते हुए ये नहीं सोचा था कि काफ़्का का कमरा यहाँ आम रस्ते पर होगा। काफ़्का के प्राग में मेरे आख़िरकार पहुँच सकने और मौजूद होने के आशय का तो भरपूर इल्म था, लेकिन प्राग के काफ़्का से इस तरह टकरा जाने की उम्मीद नहीं थीं। अपने प्रिय लेखक के शहर में होने का पर्याय अमूमन एक आशा और योजना के तहत लेखक के क़रीब जाना होता है, लेकिन एक सुखद आश्चर्य के जैसा अचानक मिलना एक स्तर पर विकल कर देने वाला और दूसरे स्तर पर राहत देने वाला हो गया।

2018 के अप्रैल में प्राग जाना हुआ तो यहूदी संग्रहालय, काफ़्का म्यूज़ियम, काफ़्का स्क्वायर, कैफ़े लूव्र, और काफ़्का के अन्य घर देखना मेरी लिस्ट में था। प्राग के न्यू यहूदी क़ब्रिस्तान में काफ़्का की कब्र दुनिया के सभी कोनों से आये काफ़्का प्रेमियों को आकर्षित करती है लेकिन अपनी अधीरता के प्रति ईमानदार ऐसे लेखक की कब्र पर जाने की इच्छा कभी नहीं होती। मृत्यु के बाद अंततः मिले आराम में भी इन लेखकों को मेरे जैसे अधीर पाठक परेशान करें, ये कहीं न कहीं अनैतिक प्रतीत होता है।

ये सब प्लान करने के बाद भी कमरा नंबर बाईस मेरी रिसर्च और लिस्ट दोनों में कहीं नहीं आया। तभी इस नीली दहलीज़ पर खड़ी मैं कुछ व्याकुल थी। दहलीज़ पर रुके हुए ही देखा तो कमरे के अंदर और बाहर बहुत से लोग थे। ये सब प्राग कासल घूमने के बाद काफ़्का का कमरा देखने आये थे या शायद सिर्फ़ काफ़्का का कमरा ही देखने आये हों। मेरे दाहिनी ओर लगभग पूरी दीवार काफ़्का पोस्ट कार्ड्स से भरी हुई थी, जिसमें उनकी लिखाई के प्रिंट वाले काफ़ी कार्ड थे जिनमें से एक मैंने उठा लिया था। नीचे एक काफ़्का
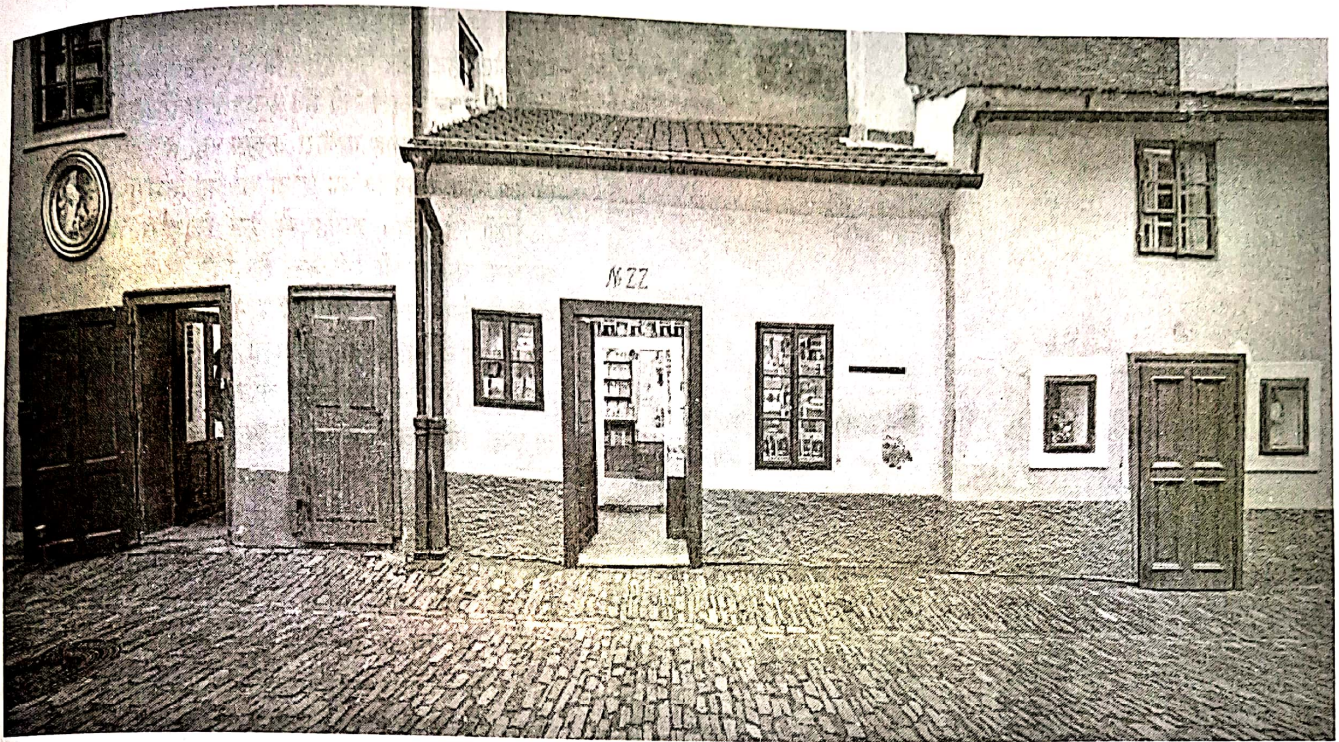
की किताबों से भरा एक रैक था। सामने एक और दहलीज़ थी जो कमरे के अगले भाग में खुलती थी। इस आकस्मिक भेंट के आश्चर्य से कुछ उबर पाने के बाद ठीक से आस पास देखने पर अहसास हुआ कि ये कमरा किताबों की दुकान है। कमरे के अगले हिस्से में चारों तरफ किताबें, पोस्ट कार्ड, सूचनापट और पोस्टर भरे पड़े हैं। दाहिनी ओर छत को छूता हुआ किताबों से भरा एक रैक लगा है, जिस पर लिखा है कि नीचे रखी सभी वे किताबें हैं, जिन्हें काफ़्का ने अपने 1911 से 1912 तक के इस कमरे के आवास के दौरान लिखा था। इनमें 'द ट्रायल', 'मेटामॉरफोसिस', 'लेटर्स टू फेलिस बाउअर' और 'द ब्रिज' के ज़्यादातर हिस्से हैं। वहीं एक तरफ कोने में कैश काउंटर है जहाँ काफ़ी लोग किताबें वगैरह खरीद रहे हैं। मैं पोस्ट कार्ड को आगे-पीछे पलट कर देखती हूँ। अभी खरीदने का निश्चय नहीं कर पा रही तो कार्ड वापिस रख दिया है।

बायीं ओर 'लेटर्स टू मिलेना' और उनकी जीवनियों और आलोचनाओं सहित और बहुत किताबें थीं। एक सूचनापट बताता है कि काफ़्का लिखने के लिए एकांत ढूंढते इस सस्ती और निम्नवर्ग कारीगरों, दर्ज़ियों, और कलाकारों की गली में आये थे। ये कमरा उन्होंने अपनी बहन ओटावा से किराये पर लिया था, जो कुछ देर प्राग कासल के प्रांगण की इस गली में रहने के बाद ये कमरा फ्रांज़ को दे गयी थी। काफ़्का उस समय वर्कर्स एक्सीडेंटल इन्शुरन्स इंस्टिट्यूट में क्लर्क के पद पर कार्यरत थे, जो उनके लिए बोझिल, उबाऊ और प्रेरणाहीन नौकरी थी। यही समय था जा जब वे टी.बी. जैसी बीमारी से जूझ रहे थे जो दिन-ब-दिन बदत्तर होती जा रही थी। इन्ही वजहों से लेखन उनके लिए आत्म अभिव्यक्ति का एकमात्र और महत्वपूर्ण जरिया बन गया था।

किताबें देखने के बाद कमरे में सामने की दीवार पर बनी खिड़की पर मेरा ध्यान गया जो किताबों और अन्य 'मर्चैंडाइज़' से लगभग आधी ढंकी हुई थी। खिड़कियाँ मुझे हमेशा आकर्षित करती हैं और ये तो काफ़्का की खिड़की थी। जब खिड़की के पास जा कर देखा तो लगा कि कमरा और नीची छत चाहे दमनकारी रूप से छोटे थे, लेकिन काफ़्का के पास बहुत अच्छा दृश्य था। खिड़की पीछे घाटी में नीचे बनी किले को चारों ओर से घेरने वाली खंदक पर खुलती थी। खिड़की पर खड़े हुए काफ़्का के व्यू को देखते आख़िरकार मन में इस कमरे के इस रूप के प्रति निराशा आ ही गयी। एक ऐसा लेखक जिसे दुनियावी चीज़ों से कम लगाव तो था ही बल्कि अपने लिखे से भी कोई लगाव नहीं था, एक ऐसा लेखक जिसने मरने से पहले एक-एक कर के अपनी कई कृतियों को जला दिया हो, उसके छोटे से कमरे का कमर्शियल किताबघर में तब्दील हो जाना कितनी बड़ी त्रासदी है! तो विरासत को समझने और असल रूप में संरक्षित रखने की चेष्टा की कमी विश्वव्यापी मसला है। खिड़की से बाहर की ओर देखते हुए ये अन्तरविलाप बड़ी सहजता से कल्पना में तब्दील हो गया...'मेटामॉरफोसिस' हो गया।

मैं कल्पना कर रही थी, इस खिड़की के नीचे लगे छोटे से मेज़ की जिस पर कागज़, क़लम और दवात बिखरे पड़े हैं। मेज़पोश पर स्याही के कुछ धब्बे हैं, नए और पुराने। बायीं ओर एक रसोई का शेल्फनुमा फट्टा है जिस पर प्याली, प्लेट, चम्मच, कटोरी पड़े हैं। डबलरोटी के महीन कण जहाँ-तहाँ बिखरे हुए हैं। इसी से सटी एक भट्टी बनी है जो चूल्हे और फायरप्लेस दोनों का काम करती है। दाहिने हाथ पर एक छोटा-सा फोर-पोस्टर पलंग है, जिसमें एक इंसान बामुश्किल लेट सकता होगा। दीवार से लगे इस पलंग पर बिस्तर और कम्बल

Scanned with OKEN Scanner

क़रीने से बिछे हुए हैं। मुख्य दरवाज़े की दीवार पर, कीलों पर कोट, हैट और पतलून टंगी है। मेज़ पर लोहे के स्टैंड पर लगी मोमबत्ती जल रही है। सूरज लगभग ढल चुका है और तीरगी अपनी जगह दोबारा क़ब्ज़ा रही है। हाँ, कुछ ऐसा ही लगता होगा काफ़्का का छोटा सा यह कमरा।

ऐसी संकुचित जगह में इस खिड़की के महत्व की कल्पना करना भी मुश्किल है। दिन में, शाम में, या रात में कैसे-कैसे नज़ारे बदलती होगी ये खड़की! क्या यहीं से निरंतर नीचे झाँक कर निराशा की प्रवृति दृढ़ हुई होगी? क्या इसी नितांत एकाकीपन के दृश्य को देख कर हुई होंगी वो तीव्र आँखें त्रस्त? एक ही रात में पूरी कहानी ख़त्म कर के बिस्तर में लेटने पर क्या काफ़्का की आँखें कहानियों के पात्रों को मुंह को आती छत पर देखती होंगी? उन्हें देखते हुए इस बिस्तर में उस टी.बी. के मरीज़ लेखक को ठीक से नींद आती होगी क्या? या सिर्फ़ खाँसते हुए रात गुज़र जाती होगी? सुबह उठ कर एक उबाऊ नौकरी पर जाने के लिए मन को कैसे मनाया जाता होगा? क्या अपने दिन के क्लर्क के बोझिल जीवन और रात के सृजनरत लेखक के दो जीवनों में कोई सामंजस्य होता होगा? क्या यहाँ वो शान्ति मिली होगी जिसके लिए यहाँ वे आये थे? क्या इस कमरे ने प्रेरणा दी होगी या प्रेरणा का दमन किया होगा? सर्द रातों में सिकुड़ते, खाँसते, मोमबत्ती की लौ में लिखते, खिड़की से बाहर देखते अँधेरे को निहारते लेखक को अपने लिखे के इतने महत्वपूर्ण होने का इल्म होगा क्या? क्या कभी लगा होगा कि उनके पाठक दुनिया भर के हर कोनों से आ कर इस कमरे में कुछ देर खड़े हो कर ख़ुद को धन्य समझेंगे?

इस कमरे से, इस दुकान से क्या ही ले सकती थी मैं.... ऐसा क्या है जो काफ़्का के लेखन ने मुझे न दिया हो। बुज़ुर्गों, फकीरों से पैसे के एवज़ में कुछ नहीं खरीदा जा सकता, सिर्फ़ कुछ छोड़ा जा सकता है–एक कृतज्ञता और एक धन्यवाद उन सभी परिस्थितियों का जिनकी वजह से यह आकस्मिक भेंट हो सकी। ट्रेवल करते हुए मेरे पिट्ठू बस्ते में हमेशा दो केले ज़रूर होते हैं–एक मेरे लिए और एक जिस को भी ज़रूरत हो उसके लिए। मुझे लगता है इस से अच्छा, आसान और सेहतमंद स्नैक नहीं हो सकता। कहीं पढ़ा था, काफ़्का केले बहुत ख़ुशी से खाते थे। मैं बाहर आ कर कमरे के सामने ज़मीन पर बैठ गयी। बस्ते में से एक केला निकाल कर पास बैठी थकी हुई लड़की की ओर पूछ कर बढ़ाया और दूसरा ख़ुद खाया। बस्ता वापस टांग कर मैं धीरे-धीरे किले से नीचे उतरने लगी। मुझे कैफ़े लूव्र जा कर कॉफ़ी और केक खाना है।

मो. 9811258745

भूख का फनकार-कायांतरण

कहाँ है इन कहानियों का उत्स!

सुधांशु गुप्त

काफ़्का ने 1912 में एक कहानी लिखी– मैटामोर्फोसिस (कायांतरण)। यह पहला विश्व युद्ध शुरू होने से दो साल पहले की बात है। कहानी छपी 1915 में। तब पहले विश्व युद्ध को एक साल बीत चुका था। लेकिन काफ़्का की साहित्य की दुनिया में कोई ख़ास पहचान नहीं बन पाई थी। हालांकि 'कायांतरण' के प्रशंसक बड़ी संख्या में मौजूद थे। 1924 में काफ़्का की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के दो ढाई दशक बाद तक वह ग़ुमनाम-से ही रहे। लेकिन आलोचकों ने इस कहानी को अतियथार्थवादी, एब्सर्ड और अलगाव की कहानी कहा। उनके इस विश्लेषण से कोई असहमति नहीं है। सचमुच पढ़कर यह कहानी 'एब्सर्ड' की ही झलक देती है। लेकिन इस कहानी और इसके विश्लेषण को पढ़ते हुए मेरे ज़ेहन में दो सवाल उठे। पहला, काफ़्का ने कीड़े का ही रूपक क्यों इस्तेमाल किया? क्या मनुष्य जीते जी विपरीत परिस्थितियों में कीड़ा नहीं बन जाता है...ख़ासतौर पर यदि वह बेरोजगार है और लाख कोशिशों के बाद भी उसे आजीविका नहीं मिल पा रही! दूसरा, एक मिनट के लिए मान लीजिए 'कायांतरण' का नायक सुबह उठकर ख़ुद को कीड़े में बदल जाने के बजाय, बीमार पड़ जाता, इतना गंभीर बीमार कि वह बिस्तरे से उठ भी नहीं पाता और उसे बोलने में भी दिक्कत होती। उसके बोले हुए शब्द उसके परिवार के लोग ना समझ पाते। तब भी क्या काफ़्का के परिजनों की प्रतिक्रियाएँ यक़सां नहीं होतीं? क्या उसके माँ-बाप, बहन उसे मरने के लिए अकेला छोड़ने की नहीं सोचते? क्या वह अपने ही घर में अजनबी(आउटसाइडर) नहीं बन जाता? ये सवाल मेरे ज़ेहन में इसलिए भी आए क्योंकि मैंने ऐसे बहुत से परिवार देखे हैं, जहाँ बच्चे अपने पिता के साथ, पति पत्नी के साथ और बहन भाई के साथ, इस हालत में अजनबियों की तरह व्यवहार करते हैं, हम क्रमशः इन दोनों बिन्दुओं पर विचार करेंगे।

पहले, प्रथम बिन्दू पर बात। काफ़्का का जन्म एक यहूदी परिवार में हुआ। पिता से उनकी कभी पटरी नहीं बैठी। बालमन पर पिता का आतंक गहरा बैठता चला गया। 'पिता को पत्र' में काफ़्का ने पिता के डर और आतंक पर विस्तार से लिखा है। पिता के सामने काफ़्का एक डरपोक और बुझदिल बच्चे में तब्दील होते चले गए। पिता उन्हें बात-बात में 'सूअर' कहा करते थे। पिता की बौद्धिक प्रभुसत्ता के सामने काफ़्का लगभग पिछलग्गू बने रहते। वह अक़सर चुप रहते। उन्होंने लिखा हैः मैं आपके सामने रेंगने लगा था। इसी पत्र में उन्होंने एक जगह लिखाः आख़िरकार यह ज़रूरी तो नहीं कि हर कोई सूरज के बीचोबीच उड़ान भर सके। यह भी तो कम नहीं है कि हम धरती के उस साफ़ चप्पे पर घड़ी भर रेंग सकें। यानी बचपन से ही काफ़्का के मन में पशु होने या रेंगने के विचार घर करने लगे थे। इसी तरह एक बार गुस्ताव जैनुक ने उन्हें, 1920-22 के बीच डेविड गार्नर का उपन्यास 'लोमड़ी में औरत' दिया, और कहा कि आप विश्व प्रसिद्ध हो रहे हैं क्योंकि लोग आपकी नक़ल करने लगे हैं। गार्नर का उपन्यास 'कायांतरण' की नक़ल है। तब काफ़्का का जवाब था, नहीं उन्हें यह ख्याल

Scanned with OKEN Scanner

मुझसे नहीं मिला। बात हमारे समय की है। हमारी क़ैद की सलाखें यहीं हैं। हमें मनुष्यों की तुलना में जानवरों के साथ अपनी सादृश्यता अधिक सहज लगती है। 'कायांतरण' को एक भयानक दुःस्वप्न, एक भयानक अवधारणा बताने वाले काफ़्का ने गुस्ताव जैनुक से कहा था, मैं एक असंभव सा पक्षी हूँ...एक कौवा, जैसे तेइन कैथेड्रल के बगल वाले कोयला व्यापारी के पास है। मेरा 'बिरादर' मुझसे बेहतर है। सच है कि उसके पंख कुतर दिए गए हैं, मेरे लिए इसकी भी ज़रूरत नहीं थी। मेरे पंख सुन्न कर दिए गए हैं। इसलिए मेरे लिए कोई ऊचाइयाँ या दूरियां नहीं हैं। मैं हैरान भाव से लोगों के बीच फुदकता फिरता हूं। वे मुझे गहरे संदेह से देखते हैं, क्योंकि मैं उनके लिए एक खतरनाक पक्षी हूं...कौवा..एक चोर..।

ऐसा लगता है काफ़्का के भीतर पशु या कीट हो जाने का डर था, या यह भी संभव है कि वह स्वयं ही पशु, पक्षी या कीट हो जाना चाहते हों। उनके अवचेतन में कहीं यह बैठता गया। पिएत्रो चिताती की किताब-काफ़्का, (अनुवाद अशोक पांडे, संभावना प्रकाशन) में यह कहा गया है कि काफ़्का को लगता था कि उसके भीतर कोई पशु है, वह अपने भीतर किसी सोते हुए गुबरैले को महसूस करता थाः ज़मीन में सुरंगें खोदते किसी छछूंदर को, उस चूहे को जो आदमी के आते ही भाग जाता है। वह कई जानवरों से बेतरह डरता था। जुराव में वह चूहों के बीच रहा था। उसी दौरान काफ़्का ने 'कायांतरण' लिखी। यह 2012 के दिसंबर की बात है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले साहित्यकारों ने मनुष्य के कीड़े में 'कायांतरण' की बात न सोची हो। विश्व प्रसिद्ध लेखक दॉस्तोएव्स्की के उपन्यास 'भूमिगत की डायरी' का नायक शुरुआती पन्नों में ही कहता है-मैं आपको बता दूँ कि मैं एक कृमि-कीट भी नहीं बन सका। मैं आपसे ईमानदारी से कहता हूँ कि मैंने कीड़ा बनने की कोशिश की, पर उसमें भी सफल नहीं हो सका। दॉस्तोएव्स्की का यह उपन्यास 1864 में हुआ। यानी इस बात की पूरी सम्भावना है कि काफ़्का ने यह उपन्यास पढ़ा हो। काफ़्का ने दॉस्तोएव्स्की के नायक की इस इच्छा को 'कायांतरण' कहानी में साकार कर दिया। काफ़्का पर गोगोल, दॉस्तोएव्स्की, गस्ताव फ्लॉवयर और दार्शनिक सोरन किर्कगार्द का काफ़ी प्रभाव रहा। लेकिन काफ़्का ने इस प्रभाव को अपने लेखन का आधार नहीं बनाया। उन्होंने अपनी अलग शैली विकसित की।

कहानी की शुरुआत ही इस तरह होती हैः एक सुबह जैसे ही ग्रेगोर सेम्सा की आँख खुली, उसने पाया कि वह एक विशालकाय कीड़े में परिवर्तित हो गया है। इससे पहले शाम तक वह एक सामान्य ट्रैवल सेल्समैन था। यह भी दिलचस्प बात है कि काफ़्का ने यह कहानी दिसंबर 2012 की रात में पूरी की। उस रात भयानक ठंड थी। जो उस रात काफ़्का ने महसूस किया, ठीक वही सुबह ग्रेगोर सेम्सा महसूस कर रहा था। सब कुछ वैसा ही था, उसका छोटा-सा कमरा (जहाँ बैठकर काफ़्का ने कहानी लिखी), मेज पर रखी कपड़े के नमूनों की किताब, तस्वीरों वाली पत्रिका से काटी गयी एक स्त्री की तस्वीर, वही उदास बारिश, जो अंधेरे आसमान से गिरती है, बस काफ़्का (नायक ग्रेगोर सेम्सा) कीड़े में बदल चुका था। वह एक नये प्राणी में कायांतरित हो चुका था। और काफ़्का ने इस नये प्राणी की संवेदनाओं को जिस तरह चित्रित किया है, वह कोई महान लेखक ही कर सकता है। कीड़े में कायांतरित होने के बाद काफ़्का ने उसकी महीनताओं का जिस तरह ज़िक्र किया है वह चमत्कृत करता है। जैसे वह लिखते हैं-पीठ बख्तरबंद जैसी सख्त, पेट मुड़ा हुआ, भूरा और ऊंचा, असंख्य छोटे-छोटे दयनीय पैर, पेट में खुजली, ठंड और नमी और बदली हुई आवाज़...और वे असंख्य कांपती टांगें हमें बिस्तर से बाहर नहीं ले जा पातीं। ऐसा लगता है काफ़्का को कीड़े से बेहतर कोई और रूपक नहीं मिला होगा। कहानी में कहीं भी ग्रेगोर सेम्सा अपने इस कायांतरण पर अफ़सोस प्रकट नहीं करता। मानो कीड़ा बनना उसके लिए खुशी की बात हो या यह भी हो सकता है कि सेम्सा कीड़ा बनकर अपने परिजनों के व्यहार को जाँचना चाहता हो! लेखक अपनी रचना में कोई भी रूपक इस्तेमाल करने के लिए स्वतंत्र है। लेकिन मैं हमेशा सोचता हूँ कि यह रूपक कहाँ से आया होगा।

एक अल्प-विकसित देश भारत पर नज़र डालें तो यहाँ बेरोजगारों की संख्य हमेशा से ही करोड़ों में रही है। मैं बेरोजगारों के लिए, बचपन से देखता आया हूँ कि बड़ी नानी, दादियाँ, माँ और बहने तक ऐसे पुरुषों को नाली का कीड़ा कहकर संबोधित करती हैं। बेशक यह मुहावरा मज़ाक में ही कहा जाता हो, लेकिन कहा जाता है, आज भी। पता नहीं क्यों, लेकिन मनुष्य की ख़राब स्थिति की तुलना अक्सर कीड़े से की जाती है। शायद इसलिए कि कीड़े से व्यर्थ और कोई जीव नहीं होता। भारत में (पश्चिमी उत्तर प्रदेश में) बेरोजगार लड़कों के लिए माँ और बहनें भी कहती हैं-खाली पड़ा रहता है, नाले के कीड़े की तरह। कई बार खाली आदमी से जब पूछा जाता है, क्या चल रहा हो तो उसका जवाब होता है, बस रेंग रहे हैं। यानी कहीं जा नहीं रहे, यहीं पड़े हुए हैं (ग्रेगोर सेम्सा की तरह)। यह अभिव्यक्ति व्यर्थताबोध से जन्मी है। तो काफ़्का ने इस रूपक का प्रयोग ठीक ही किया है।

दूसरा सवाल यह था कि अगर काफ़्का रूपक का इस्तेमाल न करते और नायक सुबह उठकर पाता कि वह गंभीर रूप से बीमार हो गया है, वह चल फिर नहीं सकता, ठीक से बोल नहीं सकता। उसे हर वक्त किसी सहारे की आवश्यकता रहती है, तब क्या कहानी का प्रभाव कम हो जाता? भारत में ही निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में ऐसी घटनाएँ आमतौर पर देखने को मिलती हैं। एक परिवार का मुखिया बीमार हो गया, चलने-फिरने से भी लाचार हो गया। पूरी तरह से बिस्तरे पर लेटा रहता। बेटा-बेटी और पत्नी शुरू में तो उसकी देखभाल करते, लेकिन धीरे-धीरे वे उससे विरक्त होते चले गए। मुखिया हर समय कमरे की छत और उसपर लगे पंखे को देखते रहता। कभी-कभी उसे छत या दीवारों पर चलती छिपकली दिखाई देती। उस समय मुखिया क्या सोचता होगा? क्या वह यह नहीं सोचता होगा कि काश, मैं छिपकली होता, कम से कम दीवारों पर तो चल पाता, अपना शिकार ख़ुद पकड़ पाता। मुखिया यह भी पाता है कि उसकी बेटी, जिसे वह बहुत स्नेह करता था और जो उससे बहुत स्नेह करती थी, वह भी उसकी उपेक्षा करने लगी है। ठीक उसी तरह, जैसे सेम्सा की बहन ग्रेटा अपने भाई की करने लगती है। समय के साथ-

Scanned with OKEN Scanner
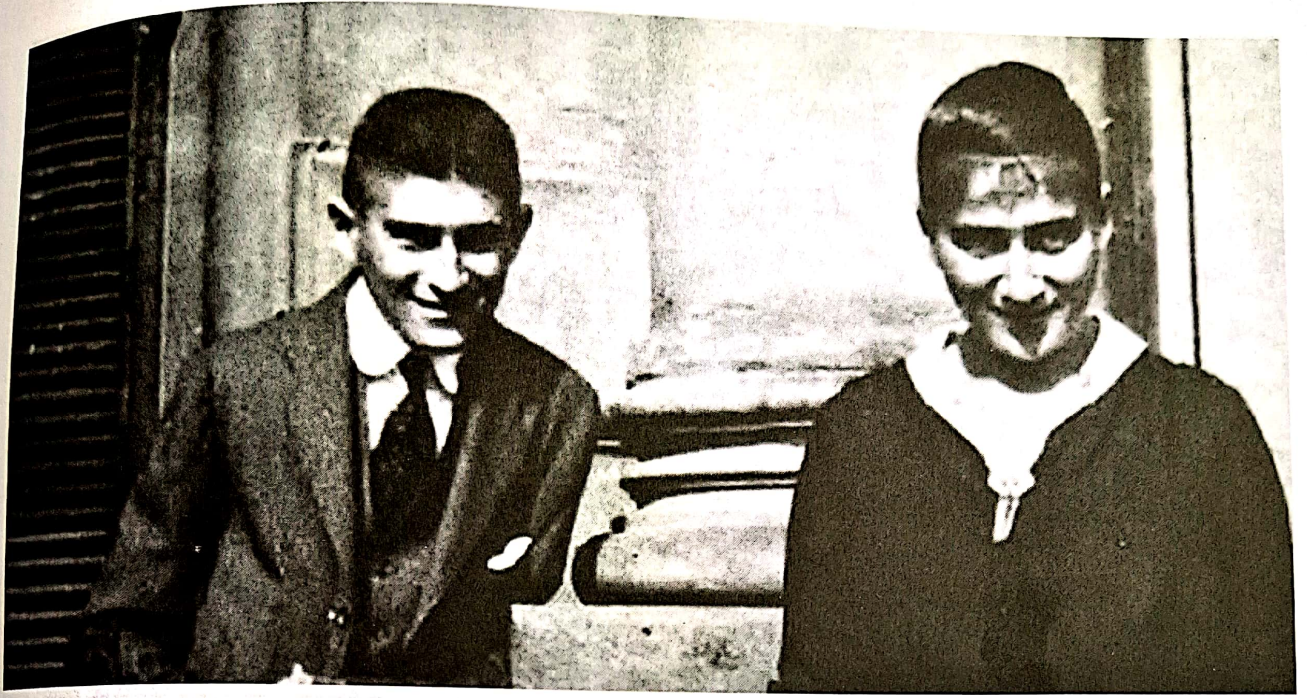
साथ मुखिया अपने ही घर में 'अजनबी' बन गया। जब उसकी मृत्यु हुई तो परिजनों ने एक राहत की सांस ली। उन्हें मुखिया का शव भी अधिक देर कमरे में बर्दाश्त नहीं हुआ और शव को जल्दी ही श्मशान पहुँचा दिया गया। यह स्थिति सहज रूप से अजनबीपन और अलगाव को चित्रित करती हैं। लेकिन लगता है काफ़्का ने कीड़ा कहे जाने को रियल वर्ल्ड में उतार दिया है। संभवतः अगर काफ़्का कीड़े का रूपक इस्तेमाल न करते तो उनकी कहानी एक परिवार तक सीमित रह जाती, कीड़े ने उनके यथार्थ को यूनिवर्सलाइज़ कर दिया। ब्लादीमीर नाबाकोव की बात सच लगती है। उन्होंने कहा था, काफ़्का ने नायक कायांतरण के लिए कीड़े को ही रूपक की तरह इसलिए चुना क्योंकि वे समाज में उसके प्रति व्याप्त जुगुप्सा के ज़रिये कहानी के नायक की घृणित स्थिति को दर्ज़ कराना चाहते थे। पिता का सेब फेंकना भी प्रतीकात्मक है कि उसके द्वारा दी गई मदद में इतनी वितृष्णा भरी है कि वो सेवा नहीं बल्कि चोट की तरह लग रही है। शायद इसी वजह से यह कहानी विश्व क्लासिक में गिनी जाती है।

काफ़्का की एक अन्य कहानी है-ए हंगर आर्टिस्ट या भूख का फ़नकार। यह कहानी 1922 में लिखी गई और इसी वर्ष छपी। इसे भी वर्ल्ड क्लासिक माना जाता है। कहानी में एक भूखा व्यक्ति चालीस दिन तक बिना कुछ खाए पिए पिंजरे में रहता है। वह केवल पिंजरे की सलाखों से अपना हाथ बाहर निकाल सकता है। बहुत से लोग उसे देखने आते हैं, बड़े-बूढ़े और बच्चे भी। लोग खुश होते हैं, तालियाँ बजाते हैं। उसे छेड़ते हैं, तंग करते हैं। पूरी कहानी भूख के इस फनकार पर केन्द्रित है। कहानी के अंत में यह फ़नकार पिंजरे में ही मर जाता है और कोई उसकी ओर ध्यान नहीं देता। एक जगह ओवरसियर से यह भूखा व्यक्ति कहता है–अगर मुझे मनपसन्द खाना मिला होता तो यकीन मानिए मैं उसी तरह ठूंस ठूंसकर खाता जिस तरह, आप और अन्य लोग खाते हैं। पिंजरे में ही फ़नकार की मृत्यु हो जाती है। भूख के फ़नकार को फूस पुआल सहित दफ़्ना दिया जाता है। और उस पिंजरे में एक युवा तेंदुए को रख दिया जाता है। लम्बे अरसे से उजाड़ से दिखने वाले पिंजरे में बंद तेंदुए को देखने के लिए अब बहुत से लोग आने लगे। लगता ही नहीं था कि उसे अपनी स्वतंत्रता गंवाने का कोई अहसास भी है।

इस कहानी में मृत्यु की आकांक्षा है, अलगाव है, मनोरंजन उद्योग की विसंगतियाँ हैं और ज़ाहिर है एब्सर्डिटी भी है। कला को तमाशा बना देने की प्रवृत्तियां हैं। लेकिन इस कहानी का राजनीतिक, धार्मिक या सामाजिक उपवास से, मुझे नहीं लगता, कोई लेना देना है। इसका कारण बचपन में देखा ऐसा ही उपवास है। बात 1973-1974 की है। हम उस निम्न वर्गीय कॉलोनी में नये-नये रहने आए थे। उस समय मेरी उम्र दस ग्यारह साल रही होगी। घर के पीछे ही एक चौड़ा मैदान था। मैदान में बच्चे खेलते रहते थे। एक दिन पता चला कि मैदान के बीच में रस्सी से सफ़ेद चूने से एक घेरा बना दिया गया है। काफ़ी बड़े से घेरे में तिरपाल लगाकर एक झोंपड़ी भी बनाई गई थी। पता चला कि यहाँ कोई युवक पंद्रह दिनों तक बिना खाए पिए निरंतर साइकिल चलाएगा-दिन रात। कॉलोनी के बच्चों के लिए यह मज़ेदार खेल था, जो उन्हें दिन-रात व्यस्त कर सकता था। दो तीन दिन में साइकिल यात्रा शुरू होनी थी। उससे पहले पूरी कॉलोनी में एक व्यक्ति ने लाउडस्पीकर पर यह घोषणा की कि यहाँ एक कलाकार आ रहा है, जो पंनद्रह दिन साइकिल पर करतब दिखाएगा। वह भूखा रहेगा, साइकिल ही चलाता रहेगा। अधिक से अधिक लोग आकर उस युवा कलाकार का हौंसला बढ़ाएं। जब मैं दूसरे बच्चों के साथ पहले दिन

Scanned with OKEN Scanner

वहाँ गया तो साइकिल को नहला धुलाकर तैयार किया जा रहा था। वहीं वह युवक भी दिखाई दिया। वह मुश्किल से 18-19 साल का पतला दुबला युवक था, जिसकी हड्डियाँ बाहर को निकल रही थीं। उसने एक ढीला-सा पायजामा और ढीली टी शर्ट पहन रखी थी। जब उसने वह साइकिल पर चढ़ा तो वहाँ मौजूद बच्चों ने और कुछ बड़ों ने भी तालियाँ बजाकर उसका स्वागत किया। साइकिल चलनी शुरू हो गई। वह कभी साइकिल एक पहिये पर चलाता, आगे के पहिये को ऊपर उठा देता, कभी वह साइकिल पर लेट जाता, कभी साइकिल को एक जगह पर ही बिना ज़मीन में पैर टिकाए रोक देता। बच्चों को इस सबमें बहुत मज़ा आया। युवक भी ख़ासे उत्साह में थे। घेरे के बीच किनारे पर बनी झोंपड़ी में उस युवक की देखभाल करने वाले मौजूद थे। शुरू के दो-तीन दिन इसी तरह सब चलता रहा। फिर एक दिन प्रोग्राम बना कि रात में चलकर देखा जाए कि क्या वह सचमुच कुछ नहीं खाता। कुछ बच्चों ने वहां जाकर देखा। सचमुच वह कुछ नहीं खा रहा था। दिन बीतते गए, उसकी ऊर्जा निरंतर कम होती गई, उसे देखकर लगने लगा कि थक गया है। इस बीच बच्चे अपने घरों से लाकर पाँच, दस या पचास पैसे वहाँ डाल देते, जिसे झोंपड़ी में रहने वाले उठा लेते। कुछ बड़े लोगों ने एक-एक रुपया दिया। वह युवक साइकिल पर बैठे-बैठे ही नहाया, साइकिल पर ही उसने कपड़े बदले। साइकिल निरंतर चलती रही। लेकिन युवक के चेहरे पर पन्द्रहवें दिन तक आते-आते मुर्दनी-सी छा गई। पन्द्रहवें दिन उसे साइकिल से उतरना था। उस दिन वहाँ बहुत भीड़ थी...कोई आदमी उसके लिए अनार का जूस भी घर से बनवाकर ले आया। साइकिल चलाते चलाते ही उसने जूस पिया, भीड़ ने तालियाँ बजायीं। अब उसके उतरने का समय था। लग रहा था कि वह उसी जोश से उतरेगा जिस जोश से चढ़ा था। लेकिन नहीं, वह साइकिल से एकदम गिर गया। बच्चों ने एक बार फिर तालियाँ बजाईं, झोंपड़ी से दो तीन लोगों ने बाहर से उसे संभाला। लोग पन्द्रह दिन तक उसकी ओर पैसे फैंकते रहे।

फिर वह युवक, झोंपड़ी वाले के साथ सारे पैसे इकट्ठे करके चले गए।

आज सोचता हूं काश! काफ़्का की कहानी-ए हंगर आर्टिस्ट पहले पढ़ी होती तो समझ में आता कि वह अपनी भूख मिटाने के लिए भूखा रह रहा है।

तब भी मैं यही सोच रहा था कि क्या उस युवक ने कॉलोनी में रहने वाले बच्चों के मनोरंजन के लिए साइकिल चलाई थी या अपना पेट भरने के लिए? काफ़्का की कहानी-ए हंगर आर्टिस्ट पढ़ने के बाद यह तय हो गया कि उस युवक का पन्द्रह दिन 'उपवास' करना दरअसल अपनी पेट की भूख को ही शान्त करना था। काफ़्का तो काफ़्का हैं। पहले विश्व युद्ध के बाद काफ़्का ने इस स्थिति को देखा। उन्होंने देखा कि पहले विश्व युद्ध में मनुष्य और मनुष्यता की किस तरह हत्या की गई। मुल्क किस तरह एक दूसरे को तबाह करने पर टले हुए थे। काफ़्का यह भी जानते थे कि पहले विश्व युद्ध के बाद शान्ति का नाटक दूसरे विश्व युद्ध की ही तैयारी है। उन्होंने बढ़ती बेरोजगारी, मानवीय रिश्तों का लगातार टूटना, मनुष्य के असहनीय होती दुनिया, मनुष्यता का ह्रास, मनुष्यों को कीड़ा समझने वाली व्यवस्थाएँ काफ़्का को वहां ले गईं, जहाँ एक व्यक्ति कीड़े में बदल जाता है और एक व्यक्ति 'उपवास' का अभिनय करते हुए भूखा रहते हुए अपना प्राण त्याग देता है और भीड़ समझती है कि वह उनका मनोरंजन करने के लिए यह सब कर रहा है। यही विडम्बना कहानी में पूरी शिद्दत से दिखाई देती है। दरअसल ए हंगर आर्टिस्ट भूख पर लिखी कहानी है जिसमें अन्ह पहलु जुड़ते जाते है।

ये दोनों कहानियाँ-कायांतरण और भूख का फ़नकार, बाहर और भीतर की दुनिया मिलकर जो नई दुनिया बनाते हैं उस 'काफ़्काई दुनिया' की कहानियाँ हैं और शायद इसीलिए ये कालजयी कहानियाँ हैं-विश्व क्लासिक हैं। केवल बाहर की दुनिया को चित्रित करने वाले फ़नकार वास्तव में तात्कालिक समय में ही जीवित रहते हैं।
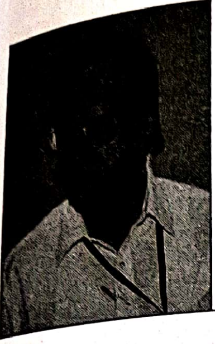
विश्वनाथ सचदेव

जीतना नहीं चाहता मैं यह लड़ाई

नहीं, जीतना नहीं चाहता मैं यह लड़ाई
लड़ना चाहता हूँ लेकिन,
लड़ते रहना चाहता हूं, लगातार।

किसी भी जीत से बड़ा है यह अहसास
(कि) लड़ सकता हूँ मैं

जैसे आकाश को छूने से बड़ा है यह अहसास
कि आकाश मेरी बाहों में है

आकाश को बाहों मे भरना
जीतना नहीं होता है आकाश को
अपना बनाना होता है उसे,
जुड़ना होता है उसके सुख दुःख से
जिसे हम अपना बनाते हैं ,
होगा तो सही आकाश को सुख
तारों से भरा भरा होने का,
दुख नहीं होगा खोने का
कौन कह सकता है ,
रोता होगा आकाश भी तारों को खोकर
चुपचाप, मेरी तरह,
इसीलिए करता है मन
बाहों में भर लूं आकाश को,
दूं उसे ढेर सारा अपनापन,

बदले में कुछ तो देगा न वो,
जो कुछ भी देगा
लड़ लूंगा मैं लम्बी लड़ाई जीने की
उसके सहारे।

जो पाना था पा लिया,
फिर?
मुश्किल है इस फिर का जवाब,
और भी मुश्किल है,
पाने के बाद की स्थिति में जीना,
इसीलिए चाहता हूँ
पाऊं नहीं, लड़ता रहूं पाने को

क्या होगा छूकर आकाश को
आकाश को बाहों में लेने का विस्तार
कितना बड़ा है !

सिनेमा में काफ़्का की उपस्थिति

सौम्य शाश्वत
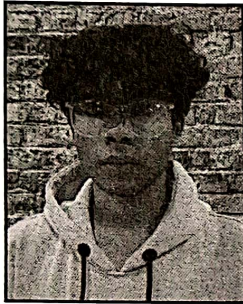
सौम्य शाश्वत

दिल्ली में जन्म। स्कूली शिक्षा शिमला में। द इंग्लिश ऐंड फॉरेन लैंग्वेज युनिवर्सिटी, शिलांग कैम्पस में जर्मन भाषा व बी.ए. इंग्लिश (रिसर्च) में अध्ययनरत।

विदेशी भाषा-संस्कृति में रूचि व अध्ययन। मूल रूप से अंग्रेजी में लेखन।

अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल के तथ्यों पर आधारित फुटबॉल जगत के दिग्गजों पर अंग्रेजी में पुस्तक 'All Time Players : A biographical sketch of legendary footballers' शीर्षक से अति शीघ्र प्रकाश्य।

ई-मेलः
saumyafirst2006@gmail.com

फ्रान्ज़ काफ़्का (1883–1924) एक जर्मन-भाषी लेखक थे, जिन्होंने उपन्यासों और लघु कथाओं की रचना की, जिन्हें अक्सर आश्चर्यजनक व डरावने चित्रणों के लिए जाना जाता है। काफ़्का अपनी रचनाओं में ब्यूरोक्रेटिक प्रणालियों, परायापन और अस्तित्व की निरर्थकता को दर्शाते हैं। उनका लेखन अस्तित्व की चिंता, अपराधबोध और विपरीत मानवीय स्थितियों जैसे विषयों को प्रमुखता से व्यक्त करता है।

काफ़्का की कई रचनाओं पर फिल्में भी बनी हैं, जिन्होंने दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी है। काफ़्का के साहित्य में निहित जटिलता और अस्तित्वगत संकट को विभिन्न फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों में चित्रित किया है। काफ़्का की रचनाओं को एक टर्म 'काफ्केस्क' से भी जाना जाता है। जो काफ़्का के रचनाओं से उत्पन्न हुआ है। यह उन परिस्थितियों को व्यक्त करता है जो अजीब, भ्रमित करने वाली और अनजानी होती हैं। अक्सर एक बेबसी और असमर्थता की भावना के साथ सामने आती हैं।

काफ़्का की कहानियों पर जो फिल्में बनी हैं उनमें उनकी तीन सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ जैसे 'द ट्रायल' (1962), 'द मेटामॉर्फोसिस' (1975), 'द कैसेल' (1997) शामिल हैं। इन फिल्मों ने काफ़्का के घबराहटपूर्ण, अनुशासनात्मक और अतिरंजित नियमों के बीच फंसे पात्रों के संघर्षों को चित्रित किया गया है, जो दर्शकों को एक अस्तित्वीय दुविधा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बारे में सोचने पर विवश करती हैं। काफ़्का की रचनाओं का फिल्मों में रूपांतरण उन गहरे सवालों को सामने लाता है जो मनुष्य की आंतरिक स्थिति और समाज में उसकी भूमिका के बारे में उठते हैं।

काफ़्का की कहानियाँ, जैसे 'द ट्रायल' जिसमें एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाता है लेकिन उसे यह नहीं बताया जाता कि वह किस अपराध का आरोपी है। 'द मेटामॉर्फोसिस' का मुख्य पात्र ग्रेगोर एक विशाल कीट में बदल जाता है। 'द कैसेल' मुख्य रूप से एक साधारण परिवार और उनकी अपने घर को बचाने की लड़ाई के इर्द-गिर्द घूमती है।

'द ट्रायल' (1962), ऑर्सन वेल्स द्वारा निर्देशित, फिल्म है जो फ्रान्ज़ काफ़्का के उपन्यास पर आधारित है। कहानी जोसेफ़ के. नामक एक युवा और सफल आदमी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक सुबह उठता है और पाता है कि उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। अजीब बात यह है कि कोई उसे नहीं बताता कि उसे किस अपराध का आरोपी बनाया गया
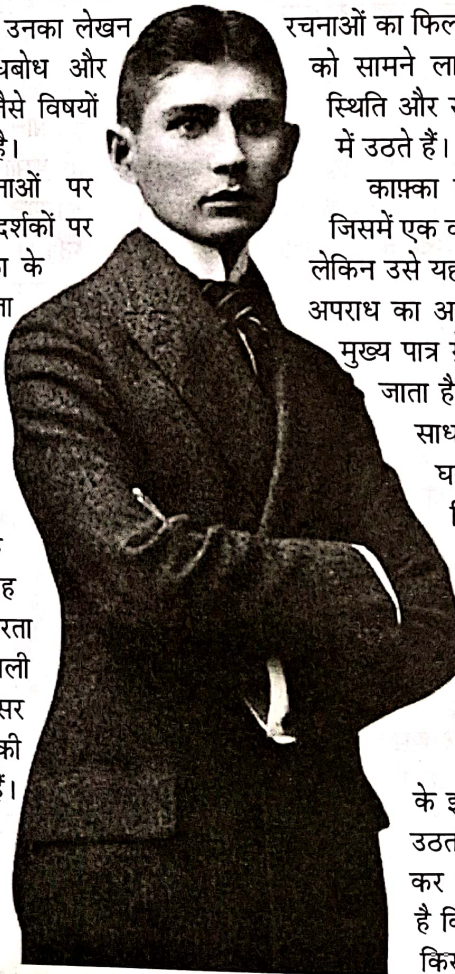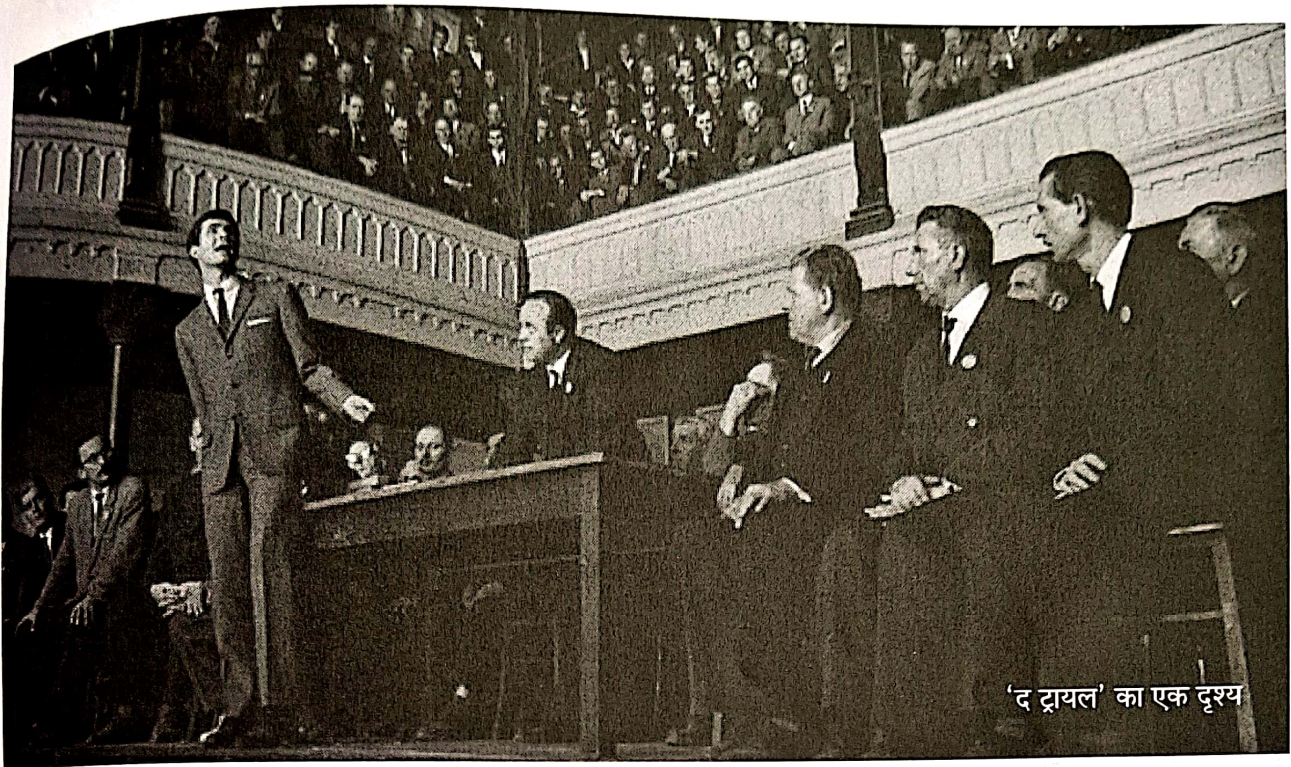
'द ट्रायल' का एक दृश्य

है। उसे यह कहा जाता है कि वह गिरफ्तार है, फिर भी जोसेफ़ को अपनी रोज़ की ज़िन्दगी जीने की अनुमति है, हालांकि उसे लगातार चेतावनी दी जाती है कि उसके साथ कभी भी कुछ भी बुरा हो सकता है।

जैसे-जैसे फिल्म आगे बढ़ती है, जोसेफ इस बात को समझने के लिए संघर्ष करता है कि उसके साथ क्या हो रहा है। वह कानूनी मदद लेने की कोशिश करता है, लेकिन वह जिस न्यायपालिका से मिलता है, वह उलझन में और निरर्थक होती है। वह अजीब वकीलों और न्यायाधीशों से मिलता है, लेकिन कोई उसे आरोपों के बारे में नहीं बताता। न ही कोई उसे यह समझाता है कि मुकदमा किस बारे में है।

जैसे-जैसे जोसेफ़ इस अजीब दुनिया में नेविगेट करने की कोशिश करता है, वह खुद को पागल और अलग-थलग महसूस करने लगता है। वह लोगों के अजीब व्यवहारों से परेशान होता है और खुद को एक ऐसे सिस्टम में जकड़ा हुआ महसूस करता है जिसे वह न तो समझ सकता है और न ही उससे बच सकता है। भले ही वह ख़ुद को निर्दोष साबित करने की कोशिश करता है लेकिन वह जितना अधिक लड़ता है, उतना ही अधिक ख़ुद को बेबस महसूस करता है।

'द मेटामॉर्फोसिस' (1975) चेक फिल्मकार जेन नेमेक द्वारा निर्मित फिल्म है जो फ्रान्ज़ काफ़्का की प्रसिद्ध कहानी पर आधारित है। यह ग्रेगोर साम्सा की दुखद कहानी बताती है, जो एक सेल्समैन है। वह एक सुबह उठता है और पाता है कि वह एक विशाल कीट में बदल चुका है। शुरुआत में, ग्रेगोर को अपनी नई अवस्था से कोई ख़ास हैरानी नहीं होती; बल्कि, वह इस बारे में चिंता करता है कि उसे काम पर जाने में देर हो जाएगी और अगर नौकरी से निकाल दिये जाने पर वह अपने परिवार के लिए क्या करेगा।

अजीब बात यह है कि कोई उसे नहीं बताता कि उसे किस अपराध का आरोपी बनाया गया है। यह कहा जाता है कि वह गिरफ्तार है, फिर भी जोसेफ को अपनी रोज़ की ज़िन्दगी जीने की अनुमति है, हालांकि उसे लगातार चेतावनी दी जाती है कि वह कुछ बुरा होने के लिए तैयार रहे।

जब ग्रेगोर के परिवार को उसके रूपांतरण के बारे में पता चलता है, तो वे आश्चर्यचकित और भयभीत होते हैं। हालांकि, वे इस बारे में अधिक चिंतित होते हैं कि इसका उनकी आर्थिक स्थिति पर क्या असर होगा। ग्रेगोर का परिवार उसे उसके कमरे में बंद कर देता है, हालांकि शुरू-शुरू में उसे खाना खिलाने की कोशिश की जाती है और इस आशा के साथ उसका थोड़ा ध्यान भी रखा जाता है कि वह कुछ दिनों में शायद अपने वास्तविक रूप में आ जाएगा। लेकिन ऐसा होता नहीं और उसका परिवार धीरे-धीरे उसे एक बोझ मानने लगता है। उसकी बहन ग्रीटे, जो पहले उसकी मदद करने की कोशिश करती है, धीरे-धीरे निराश होने लगती है और अंततः उसकी देखभाल करना बंद कर देती है। उसके पिता तक उसके प्रति हिंसक हो जाते हैं।

समय के साथ, ग्रेगोर अकेला और बिल्कुल अकेला होता जाता है। वह अपने परिवार से संवाद नहीं कर सकता। वह ख़ुद को और भी अकेला और अवांछित महसूस करता है। उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति बिगड़ने लगती है, वह कमजोर और अधिक उदास हो जाता है।

अंत में ग्रेगोर का परिवार उससे थककर उसे उसके हाल पर छोड़

Scanned with OKEN Scanner
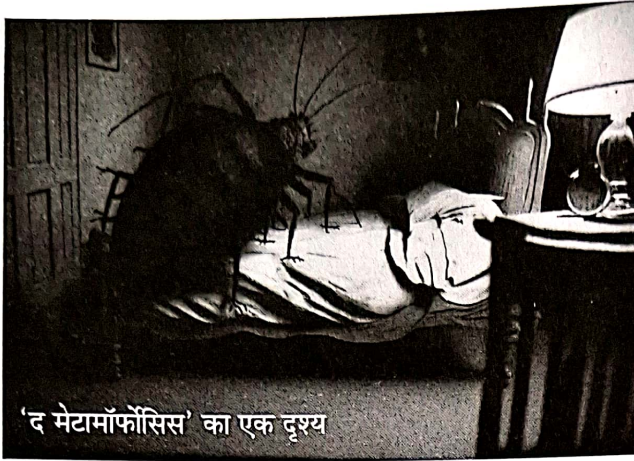
'द मेटामॉर्फोसिस' का एक दृश्य

'द कैसेल' का एक दृश्य

देता है। उसकी मौत उनके लिए राहत का कारण बनती है, और वे ग्रेगोर को भुला कर अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ जाते हैं। ग्रेगोर का दुखद अंत यह दिखाता है कि जब कोई व्यक्ति किसी काम का नहीं बचता तो उसे उसके परिवार तक के लोग भुला देते हैं।

'द कैसेल' (1997) एक अन्य फिल्म है जो फ्रान्ज़ काफ़्का के उपन्यास 'द कैसेल' पर आधारित है। यह एक ऐसे आदमी के बारे में है जिसका नाम के. है, जो एक छोटे से गांव में भूमि सर्वेक्षक के रूप में काम पर आता है। हालांकि, जब वह किले तक पहुंचने की कोशिश करता है, जो गांव के केंद्र में स्थित है, तो वह पाता है कि किले तक पहुंचना या वहाँ हो रही घटनाओं को समझना लगभग असंभव है।

के. को किले के अधिकारियों द्वारा नौकरी पर रखा जाता है, लेकिन कोई उसे यह नहीं बताता कि उसका काम वास्तव में क्या है या उसे क्यों चुना गया। जैसे-जैसे वह अपना काम करने की कोशिश करता है, उसे निरंतर अवरोधों, उलझनों और अजीब, अप्रिय पात्रों का सामना करना पड़ता है। गाँव में लोग अजीब नियमों का पालन करते हुए जटिल ब्यूरोक्रेटिक प्रणालियों में फंसे हुए दिखते हैं, जो के. के लिए समझ पाना मुश्किल है। वह अधिकांश समय किले में प्रवेश करने या जवाब खोजने की कोशिश करता है, लेकिन जो कुछ भी वह करता है, वह और अधिक उलझन और निराशा में पड़ता है।

वह अपनी समस्याओं के समाधान के लिए गांववालों से संबंध बनाने की कोशिश करता है, लेकिन उसका यह प्रयास भी ग़लतफहमियों और कठिनाइयों से भरा होता है। फिल्म परायापन, ब्यूरोक्रेसी और उन शक्तिशाली प्रणालियों को समझने या नियंत्रित करने की कठिनाई जैसे विषयों पर केंद्रित है जो लोगों की ज़िंदगियों पर शासन करते हैं।

'काफ्केस्क' थ्योरी को और विस्तार देती दो फिल्में पहली स्टीवन सोडरबर्ग द्वारा निर्देशित 'काफ़्का' (1991) और दूसरी डेनिस विलेन्यूव द्वारा निर्देशित 'एनिमी' (2013) हैं। जो काफ़्का के उलझन भरे जीवन से उत्पन्न स्थितियों को बहुत ही गंभीरता से व्याख्यायित करते हैं।

ISSN 2278-2184
Regd. No. RNI : DELHIN / 2003 / 9468

Scanned with OKEN Scanner